THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Before we go to the next speaker, there is one Special Mention which is left out. Shri O.T. Lepcha.

SPECIAL MENTIONS—*Contd.*

Need to take effective measures to maintain communication link on the National Highway 31-A, during Calls of Bandh

SHRI O.T. LEPCHA (Sikkim): Hon. Vice-Chairman, Sir, I would like to draw the kind attention of the Central Government to the disturbance caused by some regional political parties of Darjeeling district in West Bengal resorting to frequent strikes, and as a result of that the entire communication system is paralysed and the people of Sikkim are the worst sufferers since 1985.

Sir, as you are all aware, being a land-locked State, there is no air link, rail link and other alternative highways. The only life-line is National Highway 31-A. In this regard, it may be mentioned that whenever such type of a call for strike or bandh in this region is given by any political party in West Bengal, the entire transport and communication system is totally paralysed. This is a very serious matter and the Central Government should take effective and necessary steps to restore the communication system, especially on National Highway 31-A, in the interest of the people of Sikkim. The Government should intervene in the matter.

Therefore, I urge upon the Central Government to look into the matter serious and take appropriate action in the interest of Sikkim State. Thank you.

SHORT DURATION DISCUSSION—*Contd.*

Recent incidents of attacks on North Indians in various parts of Maharashtra

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SANTOSH BAGRODIA): Shri Amar Singh. Your party has ten minutes, but you have two speakers.

श्री अमर सिंह (उत्तर प्रदेश): धन्यवाद उपसभाध्यक्ष महोदय। सर्वप्रथम मैं बहुत विनय के साथ अपने सम्मानित अन्य साथियों से कुछ कहने से पहले क्षमा चाहूंगा कि अगर मेरे वक्तव्य से उनकी भावनाएं आहत हों, तो मैं अपनी क्षमा याचना के साथ अपनी बात कहना चाहूंगा।

राजनीति में, समाज में सत्य से बड़ा सत्य अवधारणा का होता है। सत्य वह होता है, जो दिखता है। इसलिए इस पूरे प्रकरण को मैं आप द्वारा दिए गए समय की सीमा के अन्दर बड़ी साफगोई से रखना चाहूंगा, क्योंकि इस पूरे प्रकरण में मेरी तथाकथित भूमिका की भी काफी चर्चा हुई। उत्तर भारतीय हजारों की संख्या में नासिक छोड़ कर जा रहे हैं, पूणे छोड़ कर जा रहे हैं, प्रोजर्टीज़ की distress sell हो रही है। और यहां तक ऐसा भी हुआ है कि रेलवे कंपार्टमेंट के शौचालय में प्रसव तक की घटना की सूचना आई। मैं कहना चाहूंगा कि मुम्बई में शिवाजी पार्क में रैली करने के लिए, आदरणीय गृह मंत्री जी को मैं आपके माध्यम से बताना चाहूंगा कि महीनों पहले हमने अधिकृत रूप से सूचना दी थी और स्वीकृति ली थी। शिवाजी पार्क की हमारी रैली उत्तर भारतीय के समर्थन में अथवा छठ पूजा के लिए नहीं थी। यह रैली किसानों की समस्याओं के लिए यूनाइटेड नेशनल प्रोग्रेसिव एलायंस ने आयोजित की थी और कई भूतपूर्व मुख्यमंत्रियों की उपस्थिति में हुई थी। इसमें चंद्रबाबू नायडु जी, मुलायम सिंह जी, फारूक अब्दुल्ला जी, चौटाला जी और बाबू लाल मरांडी भी थे। मैं आपके माध्यम से गृह मंत्री जी के संज्ञान में लाना चाहूंगा कि उसमें चार पूर्व मुख्यमंत्री Z+ category के थे। इसके बावजूद इस रैली से एक दिन पहले मैं मुम्बई गया और मराठी पत्रकार संघ में मैं पत्रकार वार्ता कर रहा था। उपसभाध्यक्ष

महोदय, जब मैं पत्रकार वार्ता कर रहा था, तो उस पत्रकार वार्ता के मध्य मेरे ऊपर हमला हुआ। मैंने ऐसी कोई विस्फोटक बात नहीं कही थी कि मेरे ऊपर हमला किया जाता। उस समय वहां पर पूरी टीवी के कैमरे और पत्रकार उपस्थित थे।

[उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन) पीठासीन हुए]

यह घटना पूरी तरह से स्पष्ट रूप से घटित हुई और सबने देखा। मैं बड़ी जिम्मेदारी के साथ कहना चाहता हूं, इसके बाद आपकी सरकार के एक बड़े मंत्री, जो महाराष्ट्र के हैं, श्री शरद राव गोविन्द राव पवार जी ने एक बयान दिया कि मुम्बई की घटनाओं के पीछे अमर सिंह जी का उत्तेजक बयान है। मैं पूरी जिम्मेदारी से सदन के पटल पर कहना चाहता हूं कि अगर मेरा एक भी उत्तेजक बयान शरद पवार जी उपस्थित कर दें तो मैं राज नीती छोड़ने के लिए तैयार हूं। मैं विनम्रता के साथ उन्हें यह चुनौती देता हूं। अगर हम मराठी पत्रकार संघ में एक पत्रकार वार्ता कर रहे हैं और हमारे ऊपर गुंडों द्वारा आक्रमण किया जाए तो क्या वह उत्तेजक भाषण है। हमने यह कहा, ''हम गांधी के देश के लोग हैं। कल शिवाजी पार्क की रैली में राज ठाकरे जी आ रहे हैं और उनकी लाठी खाने के लिए हमारा सिर हाजिर है।'' अगर यह उत्तेजक बयान है तो मैंने यह बयान दिया है और अगर शरद पवार जी में हिम्मत है तो वह लालू यादव जी को उत्तर दें, जिन्होंने कहा कि हम राज ठाकरे के घर के बाहर छठ पूजा करेंगे। हालांकि मैंने उनके उस बयान का विरोध किया, क्योंकि छठ पूजा सूरज और पानी के सामने होती है और हम राज ठाकरे को न सूरज का प्रतीक मानते हैं, न ही पानी का प्रतीक मानते हैं।

लेकिन हमने कोई भड़काऊ बयान नहीं दिया है, हम पीड़ित हुए हैं और मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह घटना ही घटित नहीं होती, माननीय गृह मंत्री जी, अगर समय से महाराष्ट्र की सरकार चेत गई होती। यहां पर मैं कोई राजनीति नहीं कर रहा हूं। मैं आपको बताना चाहता हूं कि आपने केन्द्र से मुझे एक सुरक्षा दी हुई है और अब जब भी मैं मुम्बई जाता हूं तो सुरक्षा मिलती है, लेकिन उस समय जब मैं मराठी पत्रकार संघ में गया था, केन्द्र द्वारा 'वाई' कैटेगरी देने के बावजूद, एक भी सुरक्षाकर्मी हमारे साथ नहीं था। मैं यह नहीं कहता हूं कि मुझे सुरक्षा की जरूरत है और न ही मैं यहां सुरक्षा की गुहार कर रहा हूं, लेकिन जब यह घटना घटित हुई उस समय कोई सुरक्षाकर्मी नहीं था, हालांकि अब सेक्योरिटी जरूर देते हैं।

दूसरे दिन आपके नाम से भी एक बयान अखबार में छपा और मैंने दूरभाष से आपसे संपर्क किया एवं आपने अनुग्रह से कहा कि मैंने ऐसा कोई बयान नहीं दिया है। लेकिन मैं बताना चाहता हूं कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री से हमने बार-बार निरंतर बात करने की कोशिश की कि यहां यह सभा हो रही है और इस सभा में हमारे ऊपर इस तरह से हमला हुआ है, किन्तु बार-बार, लगातार संपर्क करने पर भी मुख्य मंत्री माननीय* अमर सिंह के फोन पर नहीं आए। उसके बाद गृह मंत्री जी...(**व्यवधान**)

श्री संतोष बागड़ोदिया: मेरे विचार में मुख्य मंत्री का नाम लेना उचित भी नहीं है और वह रिकॉर्ड में भी नहीं जाना चाहिए...(**व्यवधान**)

श्री अमर सिंह: देखिए, यह आलोचना नहीं है, यह बात मैंने आपसे पहले ही कही है ...(**व्यवधान**)।

श्री संतोष बागड़ोदिया: आलोचना हो या नहीं हो, लेकिन यह मर्यादा है कि इस हाउस में मुख्य मंत्री का नाम नहीं लिया जाता है। अहलुवालिया जी ने भी यह कहा था ...(**व्यवधान**)

श्री वीरेन्द्र भाटिया (उत्तर प्रदेश): यह फैक्ट है, फैक्ट है ...(**व्यवधान**)।

श्री संतोष बागड़ोदिया: यह फैक्ट या नो फैक्ट का सवाल नहीं है ...(**व्यवधान**) सर, अगर आप एलाऊ करते हैं तो ठीक है, लेकिन यह नियम नहीं है। ...(**व्यवधान**)। आप रूलिंग दे दीजिए ...(**व्यवधान**) आप रूलिंग दे दीजिए...(**व्यवधान**)।

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P. J. KURIEN): The problem is, the Chief Minister cannot come here and defend himself. Therefore, don't take the name of the Chief Minister. You can criticise the Government.

श्री अमर सिंह: ठीक है, सर, आप जैसा कहेंगे। मैंने अपनी बात कह दी है, अब आप जो आज्ञा देंगे, ठीक है ...(**व्यवधान**)... सर, आप सुन लीजिए। सरकार के सबसे बड़े आला राजनेता, जिनके हाथ में सरकार का संचालन है,

*Not Recorded.

बार-बार, लगातार फोन करने पर भी, वह लाइन पर नहीं आए। वह अपने किसी सामाजिक कार्यक्रम में बहुत व्यस्त थे और उनके पास समय नहीं था कि वह लाइन पर आएं। लेकिन चूंकि गृह मंत्री जी यहां उपस्थित हैं, इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि उनके लाइन पर न आने की वजह से दूसरे दिन हमें यह आशंका थी कि यह होगा। हमने वहां पुलिस के लोगों से कहा कि आप अपने अधिकारियों से पता कर लें। मुलायम सिंह जी के सुरक्षा कर्मियों को घटना स्थल पर जाने नहीं दिया गया, उन्हें आजाद मैदान थाने में बैठा लिया गया। स्वयं आपके ज्वाइंट सीपी ने हमसे इस बात की स्वीकृति की है। मैं बहुत जिम्मेदारी के साथ यह कह रहा हूं कि उन्होंने स्वयं स्वीकृति की है और कहा कि हां, हमने सुरक्षा कर्मियों को रोक दिया। बाद में शिवाजी पार्क के समक्ष रैली में आ रहे हमारे कार्यकर्ताओं से पूछ-पूछ कर कि तुम्हारा क्या नाम है, अच्छा राम शक्ल दुबे है, फलां यादव है, फलां सिंह है, इस तरह उनको मारा गया। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा, यहां पर मैं उनका नाम नहीं लेना चाहता हूं, क्योंकि फिर उस पर कोलाहल होगा, उन्होंने कहा कि क्या आपने हाथ में चूड़ियां पहन रखी हैं, अगर वे आपको मार रहे हैं तो फिर आप भी क्यों नहीं उन्हें मारते। हमें लगा कि दाल में कुछ काला है। अगर हम उनकी मार का जवाब वार से देंगे तो फिर कल से हमारी तुलना भी उन्हीं से होने लगेगी कि राज ठाकरे और अमर सिंह में कोई अंतर नहीं है। यह तथ्य सत्य है कि पहले पत्रकार वार्ता में निरीह अमर सिंह के ऊपर हमला हुआ, यह तथ्य सत्य है कि शिवाजी पार्क में सम्मिलित होने वाले कार्यकर्ताओं के ऊपर लट्ठ से प्रहार हुए और वे खून से लथपथ हो गए और गृहमंत्री जी, आपकी सरकार का प्रशासन और आला अधिकारी मूक और बधिर दर्शक बन करके उस दृश्य को देखते रहे। यह मैं सही कह रहा हूं। हमारे एक साथी हैं, श्री अबू आसिम आज़मी जी, वह उत्तेजित हुए। चूंकि वह अध्यक्ष हैं और अगर उनका कार्यकर्ता खून से लथपथ होगा तो उनकी उत्तेजना स्वाभाविक भी है। वह निश्चित रूप से उत्तेजित हुए और उत्तेजना में उन्होंने उस रैली में कुछ कहना शुरू किया। लाठी की बात जो बार-बार आती है, तो मैं आपको बता दूं कि उत्तर भारत का एक समारोह हुआ था। उस समारोह में अपनी रक्षा के लिए उत्तर भारतीयों ने लाठी बांटी थी। उनकी इस लाठी को उप मुख्य मंत्री श्री आर॰आर॰ पाटिल ने स्वीकार किया था। उस सभा में श्री उद्धव ठाकरे भी सम्मिलित थे, उन्होंने भी स्वीकार किया था। यहां मनोहर जोशी जी बैठे हैं। वह कोई राजनैतिक सभा नहीं थी। वह उत्तर भारतीयों की सभा थी, जिसमें उद्धव ठाकरे जी भी थे और उप मुख्य मंत्री जी भी थे। उन लोगों ने लाठी अपनी रक्षा के लिए दी थी, एक प्रतीक के रूप में। उस पर श्री अबू आसिम आजमी ने कहा कि जिस लाठी को आपने उत्तर भारतीयों की रक्षा के लिए लिया है, अगर आप उस लाठी से उनकी रक्षा नहीं कर सकते हैं—हमारे दल के एक और सज्जन श्री घनश्याम दुबे थे, उन्होंने चूड़ी निकाल कर कहा कि तो यह लाठी लौटा दीजिए और चूड़ी ले लीजिए। लेकिन हमने इसे भी एक उत्तेजनापूर्ण बयान माना और मैंने स्वयं और आदरणीय मुलायम सिंह जी ने और फारूक अब्दुल्ला जी तथा चंद्रबाबू नायडू जी ने। फारूक अब्दुल्ला जी ने खड़े होकर कहा कि "हम कश्मीर में आतंकवाद और हिंसा के शिकार हो चुके हैं। हिंसा भड़काना आसान है, लेकिन उसको संभालना मुश्किल है, ठंडे हो जाओ अबू आसिम आजमी।" फारूक साहब यहां बैठे हुए हैं, यह उनका बयान था। हम लोगों ने बहुत शालीनता से और संयत भाव से उसको रोकने का काम किया है, उपसभाध्यक्ष महोदय। लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि रात में जब खून से लथपथ हमारे कार्यकर्ता सरकार के सबसे बड़े मंत्री से, सबसे बड़े, जो मुख्य हैं, जब उनसे मिलना चाहा, तो उन्होंने मिलने का समय नहीं दिया। तब अबू आसिम आजमी ने कि नेतृत्व में हमारे घायल लोग उनके परिसर में थे। राज ठाकरे को बंदी बनाने में बहुत समय लगा और आपकी अनुमति की आवश्यकता हुई, लेकिन अबू आसिम आजमी और हमारे कार्यकर्ताओं को ठूंस कर थाने में बंद कर दिया गया। फिर मैंने फोन किया, लेकिन वह सरकार के सबसे बड़े मंत्री हमको उपलब्ध नहीं हुए। उसके बाद हमें स्वयं आजाद मैदान थाने में जाना पड़ा। स्वयं मैं रात भर आजाद थाने में बैठा रहा और मैंने राज ठाकरे के विरुद्ध एफ॰आई॰आर॰ दर्ज करवाई। अगर उस समय हमें मुख्य मंत्री जी फोन पर मिल जाते—मैं उनका नाम नहीं ले रहा हूं--तो, सम्भवत: यह घटना नहीं होती। वह एफ॰आई॰आर॰ भी दर्ज नहीं होती। मैं कहना चाहूंगा कि एफ॰आई॰आर॰ मैंने दर्ज करवाई। अगर यह गलत है, भड़काऊ कृत्य है, तो मैंने यह किया। मैंने चुनाव आयोग में जाकर के इनके डिरिकॉग्निशन के लिए बात की। अगर यह भड़काऊ कृत्य है, तो मैंने यह किया। मैंने नेशनल ह्यूमैन राइट्स कमिशन में जाकर के गुहार लगाई। आज ही हमारे पास उनका पत्र आया है। हमारी शिकायत पर उन्होंने राज्य सरकार को नोटिस भी भेजी है। उस पत्र की प्रतिलिपि हमारे पास है। नेशनल ह्यूमन राइट्स कमिशन ने, एक निरीह व्यक्ति को--हमारे पास बाहु-बल नहीं है। हमारे पास लोग नहीं हैं। हम उनकी लाठी का जवाब लाठी से नहीं दे सकते हैं, लेकिन हम आप से बात कर सकते हैं। जो संवैधानिक संस्थाएं उपलब्ध हैं, हम उनके पास जा सकते हैं। लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं और मैं यह भी बताना चाहता हूं कि आपके दल में--नाम लेने पर फिर हमारे दोस्त संतोष बागड़ोदिया जी को आपत्ति हो जाएगी--आपके दल में कई ऐसे व्यक्ति हैं, जो शिव सेना में रहे हैं और मंत्री हैं। आज सरकार में मंत्री हैं। ऐसे तीन प्रमुख

लोग हैं ...(व्यवधान)... वे मुख्य मंत्री बनना चाहते है, वह आप जानिए, लेकिन मंत्री हैं, ऐसे लोग हैं। उन सब लोगों में और राज ठाकरे में एक चीज़ सामान्य है कि ये सब उद्धव ठाकरे से पीड़ित हैं। मैं आपको बताना चाहता हूं। छोटी राजनीति के लिए, हो सकता है कि यह मेरी अवधारणा हो, एकदम गलत हो। लेकिन दिखता यह है कि हमारे लोग पिट रहे हैं और आप मौन हैं, आपकी पुलिस मौन है। वे तमाम लोग जो शिव सेना से आपके दल में आए हैं, जो कल तक श्रीकृष्ण आयोग की रिपोर्ट में नामजद मुजरिम रहे हैं, वे आपके दल के मुर्धन्य और शीर्षस्थ नेता तथा मुख्य मंत्री पद के उम्मीदवार हैं, वे सब लोग, जो राज ठाकरे के अनन्य मित्र हैं, उन सब लोगों पर हमला नहीं हो रहा है। आपके दल से इसी सदन के एक माननीय सदस्य, जो उत्तर भारत के कानपुर के रहने वाले हैं, हमारे लब्ध प्रतिष्ठित पत्रकार साथी हैं। वे मुम्बई से, महाराष्ट्र से सांसद बनते हैं और भाई कृपा शंकर सिंह जी गृह मंत्री बनते हैं, उन पर हमला नहीं होता है। हमला होता है, अमर सिंह पर। हमला होता है, उन सब लोगों के ऊपर चिह्नित करके, जिनके लिए अवधारणा है कि वे सरकार के निकट नहीं हैं। तो हमें तो शंका होगी, संदेह की सुई घूमेगी ही कि यह एक सुनियोजित षडयंत्र है। उत्तर भारत के वही लोग, वही नेता और अभिनेता क्यों चुने जा रहे हैं, जो सरकार के निकट नहीं हैं ...(समय की घंटी)... मैं समाप्त करता हूं, महोदय।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): कन्क्लूड कीजिए।

श्री अमर सिंह: महोदय, यहां पर मनोहर जोशी जी विराजमान हैं। कल उन्होंने एक पत्रकार के हवाले से कह दिया कि ...(व्यवधान)... मेरा भी उसमें योगदान है। मैं कहना चाहता हूं कि जोशी जी, महाराष्ट्र के एक बड़े नेता, जो केन्द्र में मंत्री हैं, मैं उनका नाम नहीं लूंगा और शिवराज जी, आप नहीं हैं वह, क्योंकि आप भी महाराष्ट्र के एक बड़े नेता तथा केन्द्र के एक मंत्री हैं। एक मंत्री हैं, उनके एक नजदीकी रिश्तेदार बोके, जो एक पूर्व पुलिस अधिकारी हैं, क्या वे श्री राज ठाकरे के अनन्यतम सहयोगी नहीं हैं? शक क्यों नहीं होगा? मैं जानना चाहता हूं कि यह बोके कौन है? यह बोके क्या कर रहा है? मैं जनेश्वर जी की बात को बढ़ाते हुए कह रहा हूं। आपके भी राज ठाकरे जी से बड़े सम्बन्ध हैं। जब शिव सेना में आंतरिक विवाद होता था तो आप ही मध्यस्थता का काम करते थे। इसलिए कृपा करके मनोहर जोशी जी, बरायकरम जो आपके विशेष संबंध हैं, आपने मध्यस्थता परिवार को एक रखने के लिए की है, अब यह महाराष्ट्र है और अगर राष्ट्र बचेगा तो महाराष्ट्र बचेगा, इस महाराष्ट्र को बचाने के लिए राष्ट्र को बचाइए। अभी तक आपने परिवार को बचाने के लिए मध्यस्थता की है, अब राष्ट्र को बचाने के लिए मध्यस्थता कीजिए। ...(व्यवधान)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): अमर सिंह जी, समाप्त कीजिए।

श्री अमर सिंह: सर, दो मिनट में खत्म कर रहा हूं। आपके "सामना" ने एक एडीटोरियल लिखा है कि एक टैक्सी वाले के लिए मैंने 20 लाख रुपया दिया है, लेकिन मराठी मानुस के लिए नहीं दिया है। तो मैं 8 तारीख को नासिक जा रहा हूं, लेकिन वहां की सरकार हमें नासिक नहीं जाने दे रही है। मैं 5 लाख रुपया उस मराठी मानुस को देना चाहता हूं। मैं इस आरोप में आरोपित नहीं रहना चाहता हूं कि मैं टैक्सी वाले को दे रहा हूं। हमारी एक बहन यहां बैठी हैं, उन्होंने कहा कि अमिताभ बच्चन के घर पर बोतल चलती है, तो हम उसे बड़ा इश्यू बनाते हैं, ऐसी बात भी नहीं है। अमिताभ बच्चन के ऊपर बोतल चलाइए, बम चलाइए, उनकी सुरक्षा का ठेका हमारा नहीं है। यह सरकार का ठेका है, लेकिन हम उनकी लड़ाई नहीं लड़ रहे हैं। अखबार वाले उनकी बात इसलिए ज्यादा छापते हैं क्योंकि उनका नाम ज्यादा छपता है। उस टैक्सी वाले की बात, उस खोमचे वाले की बात, उस दूध वाले की बात, उस सब्जी वाले की बात और पूना और नासिक के उस मराठी मानुस की मृत्यु की बात कोई नहीं छापता, लेकिन बोतल की बात ज्यादा छापता है। मुद्दा समाज बना रहा है, हम नहीं बना रहे हैं। इसलिए मैं तो यह कहना चाहूंगा कि अगर महाराष्ट्र से इसी सदन में हमारे धूत जी हैं, उनको निकाल दो, अंबानी बंधु को निकाल दो, शाहरुख खान को निकाल दो, हमारे सुनील दत्त जी भी उत्तर भारत के हैं, हमारी राष्ट्रपति महोदया, प्रतिभा पाटिल जी तो हमारे उत्तर भारत की पुत्र-वधू हैं, कुल वधू हैं। और जैसा मुरली मनोहर जोशी जी ने कहा गणपति जी वहां के सबसे बड़े बप्पा मोरिया हैं, गणपति के पिता शिव हमारे उत्तर प्रदेश के हैं। तो क्या आप शिव का अनादर करोगे?

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): शिव जी उत्तर प्रदेश के नहीं है, वह काशी के हैं।

श्री अमर सिंह: लेकिन शिव की नगरी मानी जाती है। काशी शिव का स्थान माना जाता है और मथुरा वृंदावन में कृष्ण हैं, तो आप किस-किस को निकालोगे? इसलिए मैं ज्यादा लंबी बात नहीं कहना चाहता, मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहता हूं:

"नाम तुम्हारा राज ठाकरे, किंतु गलत अंदाज ठाकरे,

संविधान का रोज निरादर, इससे आओ बाज ठाकरे,

तुमसे ज्यादा देशभक्त हैं, तुम जिनसे नाराज ठाकरे,

भारत मां की आंख में आंसू, तुम्हें नहीं पर लाज ठाकरे,

पहले ही क्या कम थी पीड़ा, हुए कोढ़ में खाज ठाकरे,

तोड़-फोड़ संघीय व्यवस्था, क्या पहनोगे ताज ठाकरे,

मुंबई अपना कला केन्द्र है, उसमें जंगल राज ठाकरे।"

मैं माननीय गृह मंत्री जी से अनुरोध करूंगा कि इस जंगल राज को खत्म करें और अमन का रास्ता तैयार करें।

उपसभाध्यक्ष (श्री पी॰ जे॰ कुरियन): धन्यवाद, अमर सिंह जी। श्री संतोष बागड़ोदिया।

SHRI SANTOSH BAGRODIA (Rajasthan): Mr. Vice-Chairman, Sir, I am speaking with great auguish when an issue like this is being discussed in this House. When we talk of one world, when we talk of one humanity and at this point of time when the entire world is going ahead ...*(Interrputions)*...

श्री शाहिद सिद्दिकी (उत्तर प्रदेश): हिंदी में बोलिए।

[श्री शाहिद सिद्दिकी : हिंदी में बोलिए।]

श्री संतोष बागड़ोदिया: जब हम एक दुनिया की बात करते हैं, एक मानवता की बात करते हैं, जहां दो जर्मनी आपस में मिल सकते हैं, वहां अगर हम देश के विभाजन की बात करें और जहां इस तरह की बातें करनी पड़ें कि देश के किस कोने में क्या बात हो रही है और एक जाति, धर्म के नाम पर व क्षेत्र के नाम पर अगर लड़ाइयां हो रही हैं तो यह देश विभाजन की ओर जा रहा है। ऐसी व्यवस्था में जो हमारा इतना बड़ा भारतवर्ष है और हम लोग जो यहां बैठे हुए हैं, हम सब की यह जिम्मेदारी है। इस जिम्मेदारी को ध्यान में रखते हुए, अभी किसी ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट ने कुछ कहा। यह हमारा राजनीतिज्ञों का काम है, सुप्रीम कोर्ट का काम नहीं है। हर काम के लिए अगर हम सुप्रीम कोर्ट के भरोसे रहेंगे तो फिर एडमिनिस्ट्रेशन भी सुप्रीम कोर्ट को दे दीजिए। इस तरह की बातों की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। मैं यह कहना चाहता हूं कि क्यों लोग एक गांव से दूसरे गांव, एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश, एक देश से दूसरे देश जाते हैं? इसलिए जाते हैं। और, क्यों उन्हें रिसीव किया जाता है? मैं असम की बात कहना चाहता हूं। असम की जो जमीन है, वह बहुत उपजाऊ जमीन है। वहां जो अहम जाति के लोग थे, वे बहुत थोड़े लोग थे। उनके पास बहुत बड़ी-बड़ी प्रोपर्टीज थीं। इसलिए उनको खेती-बाड़ी के लिए लोगों को बुलाना पड़ा। वहां उत्तर प्रदेश से, बिहार से, यहां तक कि बंगलादेश से लोग आए। उनका उन्होंने स्वागत किया। उनके कारण वहां की जो चाय की खेती-बाड़ी थी, वह बहुत आगे बढ़ी। डेढ़ सौ, दो सौ वर्ष से लोग वहां रहते हैं, उनके नाम चाहे बिहारी हों, उनके नाम चाहे उत्तर प्रदेश वाले हों, लेकिन वे असमी से भी ज्यादा असमी हैं। वैसे भी अगर आप सारे हिंदुस्तान में नहीं, सारी दुनिया में देखें, टैक्सी चलाने वाले हमारे पंजाब के भाई लोग हैं, अगर स्टेनोग्राफर देखे जाएं, तो हमारे केरल से आए हुए लोग हैं। हम देखते हैं कि नागालैंड में भी स्टेनोग्राफर केरल से हैं। अगर हम नर्सिंग से देखें, तो हमारी केरल की जो बहनें हैं, उनकी सेवाएं सारे हिंदुस्तान में काम आ रही हैं। इस तरह लोग अपनी व्यवस्था से दूसरी जगह जाते हैं और एक्सेप्ट भी किया जाता है।

महोदय, इसी प्रकार महाराष्ट्र में भी लोग गए हैं, दिल्ली में भी आए हैं। अगर कोई यह समझे कि दिल्ली में जो इतने बड़े-बड़े रास्ते बने हैं, वे केवल दिल्ली वालों के लिए बने हैं, या उनके पैसों से बने हैं, या उनकी व्यवस्था से बने हैं, तो यह गलत बात है। इसके लिए सारे देश की व्यवस्था बनी है, सारे देश से व्यवस्था आई है और तब जाकर इतने बड़े-बड़े रास्ते बने हैं। इसी तरह महाराष्ट्र जो एक शक्तिशाली प्रदेश बना है, वह सारे हिंदुस्तान के लोगों की मेहनत से बना है। कोलकाता भी उसी तरह से बना था और तमिलनाडु भी उसी तरह बना है। आज अगर कोई बैंगलूरू में बोले कि खाली कर्नाटक के लोगों के कारण कर्नाटक आ रहा है, तो वह श्रीमान् जी कहां के हैं, मुझे मालूम नहीं। मैं एक ऐसे प्रदेश से आता हूं राजस्थान से, हमारे लोग तो सारी दुनिया में हैं और खासकर के सारे प्रदेशों में हैं। जब चीन के टाइम में बोम्बिला फोर्म हुआ था, तो उस समय भी हमारे राजस्थान के दो दुकानदार वहां पर थे। चीन की लड़ाई में भी बोम्बिला में, सबसे ऊपर वहां थे। चूंकि इस तरह की व्यवस्था देश में है, इसलिए देश एक है, इसलिए देश मजबूत है। हमारे यहां सब तरह की भाषाएं हैं, सब तरह का खानपान है, सब तरह के चेहरे हैं, सब तरह के कपड़े हैं, फिर भी हमारा देश एक है। जब हम हिंदुस्तान से बाहर जाते हैं, तो हम वहां अपने आपको भारतीय बताने में बड़ा अच्छा मानते हैं कि हम हिंदुस्तानी हैं? क्या हम वहां जाकर यह बताते हैं कि हम बंगाली हैं? क्या हम जाकर बोलते हैं कि हम मारवाड़ी हैं? या हम महाराष्ट्रीयन हैं, या हम राजस्थानी हैं, या हम बिहारी हैं? नहीं, हम हिंदुस्तानी हैं और हम हिंदुस्तानी बोलते हैं, इसलिए हमारी वहां इज्जत होती है। जिस दिन हम अपने आपको इन प्रदेशों से जोड़कर बोलने लगेंगे, तो सारी दुनिया में हमारी क्या स्थिति होगी? जब हम चाहते हैं कि हमारा हिंदुस्तान दुनिया का एक बड़ा राष्ट्र बने, दुनिया की एक बड़ी शक्ति बने, तो वह इस तरह से तोड़-फोड़ से नहीं बनेगा। मैं राजनीतिज्ञों से बोलना चाहता हूं, चाहे वह छोटी पार्टी का राजनीतिज्ञ हो, चाहे वह बड़ी पार्टी का राजनीतिज्ञ हो, यहां बड़े-बड़े नेताओं ने कभी कांग्रेस को दोष दिया, कभी उसको दोष दिया, इस तरह दोष देने से लाभ नहीं होगा। अपना खुद का शरीर देखो, अपना खुद का मन देखो कि क्या हम धर्म के नाम पर राजनीति नहीं करते हैं? अपना मन देखना पड़ेगा कि क्या हम जाति के नाम पर राजनीति नहीं करते हैं? इन बातों पर खुद उनको ध्यान देना पड़ेगा। दूसरों पर दोष लगाने से राजनीति नहीं होनी है। उससे क्या महाराष्ट्र बचेगा? असम में बहुत लड़ाइयां हुई हैं, जिसे राजस्थान के लोग, बिहार के लोग, उत्तर प्रदेश के लोग सबने सहा है। मैं कहता हूं कि बंगाल में भी हुई हैं, वर्ष 66-67 मुझे याद है, जब लोग वहां से भाग रहे थे। देश के कौने-कौने में ऐसी लड़ाइयां हुई हैं, लेकिन हमारे देश के लोग बड़े मजबूत हैं, बड़े सहनशील हैं और ये लड़ाई करने वाले वास्तविक हिंदुस्तानी नहीं हैं। यह लड़ाई करने वाले कुछ लोग हैं, कुछ ऐसे तबके के लोग हैं, जो जाति और धर्म के नाम का फायदा लेकर लोगों को हैरान करते हैं, लोगों के साथ अत्याचार करते हैं, जिनके कारण हमारे देश की बदनामी होती है और हमारी भावनाओं में कमी आती है। इसलिए मैं बोलना चाहता हूं कि यह जो माइग्रेशन की बात मैंने बताई, कोई भी अपने घर को, परिवार को छोड़कर नहीं जाना चाहता, मगर ये जितने लोग उत्तर प्रदेश, बिहार से जाते हैं, अपने बच्चों को, अपने परिवार को दूर छोड़कर जाते हैं। हम इतने लोग बैठे हैं, कौन छोड़ना चाहता है अपने परिवार को? सब लोग परिवार के पास रहना चाहते हैं। लेकिन वे इसलिए जाते हैं कि उन्हें एक opportunity मिलती है। और कौन रखता है, मैं यह जानना चाहता हूं, कोई बताए कि दुनिया में कोई भी ऐसा एक एम्प्लॉयर हो जो किसी भी एम्प्लाई को उसके ऊपर मेहरबानी करके रखता हो? वह किसी भी एम्प्लॉई को इसलिए रखता है कि उसे उसकी आवश्यकता है, क्योंकि उसकी सेवाएं उसको चाहिएं, इसलिए वह रखता है। महाराष्ट्र में जितने लोग गए, जब पुणे से लोग आने लग गए, नासिक से लोग लग गए तो वहां पर इकॉनमी की व्यवस्था चरमरा गई, फैक्ट्रियां बंद हो गईं, डेवलपमेंट वर्क बंद हो गया। ऐसी व्यवस्था में हमारे नेताओं को देखना चाहिए कि यह छोटी राजनीति एक या दो दिन के लिए तो चल सकती है, लेकिन ऐसी छोटी राजनीति से न तो देश बचेगा और न ही उनका महाराष्ट्र ही बचेगा। जिस दिन देश नहीं बचेगा, जिस दिन हमारा यह सिस्टम नहीं बचेगा, उस दिन महाराष्ट्र भी नहीं बचेगा।

मैं उदाहरण के लिए खाली एक-दो बातें बोलना चाहता हूं, जिन्हें जानकर आपको आश्चर्य भी होगा और खुशी भी होगी कि श्री मोती लाल वोरा जी यहां बैठते हैं, बरसों से आप यहां उनको देख रहे हैं, मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री भी बने, लेकिन वे हमारे राजस्थान के नागौर जिले के हैं। उनके पूर्वज वहीं के हैं, शायद वे भी वहां पैदा हुए, लेकिन वहां चले गए और मध्य प्रदेश के मुख्य मंत्री बन गए। हमारे श्री शिव चरण माथुर जी, शायद तीन बार राजस्थान के मंत्री बने, वे मध्य प्रदेश से आए। यह इस देश की एक बहुत बड़ी बात है। अभी जो मुख्य मंत्री हैं, वे भी मध्य प्रदेश से आए हुए हैं, लेकिन उनकी शादी राजस्थान में हुई। मैं बंगाल की बात बताना चाहता हूं कि हमारे श्री विजय सिंह नाहर, वहां बंगाल में जाकर डिप्टी चीफ मिनिस्टर बने और उनके परिवार में जाकर आप देखेंगे तो पाएंगे कि वे बंगाली भाषा में बात करते हैं, बंगाली

खाना खाते हैं, बंगाली की तरह रहते हैं, बंगाली भाषा में ही सब काम करते हैं और उनके दामाद बहुत बड़े आर्टिस्ट हैं, जो बंगाल में ही पैदा हुए हैं।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰ जे॰ कुरियन): बागड़ोदिया जी, कन्क्लूड कीजिए प्लीज।

श्री संतोष बागड़ोदिया: सर, मैं और ज्यादा समय नहीं लूंगा, मैं इतना ही बोलना चाहता हूं कि मैं भीलवाड़ा से आया हूं और भीलवाड़ा आज दूसरा मुम्बई माना जाता है, वहां इंडस्ट्रियल डेवलपमेंट बहुत हो गया है, सारे हिन्दुस्तान के लोग भीलवाड़ा में रहते हैं। कोई भी ऐसा प्रदेश नहीं है, जहां के लोग वहां नहीं रहते हों और वहां सब बड़ी शांति से रहते हैं और भीलवाड़ा आज एक मिनी इंडिया बन गया है। हमें खुशी होगी जब लोग उसी तरह से सारे हिन्दुस्तान में अमन-चैन से एक-दूसरी जगह पर रह सकें। मैं उदाहरण के लिए बोलना चाहता हूं कि जब बंगला देश से रिफ्यूजी आए तो लोगों ने कहा कि कहां उनको रखा जाए, राजस्थान में उनको रखा गया। हमारे गांव में उनको रखा गया, हम उनका आदर करते हैं। आज उनको वोटिंग राइट है, उनके ऊपर किसी तरह का कोई अत्याचार नहीं हो रहा है। सर, राजस्थान में हिन्दुस्तान और मुसलमान सारे त्यौहार मिलकर मनाते हैं। आज हम अजमेर शरीफ की बात करें, मैं बताना चाहता हूं कि हमारे परिवारों में जब लड़का पैदा होता है तो हम अजमेर शरीफ में भी जाकर चादर चढ़ाते हैं। इस तरह का हिन्दुस्तान है।

सर, अंतिम बात है। Now I appeal to all the politician sitting here, and all the leaders, all the intellectuals and social workers, all the students and all the men and women of the country, please जागो, देश कहां जा रहा है, उसको देखो और रिस्पांसिब्लिटी को समझो, तब ही यह देश बच सकता है और मंत्री जी से मेरा अनुरोध है कि उनको भी, मैं समझता हूं कि कड़ी से कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए, जो नियम-कायदे में है। देश में जो नियम-क़ायदे हैं, उन नियम-कायदों को मानकर चाहे हिन्दुस्तान का कितना ही बड़ा या छोटा नेता हो, उस पर भी नियम-कायदे लागू होने चाहिए, केवल तभी देश बच सकता है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री शरद यादव (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, आज इस सदन में महाराष्ट्र और मुंबई में पिछले दिनों से जो घटनाक्रम है, उसकी बाबत मुझसे पहले डा॰ मुरली मनोहर जोशी जी बोले, अमर सिंह जी का ब्यान मैं आधा ही सुन सका। जो बातें बोली गई हैं, मुझे जो बताया गया है ...(व्यवधान)... मैं उन सब लोगों की बात को दोहराना नहीं चाहता हूं। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि महाराष्ट्र में जो घटनाक्रम हुआ है, उससे देश भर के मन को जो चोट और तकलीफ पहुंची है, वह नहीं पहुंचनी चाहिए थी। वहां एक नौजवान है, जिसने अभी पार्टी बनाई है और उन्होंने कोई बयान दे दिया। मैं निवेदन करना चाहता हूं कि हमें यह आजादी और लोकतंत्र, बहुत कुर्बानी के बाद मिला है। इस सदन में विभिन्न पार्टियों के लोग हैं, फिर न्यायालय है, उसके बाद पत्रकारों और मीडिया के लोगों का नंबर आता है। मेरा मानना यह है कि वहां जो क्षेत्रीय पार्टी बनाने वाले आदमी निकले हैं, वे पिछले चुनाव में लड़े भी, लेकिन उनको केवल म्युनिसिपैलिटी की 2-3 सीटें मिलीं। उन्होंने जो बयान दिया, उसके बाद सरकार को जिस तरह से handle करना चाहिए था, वह नहीं किया। कुछ मामले ऐसे होते हैं, जो राजनीति से परे होते हैं। देश ऐसे ही इकट्ठा नहीं होता।

मैं आपको स्मरण दिलाना चाहता हूं कि जगदलपुर एक इलाका है, जहां भंजिदेव नाम के एक राजा थे। वे हर बार आजादी का झंडा फहरा देते थे। मैं विद्यार्थी जीवन में था। उस समय स्वर्गीय श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र, कांग्रेस पार्टी के मुख्यमंत्री थे और मुझे अच्छी तरह याद है, उन्होंने जब यह किस्सा बताया था कि जब वहां तीर-कमान से लोगों ने 7 सिपाही मार दिए, तो मुख्यमंत्री स्वयं राजधानी से जाकर सीधे रायपुर में ठहरे और उन्होंने अपने पुलिस के आला अफसर को बुलाया, यह अखबार और मीडिया में नहीं आया, उन्होंने कहा कि किसी भी तरह से यह जो पागल आदमी है, इसका इलाज मुझे मिलना चाहिए। उन्होंने जो कहा, वह मुझे इस सदन में कहना नहीं चाहिए। आज तक वहां फिर उसका कोई नाम लेने वाला नहीं है।

यह जो मामला हुआ है, यह इसलिए हुआ क्योंकि एक आदमी ने यह बयान दे दिया। सरकार को तत्काल उस आदमी को उठा लेना चाहिए था। वह ऐसा क्यों कर रहा है? वह सिर्फ बयान देकर नेता बनना चाहता है, वह पुरुषार्थ से नेता नहीं बनना चाहता है। कुछ लोग पुरुषार्थ से नेता बनते हैं। इस देश में इतनी भाषाएं हैं, धर्म हैं, क्षेत्र हैं, मजहब हैं, खंड हैं, भारत हर तरह की बुराइयों से खंड-खंड है और उस खंड-खंड से पाखंड निकलता रहता है। वह पाखंड निकलेगा, आगे और भी निकलेगा, अभी तो एकाध लोग आए हैं, आगे बहुत लोग निकलेंगे, जो घर में बैठकर बयान देकर नेता बनना चाहते हैं,

लेकिन इस देश का जो visual media है, print media है, उसने इस तरह इस आदमी का प्रचार किया कि क्या बताऊं? मैं हैरान था, उनके हाथ में कुछ नहीं है, लेकिन वे क्रोध में हैं। बहुत बड़ी पार्टी थी, लेकिन वह पार्टी छोटी हो गई। आज हाथ में कुछ नहीं है, लेकिन मैं आपको बताऊं कि मैं 10-12 दिनों तक इतनी तकलीफ और बेचैनी में रहा कि जो जरा सी समस्या है, उसे वहीं तत्काल nip in the bud किया जा सकता है, लेकिन वह समस्या out of blue हो गई। एक टैक्सी टूट रही है, किसी एक खोमचे वाले के समोसे गिर गए, दिन भर खोमचा देखो, टैकसी देखो। मुझे ज्यादा नहीं कहना चाहिए, पैसे कमाने का और इस आजादी का इतना दुरुपयोग हो जाएगा। यह जो हमारी आजादी है, उससे इतनी विकट परिस्थिति बनेगी कि आजादी हमको खाने खड़ी हो जाएगी। यह आजादी और यह जो प्रचार तंत्र है, इतने चैनल खुल गए, सुबह-शाम देखते-देखते हैरान हो गए, 24 घंटे वह काल-कपाल, महाकाल चला रहे हैं, भूत-प्रेत चला रहे हैं। जवाहर लाल जी और इस देश के सारे नेता कहते थे कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण होना चाहिए। वे दिन भर अंधविश्वास फैला रहे हैं। वे मर्द और जोरू की लड़ाई दिन भर दिखा रहे हैं। कैसे सास बहू को मार रही है, यह दिन भर दिखा रहे हैं। उसी तर्ज पर, मैं ज्यादा विस्तार में नहीं जाऊंगा, इस आदमी को जो Municipality का लीडर नहीं है, उसे तत्काल उठा कर जेल में डालना चाहिए था। उसे बता देना चाहिए था कि हिन्दुस्तान की जो समरसता है, जो एकता है, उसको लांघने का क्या परिणाम हो सकता है। आपको पुलिस दी गई है, बंदूक दी गई है, गोली दी गई है, फौज दी गई है, लेकिन आप इस फौज का, इस पुलिस का इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं। यह पुलिस आपको क्यों दी गई है, यह गोली-बंदूक आपको क्यों दी गई है, यह फौज आपको क्यों दी गई है, यह देश की रक्षा के लिए मिली है, बाहर की रक्षा के लिए नहीं मिली है। आप भीतर के मामले में, यह भी नहीं कि जिसके पीछे करोड़ों लोग हैं, बहुत बड़ा जनमत है, उस आदमी को छूने में कानून-व्यवस्था बिगड़ जाएगी, इसलिए आप restrain करें। लेकिन एक आदमी जो Municipality का लीडर नहीं है, चारों तरफ T.V. वाले दिन भर इस बात को दिखा रहे हैं। एक तो मेरा कहना है कि इसमें कुछ दम नहीं है। यह समस्या इसलिए पैदा हुई, क्योंकि वहां की सरकार ने अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाई। असम में हुआ, एक बंगाल का मंत्री, मैं अच्छी तरह जानता हूं कि वामपंथी, खास करके सीपीएम के लोग हैं, वे इस तरह की भाषा और बोली, नहीं बोल सकते हैं, उस आदमी ने बोल दिया, उसका बैकग्राउण्ड क्या है, क्यों बोला, मुझे नहीं मालूम, लेकिन दिन भर उसको राजस्थान में दिखाना शुरू कर दिया। कई लोग निकम्मे बैठे हैं, वे देख रहे हैं कि कहां T.V. पर हम मार-काट करके, जहां टक्कर है, वहां खबर बना लें। इस देश में ऐसा हो गया कि जहां कोई लड़ाई हो जाए, जहां कोई टक्कर हो जाए, वहां खबर बनाने को तैयार रहते हैं। चाहे वह जानवरों की लड़ाई हो, चाहे किसी की भी लड़ाई हो। जहां टक्कर है, वहां खबर है। बाकी कोई खबर इस देश में बन नहीं रही है। वहां के मुख्य मंत्री मुझे कहीं मिल गए थे, मैंने उनको पांच उदाहरण बताए, यह जो भिण्डरावाला है, एक पूर्व प्रधान मंत्री हैं, उनका मैं नाम नही लेना चाहता हूं, उल्फा से लेकर बहुत सी समस्याएं होती हैं। मैंने जगदलपुर का मामला बताया। वहां तो हर साल आजादी के बाद से झण्डा फहराया जाता था, लेकिन द्वारिका प्रसाद मिश्र जी ने एक दिन में उनका इलाज कर दिया था। परमानेंट इलाज हो गया। बहुत से मामले हैं। इतना बड़ा तंत्र आपको मिला है, इतनी बड़ी फोर्स मिली है। महोदय, मैं आपको कहूं, एक तो वहां गलती है। जो मुबई है, जो महाराष्ट्र के लोग हैं, मैं उनसे कहना चाहता हूं, निवेदन करना चाहता हूं, मैंने बयान इसलिए नहीं दिया, क्योंकि महाराष्ट्र की जितनी आबादी है, नौ करोड़, दस करोड़, आधे महाराष्ट्र के लोग मध्य प्रदेश में रहते हैं, आधे जो हैं, वे आस-पास के सूबे जैसे मध्य प्रदेश में, गुजरात में, कर्नाटक में, आंध्र प्रदेश में, राजस्थान में रहते हैं। यदि आप आबादी के हिसाब से देखेंगे तो आधे लोग महाराष्ट्र से बाहर रहते हैं। इसी तरह पूरे देश का हाल है। यह बात कहना कि उत्तर प्रदेश और बिहार के लोग नहीं है। (समय की घंटी) उपसभाध्यक्ष जी, मेरी विनती है कि मुझे समय दीजिए।

श्री मंगनी लाल मंडल: बड़ा issue है, बोलने दीजिए।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): ठीक है, लेकिन ...(व्यवधान)...

श्री शरद यादव: मैं दस-पंद्रह मिनट में अपनी बात खत्म करूंगा। महोदय, मैं जहां का रहने वाला हूं, जबलपुर का, जिसमें मैं पहली बार एम॰ पी॰ बना था, वहां दो बार एम॰पी॰ रहे हैं स्वर्गीय बाबूराव परांजपे! अभी सुमित्रा महाजन हैं। बागड़ोदिया जी बहुत से पुराने लोगों का नाम ले रहे थे, ग्वालियर, इन्दौर, होल्कर, सिंधियां, बड़ौदा के गायकवाड़ जो हैं, और अभी वसुन्धरा राजे कहां हैं? वे मुख्य मंत्री हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि महाराष्ट्र की आधी से ज्यादा आबादी बाहर रहती है, periphery से, लेकिन बताइए उन सूबों के लोगों के दिलों का हाल। हमें तो दस मिनट, पांच मिनट नहीं लगेंगे, हमारे पास तो लाखों-करोड़ों लोग हैं। ज़रा सा भी इधर-उधर बयान दे दो, तो कल नेता बन जाएंगे।

लेकिन हम लोगों ने भी इस सदन में बोलने से पहले एक दिन भी नहीं कहा इतने लोग बाहर रहते हैं, उसी तरह हर सूबे के लोग बाहर रहते हैं, लेकिन हां, उत्तर भारत का दुर्भाग्य यह है कि आज़ादी की लड़ाई का सबसे ज्यादा दौर पूरे देश ने भोगा, लेकिन 1857 में ज्यादा लड़ाई हमसे हुई, इसलिए अंग्रेजों ने हमारी तरफ से अपनी आंखें मूंद लीं और हमारा इलाका पिछड़ गया। हमारे इलाके से मज़दूर जाता है, कामगार जाता है बाहर और दक्षिण भारत से व्यापार के लिए, सर्विस के लिए, कारखानों में, उद्योग में ...मैं जबलपुर का रहने वाला हूं। मेरे यहां ऑर्डिनेंस फैक्टरी है, देश की फौज का सबसे बड़ा कारखाना लगता है, तो लगभग ढाई लाख मज़दूर वहां होते हैं और उन पर ढाई लाख मज़दूरों में जबलपुर शहर के पच्चीस लाख आदमी ही हैं, बाकी पूरे देश के आदमी हैं, लेकिन एक दिन भी कहीं चूं नहीं हुई मैं दो बार वहां से एम॰पी॰ रहा हूं। आज मनोहर जोशी जी कह रहे थे कि उन्होंने बयान नहीं दिया। वे आज बयान दे रहे थे, तो उन्हें पता भी नहीं है कि मैं मध्य प्रदेश का रहने वाला हूं। वे बिहार के नाम पर मुझे गाली दे रहे थे। बात गलत है कि बिहार का आदमी ही बाहर नहीं जा रहा है, पूरे उत्तर भारत का आदमी बाहर जाता है। दिल्ली को छोड़कर कहीं भी पेट भरने की कोई गुंजाइश नहीं है। औद्योगिकरण या कोई चीज़ बनी, तो वह सिर्फ दिल्ली में बनी। बाकी दक्षिण भारत का आदमी पूरे उत्तर भारत में काम करता है। वह अफसरी करता है। जो ऑर्गेनाइज्ड लेबर है, जो पब्लिक सैक्टर है, वह उसमें जाता है, दूसरी तरह की काबिलियत में जाता है और यहां का आदमी कामगार बनकर जाता है। मुम्बई की जो शान है, वह अकेले मुम्बई की नहीं है, वहां रिज़र्व बैंक ऑफ इंडिया है, जो आज से नहीं, अंग्रेजों के ज़माने से है रिज़र्व बैंक को वहां से निकाल दीजिए, उसमें पूरे देश की पूंजी लगी हुई है। रिज़र्व बैंक के चलते वहां SEBI है। आर॰बी॰आई॰ ...(**व्यवधान**)... वह गवर्नर होगा, लेकिन जो रिज़र्व बैंक के चलते वहां पूंजी इकट्ठा हुई है, रिज़र्व बैंक के चलते वहां SEBI है, वहां स्टेट बैंक का हैडक्वार्टर है। जितने कारपोरेट्स हैं, उनके कारखाने देश भर के इलाके में चलते हैं और वे सारे कारपोरेट्स मुम्बई में रजिस्टर्ड हैं। वहां पूंजी अपने आप ही इकट्ठा नहीं हुई है। मैं यह नहीं कहता कि रिज़र्व बैंक वहां नहीं होना चाहिए, लेकिन वहां के लोगों को यह नहीं समझना चाहिए कि देश भर की पूंजी वहां जा रही है।...(**व्यवधान**)...

श्री मंगनी लाल मंडल: यह का इस्पात पैदा होता है झारखंड से ...(**व्यवधान**)...

THE VICE CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): No please ...no time. So many speakers. There is time shortage.

श्री शरद यादव: यानी इतने उदाहरण हैं, सारे देश भर में जितने इलाके हैं, सब के सब लोग वहां अरेस्ट हैं उपसभाध्यक्ष जी, मैं मनोहर जी से कहना चाहता हूं कि बयान देकर नेता बनना, कोई भावनात्मक बात कहकर नेता बनना बहुत आसान है। हिंदुस्तान में पुरुषार्थ से नेता बनना मुल्क बनाना है, सबको साथ लेकर नेता बनना, वह बात अलग है। आपने बयान दे दिया अपने कमरे से! इस तरह से काम नहीं चलेगा और ये लोग बहुत डरे हुए हैं, लोग इनके साथ ही रहेंगे। अभी अमर सिंह जी बोल रहे थे, वे ज्यादा जानकारी रखते हैं, वे मुम्बई में बहुत रहते हैं, तो वे कह रहे थे कि इसमें मिलीभगत हो। हो सकता है कि मुम्बई में मिलीभगत हो, तो इस मिलीभगत से भी आप मत घबराइए। आप तो किसानों के लिए, मज़दूरों के लिए लड़ाई लड़ने लगे, तो पीछे क्यों जा रहे हो? क्यों फिर से ऐसी बात कर रहे हो, जिससे लोगों को दुख और तकलीफ हो? आप तो हमारे स्पीकर रहे हैं! हम आपका आदर एक आला इंसान के नज़रिए से करते हैं। लेकिन आपकी पार्टी से यदि बयान–आप कहते हैं, नहीं आया–आ भी जाता है तो उसका खंडन आना चाहिए। आप पूरे हाउस के स्पीकर रहे हैं। आप तो शिवसेना के थे। आपके मान-समान के संबंध में किसी ने इस नज़र से क्या अभी कुछ किया? पिछले इतिहास को देखकर आपका मान-सम्मान हम लोगों ने छोटा या बड़ा किया हो? इसलिए मेरी विनती है कि यह सवाल मत उठाइए ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): अब समाप्त कीजिए।

श्री शरद यादव: वरना यह देश टूट सकता है। शंकराचार्य कहां के थे? यह देश बहुत गुंथा हुआ है। इसमें रोज़ लोग कहते हैं कि टूट जाएगा–यह बड़ी अजीब बात है। इस देश में जो कोई खड़ा होता है, कहता है कि देश टूट जाएगा। देश नहीं टूटेगा। यह देश इतना गुंथा हुआ है कि कोई आदमी लड़कर इस देश में जिंदा नहीं रह सकता है। एक लाख जाति, इतने धर्म, इतने मज़हब इस देश में हैं। अगर कोई यह सोचे कि मुसलमान को हटा दे-कैसे हटा सकता है, किसी की हिम्मत नहीं है। देश की एक-एक चीज़ आपस में इतनी अधिक गुंथी हुई है।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): यादव जी, अब समाप्त कीजिए।

6.00 P.M.

श्री शरद यादव: असली जरूरत है कि जो अच्छे लोग हैं, वे ताल ठोककर अपनी बात को रखने का काम करें। महोदय, यह जो सारा मामला हुआ है, वह दो चीजों के चलते हुआ है। कुछ लोग कमरों में बैठकर बयान देकर नेता बन गए हैं कि ऐसी बातें कहो, जिससे कुछ न करना पड़े और लोगों में कलह पैदा करके तत्काल नेता बन जाएं। ऐसे लोगों की भावनाओं की उपेक्षा करनी चाहिए। ये कोई बहुत बड़े लोग नहीं हैं, ये म्युनिसिपेलिटी के नेता नहीं हैं। मैं आपके माध्यम से मीडिया के लोगों से कहना चाहता हूं कि ऐसे लोगों को अगर पब्लिसिटी देंगे तो देश का लोकतंत्र स्वस्थ नहीं होगा। अगर स्वस्थ करना है तो जो सही में जनता के नेता हैं, उनको आगे बढ़ना चाहिए, उनकी बात लिखनी चाहिए। इन्हीं बातों के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं। धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (प्रो॰ पी॰जे॰ कुरियन): श्री कलराज मिश्र आप पांच मिनट बोल लीजिए, उसके बाद आप इधर आकर बैठ जाइए।

श्री कलराज मिश्र (उत्तर प्रदेश): महोदय, आपने मुझे इस विषय पर बोलने की अनुमति दी है, इसके लिए मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूं। यह विषय बड़ा गंभीर और महत्वपूर्ण है। मुम्बई से उत्तर भारतीयों को, विशेषकर बिहार और उत्तर प्रदेश के लोगों को बाहर खदेड़ना, उनके साथ हिसांत्मक व्यवहार करना–यह पूरे देश की एकता और अखंडता को खंडित करने की दिशा में अपनायी गयी प्रक्रिया है। मैं यह कह सकता हूं कि यह सोची समझी राजनीति के तहत है। जहां एक व्यक्ति की अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति करने की बात हो रही है, यह सोचकर ...**(व्यवधान)**...

श्री शरद यादव: वह नेता ही नहीं है।

श्री कलराज मिश्र: मैं वही कह रहा हूं। वह शायद इस प्रकार की हरकत करके ...**(व्यवधान)**... जो आप कह रहे हैं, आगे मैं वही बात कहने जा रहा हूं। वह इस प्रकार की हरकत करके यह चाहता है कि पूरे हिन्दुस्ताान में मैं प्रमुखता के साथ लोगों की निगाह में आ जाऊं। जो यहां की चर्चा है या लोक सभा की चर्चा है, चैनल्स में जो सारी बातें आ रही हैं, ये सब तो उनके लिए अनुकूल हैं, ये उनके प्रोत्साहन को और आगे बढ़ा रही हैं। महोदया, हिन्दुस्ताान में संघीय ढांचे के अंतर्गत एकात्मक शासन है। संविधान ने हमें व्यवस्था दी है कि अगर राज्य सरकार ठीक से कानून व्यवस्था स्थापित नहीं कर पाती है और उस वजह से अगर एकता को किसी प्रकार का खतरा पैदा होता है तो केन्द्र सरकार की विशेष जिम्मेदारी बनती है। एकात्मक शासन का अर्थ ही यही है कि एकता पर किसी प्रकार का खंडन न हो सके। दुर्भाग्य इस बात का है कि जिस व्यक्ति ने इस एकता को खंडित करने का दुस्साहस किया है, लोगों के मौलिक अधिकारों का हनन किया है–संविधान में यह मौलिक अधिकार है कि हर नागरिक को किसी भी क्षेत्र में जाकर बसने का अधिकार है, वहां व्यापार करने का अधिकार है, उस क्षेत्र को संवारने का अधिकार है–इस अधिकार का अगर कोई हनन करता है तो संवैधानिक दृष्टि से उसने संविधान विरोधी हरकत की है। यह बड़ा खतरनाक कदम है। इस खतरनाक कदम के होने के बाद, आदरणीय गृह मंत्री जी बैठे हुए हैं, मैं आरोपित करता हूं, जिम्मेदारी के साथ आरोपित करता हूं कि कार्यवाही नहीं की गयी। अगर इसकी प्रतिक्रिया निर्माण होती, कहा गया कि बिहार में नारा लगाया गया। किसने नारा लगाया था? मुख्य मंत्री ने साफ तौर पर कहा कि ऐसा नहीं है, महामहिम राज्यपाल जी ने भी कहा कि ऐसी बात नहीं की गई है। लेकिन वहां उस बात को जबर्दस्ती लादने की कोशिश की गई है। मगर कायदे से, ढंग से राज्य सरकार ने कार्रवाई नहीं की, अमर सिंह जी ने उसका पूरा वर्णन किया है, मैं इसके ऊपर ज्यादा नहीं कहना चाहता हूं। तो राज्य सरकार ने कार्रवाई क्यों नहीं की। यह एक प्रश्नवाचक चिन्ह बनता है यह आरोप साबित हो रहे हैं। जिस बात के लिए अमर सिंह जी ने कहा कि वहां कुछ लोग ऐसे बने हुए हैं जो इस प्रकार की हरकत करवाना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि टैक्सी ड्राईवर मारे जाएं, वे चाहते हैं कि खौमचे वाले मारे जाएं तथा गरीब आदमी मारे जाएं। वहां उन गरीबों पर हमला किया गया है, जो बिहार और उत्तर प्रदेश से गए हुए हैं। बिहार और उत्तर प्रदेश के लोगों ने जहां भी जाकर काम किया है उस क्षेत्र को संवारा है, बिहार और उत्तर प्रदेश के लोगों ने मुम्बई को मुम्बई बनाया है, यह कहने में मुझे एक प्रकार का गर्व अनुभव होता है। अगर मुम्बई को मुम्बई के रूप में किसी ने संवारने की कोशिश की है तो उत्तर भारतीयों ने की है। मैं नाम लेकर गिना सकता हूं, जिन्हें भइया कहते हैं और अगर वे भइया नहीं रहते तो वहां पीने के लिए लोगों को दूध नहीं मिलता।

श्री शदर यादव: मिश्र जी, वहां पर पूरा उत्तर भारत है।

श्री कलराज मिश्र: मैं यह कहना चाहता हूं इन्होंने वहां जाकर मुम्बई को संवारा है। यह ठीक है उन लोगों की जन्म भूमि उत्तर प्रदेश और बिहार रही होगी लेकिन अब तो उनकी जन्म भूमि भी मुम्बई है, कर्म भूमि भी मुम्बई है और उसके बावजूद

भी यह कहना है कि नहीं, तुम बाहर के हो, जो यह कहता है कि बाहर के हो, वह महाराष्ट्रीयन नहीं हो सकता। महाराष्ट्रीयन तो छत्रपति शिवाजी थे और उन छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक करने के लिए वहां का कोई व्यक्ति तैयार नहीं हुआ था लेकिन बनारस के पंडितों ने जाकर उनका राज्याभिषेक कराया था। अगर महाराष्ट्र की एकता को पूरे देश की एकता के सूत्र में गठित करने का कोई काम किया है, अभी 1857 का आपने जिक्र किया है--नाना साहब पेशवा, तात्या टोपे बिठूर में थे, अजीमुल्ला, झांसी की रानी वे सब बिठूर में थे, जिन्होंने यहां के फिरंगियों का सफाया किया था। सब को आजाद किया था। नाना साहब पेशवा, तात्या टोपो ये सब क्या थे, जिन्होंने आजादी दिलाई। कवि भूषण कानपुर के थे, जिन्होंने छत्रपति शिवाजी के गुणगान में कितना उल्लेख किया है। शिवाजी को आदर्श मानने वाला व्यक्ति देश की एकता और अखंडता को खंडित करता है और कहता है कि सरकार करा रही है। मान्यवर, मैं कहना चाहता हूं कि उत्तर प्रदेश और बिहार के यही लोग मारिशस में हैं, फिजी में हैं जो वहां का शासन चला रहे हैं। सूरीनाम में हैं, त्रिनिदाद में हैं, पश्चिमी द्वीप समूह में हैं, दक्षिण पूर्व एशिया में हैं, सब तरफ हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार के लोगों ने आज जिस स्थिति का निर्माण किया है तथा आज पूरी दुनिया के अंदर अलग-अलग देशों का नेतृत्व कर रहे हैं। अभी डा॰ जोशी ने उत्तर प्रदेश के कई लोगों का नाम बताया है। ए॰ जी॰ खैर महाराष्ट्र के थे, उत्तर प्रदेश में स्पीकर थे। हमारे कुशाभाऊ ठाकरे महाराष्ट्र के थे जो मध्य प्रदेश में रहे तथा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। मधु लिमये बिहार से सासंद चुने गए। मगर मैं कहना चाहता हूं कि भारत की एकता और अखंडता को कोई खंडित नहीं कर सकता।.....(**समय की घंटी**)

इस तरह से अनेक ऐसे नाम गिनाए जा सकते हैं। अगर इस देश की एकता और अखंडता को खंडित करने के लिए कोई आगे आता है तो उसके साथ कड़ी कार्रवाई होनी चाहिए। गृह मंत्री जी के सामने मैं यह सवाल खड़ा करना चाहता हूं कि आखिर केन्द्र सरकार क्यों शांत रही, आखिर राज्य सरकार क्यों शांत रही, अमर सिंह जी को क्यों देर लगी यह एफ॰आई॰आर॰ कराने में? क्या मुख्य मंत्री को जानकारी नहीं थी कि इस तरह की हरकत हो रही है? अगर इस तरह की हरकत हो रही थी तो इसको क्यों नहीं संज्ञान में लिया गया तथा उत्तर भारतीयों की समुचित सुरक्षा क्यों नहीं करनी चाहिए थी? यह सब क्यों नहीं किया गया। उस व्यक्ति को गिरफ्तार भी किया गया तो इतनी हल्की धारा से गिरफ्तार किया गया कि छः हजार के मुचलके पर उनको छोड़ दिया गया और उनको हीरो बना दिया गया। उपसभाध्यक्ष जी, एक-दो मिनट में समाप्त करता हूं। यह सामान्य बात नहीं है।..(**व्यवधान**)... यह बड़ी गंभीर बात है। पुलिस कमिश्नर हो या जो भी, जिन्होंने उनके विरुद्ध कार्यवाही नहीं की, क्या मिली-जुली राजनीति है? क्या इस प्रकार की राजनीति करके, अपने तुच्छ राजनैतिक स्वार्थ की पूर्ति के लिए, क्या आप देश को बांटना चाहते हैं? क्या आप भी उसमें शामिल होना चाहते हैं? ऐसा संदेह आप क्यों पैदा कर रहे हैं? इस प्रकार की हरकत क्यों हो रही है? ऐसा मैं कहना चाहता हूं।..(**समय की घंटी**)...इस देश की एकता और अखंडता हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है। देश के संघीय ढांचे वाले एकात्मक स्वरूप को विद्यमान रखने के लिए आपकी विशेष जिम्मेदारी है और इसको संज्ञान में रखते हुए, अगर आप तत्काल कार्यवाही नहीं करते हैं, तो देश की जनता आपसे सीधे सवाल पूछेगी कि क्या आप भी देश की एकता और अखंडता को खंडित करने में भागीदार हो रहे हैं, यह है या नहीं है? आप कृपया इस पर विशेष ध्यान दीजिए, मेरा यही आपसे आग्रह है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Sir, I hope those who are asking the questions will be in the House to hear the replies.

THE VICE-CHAIRMAN (PROF. P.J. KURIEN): See, what the hon. Minister has submitted is that those who are asking the questions should be here to listen to the answers also. That is why I am not asking any question. I am going. Shri Mangani Lal Mandal.

श्री मंगनी लाल मंडल: माननीय उपसभाध्यक्ष महोदय, इस विषय पर माननीय सदस्यों ने अपनी राय व्यक्त की है, उस राय के आलोक में यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रीय एकता के लिए, और खासकर लोकतंत्र के लिए अग्नि परीक्षा है। अग्नि परीक्षा इसलिए कि लोकतांत्रिक सरकार जब भाषा के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर, कोई उग्रवाद पैदा होता है, तो उसको नियंत्रित करने में कमजोर साबित होती है। उल्फा का उग्रवाद हो, माओवाद का उग्रवाद हो, नक्सलवाद का उग्रवाद हो, यह देश के लिए जितना घातक नहीं उससे बड़ा घातक है कोई आदमी क्षेत्र के नाम पर, भाषा के नाम पर देश को खंडित करना चाहता है, तोड़ना चाहता है।

[उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र) पीठासीन हुए]

उपसभाध्यक्ष महोदय, इस विषय पर बिहार के लोगों को, उत्तर प्रदेश के लोगों को मुम्बई में खदेड़-खदेड़ कर पीटा गया और पिछले सत्र में एक सवाल उठाया था, आदरणीय जोशी जी बैठे हैं, जब माननीय रेल मंत्री श्री लालू जी बोल रहे थे, तब इन्होंने हस्तक्षेप करके कहा कि मुम्बई में जो नियुक्तियां होती हैं, उनमें बिहारी लोग पहुंच जाते हैं और इसीलिए महाराष्ट्र के लोगों को गुस्सा है। रेल मंत्री जी ने कहा कि रेलवे रिक्रूटमेंट बोर्ड से नियुक्तियां हुयी हैं और मेधा के नाम पर, प्रतिभा के नाम पर बिहारी लोगों का, उत्तर प्रदेश के लोगों का सलेक्शन हो जाता है, तो इसमें हम क्या कर सकते हैं, बिहारी लोगों का क्या अपराध है। इन्होंने कुछ नहीं कहा और ये बैठ गये। लेकिन आज गुस्सा है उत्तर भारत के लोगों के प्रति। राज्य सरकार के बारे में जो लोगों ने कहा है, मेरी भी वही राय है। माननीय गृह मंत्री जी का भाषण हमने अखबार में पढ़ा है। लोक सभा में उन्होंने निश्चित रूप से संकल्प का इजहार किया है कि ऐसे तत्व जो राष्ट्रीय एकता को तोड़ना चाहेगा, उसको बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। लेकिन महोदय, नासिक में जब खोली की नीलामी हो रही थी और पुरवैया लोगों को खदेड़-खदेड़ कर पीटा जा रहा था, तब पटना के जंक्शन पर गाड़ी से लोग आ रहे थे, तो आठ साल के बच्चे को बार-बार उसके पिता जी, माता जी कह रहे थे कि बेटा आंख खोलो, नासिक से हम निकल गये हैं, हम पटना पहुंच गये हैं, हम घर पहुंच गये हैं, बिहार पहुंच गये हैं। बच्चे बेहोश हैं, क्योंकि बच्चों के सामने उनके मां-बाप को, सभी लोगों को पीटा गया था और बच्चे को भी पीटा गया था। जब यह वाकया हुआ तब वह बेहोश था, सहमा हुआ था और डरा हुआ था। ऐसा काम इस देश में होता है। देश की एकता के लिए आज उल्फा कितना खतरनाक है, आज जो भी लोग सिर उठा रहे हैं यह उससे भी बड़ा खतरनाक है। अमर सिंह जी यहां बैठे हुए हैं। इन्होंने अमिताभ बच्चन जी की चर्चा की है। चाहे अमिताभ बच्चन जी हों या ठेले वाले हों, दोनों के साथ जिस तरह का वाकया हुआ है, यह निंदनीय है। उसकी जितनी निंदा की जाए, जितनी भर्त्सना की जाए। वह कम है। अमिताभ बच्चन का क्या कसूर है! अमिताभ बच्चन एक महान कलाकार है, हमारे शत्रुघ्न सिंहा जी का क्या कसूर है! अगर अमिताभ बच्चन एक कलाकार होने के नाते हमें गर्व है, तो बिहारी बाबू शत्रुघ्न सिन्हा पर भी गर्व है। उनके ऊपर इसलिए आक्रमण किया जाता है कि वे उत्तर भारत के हैं, ये उत्तर प्रदेश के हैं, ये बिहार के हैं। उनके घर पर ढेला फैंका जाता है, बोतलें फैंकी जाती हैं, आक्रमण किया जाता है, क्रेकर फोड़ा जाता है और मजदूरों को पीटा जाता है कि ये भी बिहारी हैं, उत्तर प्रदेश के हैं, उत्तर भारत के हैं। ऐसे तत्वों को अभी तक बाहर क्यों रहने दिया गया, इसका जवाब कौन देगा और कौन सी सरकार देगी? हमारी सरकार लोकतांत्रिक है। क्या ऐसे तत्वों के सामने लोकतंत्र से निकली हुई सरकार बौनी होती है, जिसके सामने सरे-आम राष्ट्र की एकता, राष्ट्र की अखंडता और राष्ट्र की भावनात्मक एकता को चुनौती दी जा रही है। उसको खंडित करने का प्रयास किया जा रहा है, क्यों नहीं गिरफ्तारी हुई? महोदय, मैंने एक प्रश्न किया था और यह प्रश्न 27 तारीख का था। मैं इसको पढ़ना चाहता हूं। इसके खंड में मैंने पूछा था कि क्या यह सच है कि महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना ने गैर महाराष्ट्र विशेषकर बिहार, उत्तर प्रदेश एवं अन्य हिन्दी भाषी प्रदेशों के लोगों, उद्यमियों, व्यवसाइयों एवं श्रमिकों को महाराष्ट्र छोड़ने का फरमान जारी किया है? सरकार ने जवाब दिया कि हमारी जानकारी के अनुसार महाराष्ट्र राज्य सरकार ने ऐसा कोई फरमान जारी नहीं किया है। यह उत्तर कहां से आया है? हमने पूछा है कि क्या नवनिर्माण सेना ने फरमान जारी किया है, तो सरकार जवाब देती है कि महाराष्ट्र सरकार ने फरमान जारी नहीं किया है, तो इस प्रकार महाराष्ट्र की सरकार को बचाने का प्रयास क्यों हो रहा है? महाराष्ट्र सरकार ने क्यों नहीं उसको तत्काल गिरफ्तार करके जेल में बंद कर दिया, जो यह कहता है कि खदेड़-खदेड़ कर पीटो। शरद यादव जी सदन से चले गए हैं। उन्होंने बताया है कि टीवी में लगातार दिखाया जा रहा है, टैक्सी वालों को पीटा जा रहा है, बच्चों को पीटा जा रहा है, दुकान में घुसकर तोड़-फोड़ की जा रही है। पुलिस के अधिकारी, पुलिस के कमिश्नर उस तोड़-फोड़ करवाने वाले नेता की शादी की पार्टी में अगुवाई कर रहे हैं। इससे बड़ी निंदा का काम और क्या हो सकता है? लोकतंत्र में सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि संविधान सम्मत जो व्यवस्था है, उसको अक्षुण्ण रखना और देश की भावनात्मक एकता को क्षुण्ण रखना, सरकार की जिम्मेवारी है और महाराष्ट्र की सरकार इसमें विफल हुई है। इसके लिए महाराष्ट्र सरकार दोषी है। अभी कहा कि फौलाद पैदा होता है, झारखंड में, अनाज पैदा होता है, पंजाब में, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में। देश के हर भाग में कुछ न कुछ पैदा होता है। अगर देश के सब लोग कहें कि हम पंजाब से खाद्यान्न महाराष्ट्र नहीं जाने देंगे, झारखंड से कोयला मुम्बई नहीं जाने देंगे, तो देश टूटेगा। जब देश टूटेगा तो देश को चलाने वाली चाहे प्रांतीय सरकार हो, केन्द्र की सरकार हो, उसकी जिम्मेवारी है वह ऐसे लोगों से निपटे। अगर आप में ऐसे तत्वों से निपटने की संकल्प शक्ति है, तो ऐसे तत्वों से निपटने के लिए सबसे पहले आप में संकल्प-शक्ति होनी चाहिए। महोदय, जब हम बिहार में जाते थे तो लोग कहते थे कि पाटिल साहब तो महाराष्ट्र के हैं, पाटिल साहब तो भारत सरकार के गृह मंत्री हैं, महाराष्ट्र की सरकार

कुछ नहीं कर रही है। लोगों को पीटा जा रहा है और उनको टीवी पर दिखाया जा रहा है और मुख्य मंत्री दिल्ली में घूम रहे हैं। लोगों को नासिक में पीटा जा रहा है, पुणे में पीटा जा रहा है, कल्याण में पीटा जा रहा है, थाणे में पीटा जा रहा है, मुम्बई में पीटा जा रहा है और मुख्य मंत्री जी शादी के दिल्ली में कार्ड बांट रहे हैं और पुलिस प्रोटेक्शन उनको दे रही है, जो लोगों को पिटवा रहे हैं। जो पिट रहा है, उसको पुलिस प्रोटेक्शन नहीं दे रही है। यह कौन सी सरकार है और कैसी व्यवस्था है, इसके लिए केन्द्र सरकार ने राज्य सरकार से तलब क्यों नहीं किया? इसीलिए मैं माननीय गृह मंत्री जी से जानना चाहूंगा-मैं गृह मंत्री जी का बहुत आदर करता हूं, सारा देश उनका आदर करता है, अच्छे गृह मंत्री हैं, ईमानदार व्यक्ति हैं, लेकिन वे महाराष्ट्र से आते हैं, इसलिए इन पर यह जवाबदेही जाती है। जवाबदेही इसलिए जाती है, क्योंकि महाराष्ट्र में यह घटना घटी है और अभी तक सभी लोगों को सुरक्षा की गारंटी नहीं दी है। यह बात अलग है कि नासिक में बहुत सारे कारखाने बंद हो गए, पुणे में बहुत सारे कारखाने बंद हो गए। बिहार के, उत्तर भारत के लोग पढ़ाई कर रहे हैं कि आर्थिक क्षति का अभी तक जो आकलन आया है उसमें कारखाने बंद होने से ढाई हजार करोड़ रुपए की आर्थिक क्षति हुई है। कितने लोग भाग गए हैं, जिनकी संपत्ति लूटी गई है, जिनकी खोली नीलाम करके दूसरों को दे दी गई है। जिनकी पच्चीस, पचास वर्षों के लिए लीज़ थी, उसकी गिनती इसमें नहीं है। उनका आकलन नहीं है, जिनकी संपत्ति ले ली गई है। साइकिल का दाम पंद्रह सौ रुपए था, जब दरभंगा का बिहारी भागने लगा तो पचास रुपए में साइकल दे दी, जिसने सैकिण्ड हैंड मोटर साइकिल खरीदी थी, मोटर साइकिल का दाम 45,000 रुपए था, जब भागने लगा तो ढाई सौ रुपए में मोटर साइकिल बेच दी। यह विपत्ति आई थी। एक बात कहना चाहूंगा कि कोलकाता महानगर में-यहां कोलकाता के लोग बैठे हैं, बिहार के लोग वर्षों-वर्षों से कोलकाता में रोजी-रोटी कमाते रहे हैं। बंगाल किसके नाम से जाना जाता है? रविन्द्र नाथ टैगोर के नाम से जाना जाता है। महाराष्ट्र किसके नाम से जाना जाता है? लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के नाम से जाना जाता है। बंगाल नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के नाम से जाना जाता है। बिहार के लोग, उत्तर प्रदेश के लोग बंगाल में वर्षों से रोजी-रोटी कमाते रहे हैं, लेकिन बंगाल में कभी-भी किसी ने ऐसी ओछी राजनीति नहीं की। क्यों मुंबई में वोट की राजनीति के लिए महाराष्ट्र में यह किया गया? इसीलिए मैं इस घटना की निंदा करते हुए माननीय गृह मंत्री जी से तीन-चार बिंदुओं की अपेक्षा करता हूं, जिज्ञासा करता हूं। पहली यह है कि उत्तर भारत के जो लोग भगाए गए हैं और जिनकी संपत्ति जब्त कर ली गई है, छीन ली गई है, जिनकी खोली, घर को कब्जा कर लिया गया, उनको लौटाने के लिए सरकार ने अभी तक क्या व्यवस्था की है? नम्बर दो-जिन लोगों ने वहां संपत्ति अर्जित की थी, खड़ी की थी, जो लीज़ की नहीं थी, पट्टे की नहीं थी, विधिवत् उन्होंने मकान बना लिया था, उनके मकान पर कब्जा कर लिया गया है, उन्हें खदेड़ दिया गया है, ऐसे लोगों की संपत्ति को लौटाने का क्या उपाय होगा? जिनका काम छिन गया है, जो कारखाने में काम करते थे, उनको तनख्वाह भी नहीं मिली। वे लौट आए, मारा गया, पीटा गया, थानेदार ने मुकदमा अंकित नहीं किया। बिहार, उत्तर प्रदेश के लोगों ने अपनी कहानी बताई है कि वे थाने में संरक्षण के लिए गए थे, कहा कि हमें संरक्षण दीजिए, हमें पीटा गया है। हमारे बच्चे हैं, अगर आप हमारे घर को नहीं बचा सकते हैं, हमको पीटा नहीं जाए, इसके लिए हमको सुरक्षित स्टेशन्स तक पहुंचा दीजिए, तो थानेदार ने कहा कि यहां से भागो, हम तुम्हें कोई सुरक्षा नहीं दे सकते हैं। क्या वे इन सारी चीजों की जांच कराएंगे? जो पुलिस के दोषी पदाधिकारी हैं, जिन लोगों ने सेना के लोगों को संरक्षण दिया, इन लोगों को पिटवाने का काम किया, वैसे लोगों की पहचान की जाएगी? इन्हीं बातों के साथ मैं यह भी जानना चाहता हूं कि सेना ने कहा है कि बार-बार करेंगे, हजार बार करेंगे, भाषा के नाम पर, क्षेत्र के नाम पर भी उत्तर भारत के लोग आएंगे तो पकड़कर पीटेंगे, यह हमारा काम है। आगे से आईन्दा ऐसी कार्रवाई नहीं हो और अगर कार्रवाई होगी, राष्ट्र को तोड़ने की यह प्रवृत्ति जारी रहेगी, तो सरकार क्या कार्रवाही करेगी, इसका हम माननीय गृह मंत्री जी से वचन और आश्वासन चाहेंगे। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI C. RAMACHANDRAIAH (Andhra Pradesh): Sir, a very exhaustive and emotional discussion is being taking place in this august House. Sir, we can compromise with anything, but not with the integrity of the nation. It appears to be a very small thing, threatening the people to leave their State. But, it has got a tremendous impact also. It is like a cancer. It should not be allowed to spread to other parts of the country. Sir, every aberration in democracy is being done to divide our society and we have been accustomed to compromise with everything to continue in power. I have been seeing all the leaders of the political parties making a uniform appeal that such things should be condemned. Those persons, who are indulging in such violence should be punished, but why should not we practise outside? The same persons, who have participated in the debate, have made suggestions to the Government,

but why should not we try to restrain ourselves from making political captains by allowing people to indulge in such things? Such tentacles should not be allowed to spread in the country, It is a very dangerous trend. It was there when I was a student in Chennai. I have seen the linguistic chauvinism that has prevailed which has caused the regional parochialism in Maharashtra. So, everything is being done to take political advantage. There is no exception. They should have dealt with it. I do not want to take advantage of the situation and I do not want to politicise the issue also. People who have indulged in violence are the perpetrators. But what is the role of the Government? By keeping complacent, by keeping inactive, the Government has become abettor. The Government is equally responsible. If the persons, who have been indulging in such violations, which have posed a great threat to our democracy and integrity of the country, are the perpetrators, the Government is abettor. We cannot restrain ourselves from accusing the Government and I do not want to take their names and glorify them by taking their names in this august House. Why has the Government restrained itself from taking immeditate action? Why has this strong message not been sent to the nation? Sir, these things should not be allowed to spread. The country is beset with so many problems-hunger, poverty, unemployment, economic inequality, extremism. Our energies, our intelligence and our resources should be conserved and consumed for solving these problems. Instead of doing that, we are trying to create more problems which pose a danger to the integrity of the country. Unless good and conducive atmosphere prevails in this country, it will be very difficult to get investments. It will be difficult to get technology and create infrastructure. The Prime Minister has been saying that we should go for double-digit growth. But, if this state of affairs continues in the counrtry, I do not think any foreign investor will come and invest in this country. Bombay City has not been built by one person and not by Maharashtrians alone. It was built over centuries by so many people and different people are there. About 11 per cent people are Hindi-speaking people in Maharashtra and 1.5 per cent Telugu-speaking people are there, and speaking a particular language is not a prohibitive affair. As per the Constitution, every citizen is entitled to move anywhere, to own the properties anywhere. We have got a freedom of trade. We can speak any language. We can follow any religious faith. Ours is a great democracy, very strong democracy with independent Judiciary, free Press, very dynamic electoral system and we have to conserve it and pass it on the posterity and the Government should strive to protect it. We should not allow this to be destroyed. I do not want to make any political speech, but it is a sorry state of affairs. It should not be taken very lightly. People responsible for it are traitors of the country. They should be given the hardest punishment. If existing laws are not sufficient, the entire House will join the Home Minister of this country in making a special legislation to punish them.

श्री तारिक अनवर: उपसभाध्यक्ष महोदय, यहां इस विषय पर बहुत देर से चर्चा हो रही है। मैं भी सदन की उस भावना से अपने आप को जोड़ता हूं कि महाराष्ट्र में, मुम्बई या नासिक में जो कुछ घटना घटी, वह निन्दनीय है और जिस प्रकार की बातें हुई, वह सब नहीं होना चाहिए था। सारा देश इस बात की मज़म्मत करता है, निन्दा करता है। लेकिन मैं शरद यादव जी की इस बात से सहमत हूं कि घटना वैसी हुई नहीं, उसका किस तरह से प्रचार हुआ और जिस तरह से देशवासियों को दिखाया गया। इससे लोगों में एक आतंक फैल गया, खास तौर पर महाराष्ट्र में जो उत्तर भारतीय रहते हैं, उनके बीच में आतंक पैदा हो गया, जिसका जिक्र अभी लोगों ने किया भी है। उसकी वजह से बड़े पैमाने पर वहां से लोगों का पलायन हुआ। उन्हें ऐसा लगा कि मेरी जान खतरे में है, मेरा माल खतरे में है, मेरे बच्चे खतरे में हैं और भाग कर वे अपने-अपने घरों को चले गए। यह बात भी सच है कि हमारा जो संविधान है, जिसका जिक्र सभी लोगों ने किया है, उसमें इस बात की इजाज़त नही है। उसमें यह प्रावधान है कि कोई भी व्यक्ति, जो इस देश का नागरिक है, वह हिन्दुस्तान के किसी भी शहर में, किसी भी इलाके में या किसी भी प्रांत में जा कर अपनी रोज़ी-रोटी की तलाश कर सकता है। यह बात भी सच है कि जो लोग महाराष्ट्र, मुम्बई या अन्य कहीं भी जाते हैं, वे वहां पर सिर्फ पैसा कमाने के लिए नहीं जाते हैं, उस क्षेत्र के विकास में, वहां की उन्नति में, वहां की तरक्की में, उनका कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार से योगदान भी होता है।

जहां तक मुम्बई का सवाल है, मुम्बई को हमारी फिनांशियल कैपिटल कहा जाता है क्योंकि देश की सारी पूंजी वहां से पैदा होती है। मुम्बई को बनाने में सभी देशवासियों का हाथ है और उसे हम एक मिनि भारत भी कहते हैं। उसका जो चित्र है या जो तस्वीर है, उसमें सभी भारत वासियों का समावेश है और इसलिए अगर ऐसी कोई भी घटना वहां घटती है, तो उसका असर पूरे देश पर पड़ता है और उसका संदेश पूरे देश में जाता है। इसलिए इस तरह की घटनाएं न घटें इस बात की पूरी कोशिश होनी चाहिए।

जहां तक हमारे देश की रचना का सवाल है, हम सभी जानते हैं कि इस देश में हर धर्म, हर जाति, हर मज़हब के लोग रहते हैं, अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले लोग रहते हैं और अलग-अलग संस्कृति एवं संस्कार के मानने वाले लोग रहते हैं। यहां इतनी विभिन्नताएं हैं, यही कारण है जो भी हमारे संविधान के निर्माता थे, उन्होंने इस बात को गहराई से समझा कि अगर इस देश को एक सूत्र में बांध कर रखना है, तो उसका एक ही रास्ता है कि सभी जाति, सभी धर्म के लोगों को बराबरी का अधिकार मिले। यही वजह है कि हम आज इस स्वतंत्र भारत में जहां भी जाना चाहते हैं, जाते हैं, अपनी रोज़ी-रोटी कमाते हैं और बच्चों की परवरिश करते हैं।

जैसा कि कहा गया कि वहां छठ पूजा को लेकर ये सारी बातें उठीं, लेकिन हमारे देश की जो संस्कृति है, चाहे वह दुर्गा पूजा हो, होली हो, ईद हो या हमारे क्रिश्चियन भाइयों के त्यौहार हों, सिक्खों के त्यौहार हों या अन्य कोई भी त्यौहार हों, आज हम ये सारे त्यौहार राष्ट्रीय त्यौहार की तरह मनाते हैं। जब ईद होती है तो हमारे यहां पर हमारे हिन्दू भाई आते हैं, सिक्ख भाई आते हैं, अन्य दूसरे धर्म और जाति के लोग आते हैं और जब होली आती है तब हम उनके यहां मुबारकबाद देने के लिए जाते हैं। इस तरह से गंगा-जमुना की यह तहज़ीब हमारे मुल्क में सालों से चली आ रही है। अगर उसको कोई तोड़ना चाहता है, कमजोर करना चाहता है, तो जरूर यह घातक है और उस पर सरकार को, चाहे वह राज्य सरकार हो या केन्द्र सरकार हो, सभी को ध्यान देना चाहिए। चूंकि यह एक तरह से हमारे देश की मूल आत्मा है और अगर इसको कोई भी नुकसान पहुंचाने की कोशिश करता है तो वह हमारे लिए बहुत ही नुकसानदेह होगा। ...(**समय की घंटी**)... हमने जैसा कहा कि हमारी जो परम्परा है, उसके बारे में एक शायर ने कहा है कि

हयात ले के चलो, कायनात ले के चलो।

चलो तो सारे जमाने को साथ ले के चलो।।

इसी उसूल पर हम चलते आए हैं और आगे भी हम चलते रहेंगे।

महोदय, एक बात हम जरूर कहना चाहेंगे, जैसा शरद यादव जी ने भी कहा और अन्य लोगों ने भी कहा कि घटना को कुछ इस तरह से तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया और ऐसा कहा जा रहा है, जैसा राज्य सरकार ने वहां बिल्कुल कुछ किया ही नहीं, कोई कार्रवाई ही नहीं हुई। यह सच्चाई नहीं है, महोदय। जो हमारे पास आंकड़े हैं, उनमें है कि करीब 17 सौ लोगों को गिरफ्तार किया गया, असामाजिक तत्वों को। उसी तरह से वहां लगभग 3 सौ लोगों पर मुकद्दमे दर्ज हुए और 5 हजार लोगों का प्रिवेंटिव एक्ट के तहत गिरफ्तारी हुई। इसी तरह से राज ठाकरे के खिलाफ भी धारा 153 और 153ए के तहत उनको गिरफ्तार किया गया। नॉन-बेलेबल वारंट था, अदालत से उनको रिहाई मिल गई। इस प्रकार ऐसा नहीं है कि राज्य सरकार ने कुछ नहीं किया। लेकिन उस घटना को कुछ इस तरह से पेश किया गया, जैसे लगा कि कोई बहुत बड़ी बात हो गई हो। ...(**व्यवधान**)... ठीक है, बड़ी बात थी, उस बात को हम तो स्वीकार कर रहे हैं, लेकिन किस तरह से यह कहा जा रहा है कि राज्य सरकार ने कुछ नहीं किया ...(**व्यवधान**)... राज्य सरकार ने अपनी जिम्मेदारी को निभाया और बखूबी निभाया आज वहां पर शान्ति है। कोई ऐसी बात नहीं है। इत्तिफाक से उस दिन मैं और फारूक अब्दुल्ला साहब, हम दोनों जिस दिन यह घटना घटी, उस दिन मुम्बई में एक कार्यक्रम में मौजूद थे। वहां के हालात को हम लोगों ने अपनी आंखों से देखा है ...(**समय की घंटी**)... ऐसी कोई बात नहीं थी, लेकिन जिस तरह से उसका प्रचार हुआ-उसको हम दुष्प्रचार कहेंगे, प्रचार नहीं दुष्प्रचार कहेंगे-और जिस तरह से मीडिया ने ...(**व्यवधान**)...

श्री मंगनी लाल मंडल: एक सप्ताह तक ट्रेनें भर-भर कर पटना आती रहीं ...(**व्यवधान**)... दरभंगा आती रही ...(**व्यवधान**)...सोनपुर आती रही ...(**व्यवधान**)...लोग गोरखपुर आते रहे, बनारस आते रहे ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): मंडल जी, अब आप बैठ जाएं ...(**व्यवधान**)... आपने बता दिया है ...(**व्यवधान**)...मंडल जी, अब आप बैठ जाएं ...(**व्यवधान**)...

श्री मंगनी लाल मंडल: ट्रेन भर-भर कर लोग आते रहे ...(**व्यवधान**)... वे जिस अवस्था में थे, उसी अवस्था में ... (**व्यवधान**)...सब मार खाए ...(**व्यवधान**)... उनकी सम्पत्ति लूटी गई थी ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): मंडल जी, आप बैठ जाएं ...(**व्यवधान**)... तारिक साहब, आप समाप्त करें ... (**व्यवधान**)...

श्री तारिक अनवर: मंडल जी, मैंने तो शुरू में ही इस बात को स्वीकार किया है ...(**व्यवधान**)...कि जिस तरह का दुष्प्रचार हुआ, उसका असर था कि लोगों में घबराहट पैदा हो गई, लोगों में आतंक पैदा हो गया और उन को लगा कि हम सुरक्षित नहीं है और लोग अपनी जान-माल और अपने बच्चों को बचाने के लिए वहां से पलायन कर गए, भाग गए ... (**व्यवधान**)...

श्री मंगनी लाल मंडल: नाव बना कर रात में घर पर अटैक करते थे ...(**व्यवधान**)... उस घर में घुस जाते थे, लोगों को निकाल देते थे और उस पर कब्जा कर लेते थे ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): मंडल जी, आपने अपनी सारी बातें कह दी हैं। ...(**व्यवधान**)... आप भी अपनी बात समाप्त करें ...(**व्यवधान**)... आपने भी अपनी बात कह दी ...(**व्यवधान**)...माननीय गृह मंत्री जी उसका उत्तर देंगे।

श्री तारिक अनवर: मैं समाप्त कर रहा हूं ...(**व्यवधान**)... मैं समाप्त कर रहा हूं। दुष्प्रचार का असर मंडल जी पर भी है। इसलिए मैं कहूंगा की ऐसी घटना हुई है। मैं सरकार से, गृह मंत्री जी के उस आश्वासन से, जो उन्होंने पिछले दिनों दूसरे सदन में अपनी बात कही है और उन्होंने कहा है कि इसमें किसी भी तरह से केन्द्र सरकार कोई भी कंप्रोमाइज़ नहीं करेगी। जो किसी तरह से इस देश में घृणा की राजनीति कर रहे हैं, जो इस देश में उग्रवाद पैदा करना चाह रहे हैं, आतंक पैदा करना चाह रहे हैं और उसके जरिए अपनी राजनीति की रोटी सेंकना चाहते हैं, उनको इस तरह की इजाजत नहीं दी जाएगी। मैं भी यही चाहता हूं कि ऐसी कार्रवाई होनी चाहिए जिससे ऐसे लोगों को भविष्य में बढ़ावा नहीं मिले। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): ठीक है। अब आप बैठिए।

श्री तारिक अनवर: उन पर रुकावट होनी चाहिए। यह बात सही है कि आज हम जो कुछ यहां कह रहे हैं, इसका लाभ उनको मिल रहा है। वे यही चाहते थे कि इस तरह की चर्चा हो और इस तरह से उनको पब्लिसिटी मिले और उनको आगे बढ़ने का मौका मिले। वे उसका राजनीतिक लाभ चाहते थे, उसमें उनको फायदा हुआ है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): तारिक साहब, अब आप समाप्त करें।

श्री तारिक अनवर: मैं इन्हीं शब्दों के साथ गृह मंत्री जी से यह निवेदन करूंगा कि वे आने वाले समय में लोगों को आश्वस्त करें कि ऐसी कोई घटना न घटेगी। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): तारिक साहब, अब आप समाप्त करें।

श्री मनोहर जोशी (महाराष्ट्र) उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं कि आपने मुझे इस विषय पर अपने विचार रखने का मौका दिया। कल जब राष्ट्रपति महोदय के अभिभाषण पर सदन में चर्चा चल रही थी, उस समय भी मैंने अपने विचार सदन के सामने रखे थे और उस समय भी मैंने यही कहा था कि इस विषय पर चर्चा होने की आवश्यकता नहीं है। मैंने यह कहा क्योंकि मैं जानता हूं कि बहुत बार ऐसा ही होता है कि विषय पर चर्चा होती है, चर्चा में आरोप लगाए जाते हैं और आरोप सुनने के बाद फिर गड़बड़ी हो सकती है, गड़बड़ी होने के बाद फिर गरीब लोगों को तकलीफ हो सकती है। कल जब मैंने यहां भाषण किया था, तब मैंने खुद होकर यहां के एक वरिष्ठ नेता जनेश्वर मिश्र जी को बहुत धन्यवाद दिया था क्योंकि उन्होंने बहुत संयम से भाषण किया। उनका भाषण इतना अच्छा था कि मैंने उनका अभिनंदन किया था और आज भी करता हूं। एक दूसरी बात मुझे यह भी अच्छी लगी कि इस सदन में मेरे पहले जिन लोगों के भाषण हुए, वे सब भाषण संयमपूर्ण हुए हैं। मैं यही चाहता हूं कि ऐसे विषय में यदि संयम रखा जाएगा तो जो cause है, जिसके लिए हम काम करते हैं, उसको मदद होगी। अगर संयम छोड़ेंगे तो मदद नहीं होगी, उससे दंगा-फसाद और बढ़ सकता है।

सर, एक बात तो मैं कहूंगा कि इस विषय की मालूमात हमारे सदन में भी सभी लोगों को नहीं है। घटना क्या हुई, कैसे हुई, किस कारण हुई, यह नहीं समझा और कभी-कभी कुछ सदस्यों ने शिव सेना का नाम भी इसमें लिया है। सेना ऐसा

करे, सेना वैसा करे, बात तो यह है कि राज ठाकरे जी, जिनकी पार्टी ने यह कुछ किया, ऐसा जिनके ऊपर आरोप है, वह अभी हमारी पार्टी में नहीं हैं। हमारा और उनका संबंध अभी नहीं है। ...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आज़मी (उत्तर प्रदेश): सिर्फ पार्टनरशिप का संबंध है।

شری ابو عاصم اعظمی : صرف پارٹنرشپ کا سمبندھ ہے۔

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप अपने टाइम में बोलिएगा। आज़मी जी, आप आपने भाषण में जो कहना हो, कहिए।

श्री मनोहर जोशी: यह गलत बात है, गलतफहमी से बात करना, गलत आरोप करना...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): यह बात ठीक नहीं है।

श्री मनोहर जोशी: ऐसी बात सदन में कभी नहीं होनी चाहिए, लेकिन लोग अपने पॉलिटिकल इंटरेस्ट के लिए कुछ भी कहते हैं। सर, एक बात में कहूंगा कि मुंबई में जो कुछ घटना घटी, वह घटना साधारण स्वरूप से यदि इस विषय पर बाहर के लोग वहां आकर लोगों को उत्तेजित नहीं करते तो मुंबई में इतना सब नहीं होता। कोई-कोई लोगों ने भड़काऊ भाषण किए, उनके स्वार्थ के लिए किए, राजनीति में उनका इंटरेस्ट था, इस इंटरेस्ट के लिए किए। सर, मुझे इस बात का बड़ा दुख है कि इससे गरीब लोगों को तकलीफ हुई। मैं इसके तीन कारण देता हूं। मेरी विनती है कि लोग ध्यान से सुनें क्योंकि आज जो आरोप हो रहे थे, वह मुझे मालूम है कि अप्रत्यक्ष रूप से शिव सेना की जो भूमिका थी, उस पर भी हो रहे थे और महाराष्ट्र की गवर्नमेंट के लिए भी हो रहे थे और हम दोनों-मैं और इस विषय पर जो मंत्री महोदय यहां इस सदन में जवाब देने वाले हैं, वह भी महाराष्ट्र के हैं। यह घटना जब घटी, उस दिन भी मैं मुंबई में था। सर, 18 जनवरी, 2008 को राज ठाकरे ने एक मीटिंग में कहा कि महाराष्ट्र में केवल महाराष्ट्र दिन होना चाहिए, उत्तर प्रदेश दिन नहीं होना चाहिए। मैं छिपाना नहीं चाहता हूं, उनका यही उद्‌गार था। यह उन्हें बोलना चाहिए, मेरी दृष्टि से नहीं बोलना चाहिए, लेकिन उन्होंने कहा तो उनके कहने के बाद, सब लोग उनकी बात सुनते हैं, ऐसी बात थोड़े ही हैं उनके यह बात करने के बाद मेरे मित्र अमर सिंह जी की प्रेस कांफ्रेंस हुई, प्रेस कांफ्रेंस में अमर सिंह जी ने कहा कि यह जो झगड़ा है, यह सब उत्तर भारतीय लोग और शिव सेना के लोग साथ में रहते हैं, इसलिए यह झगड़ा है और उन्होंने कहा कि यह झगड़ा उद्धव ठाकरे और राज ठाकरे के बीच में है। फिर वहां जो लोग उस पार्टी के गए थे, उन्हें झंडे दिखाए, कुछ थोड़ीसी गड़बड़ी की और यह विषय फिर आगे बढ़ा जिस के बारे में मैं नहीं कहूंगा क्योंकि माननीय अमर सिंह जी ने वे बातें हमारे सब के सामने रखी हैं। फिर किसी ने कहा कि उत्तर भारतीयों को हाथ में लाठी देनी चाहिए। राज ठाकरे ने कहा लाठी क्या हम तो मराठी लोगों को तलवार देंगे। सर, यह तो सब खेल हुआ इसका कारण लोगों का अपने खुद पर संयम नहीं रहता है। अगर संयम रखेंगे तो ऐसी बातें, ऐसी स्थिति में जाकर बोलने की आवश्यकता बिल्कुल नहीं थी। तो इस घटना के तीन कारण हैं जिसमें से एक कारण भड़काऊ भाषण यही है। दूसरा कारण जो वहां हुआ वह कारण भी इतना ही इम्पोर्टेंट है, जो राज ठाकरे जी ने छठ पूजा के बारे में कुछ कहा। उन्होंने कहा कि छठ पूजा हो सकती है, लेकिन छठ पूजा के समय शक्ति प्रदर्शन करना मुझे पसंद नहीं है। उन्होंने जो कहा, वह मैं बोल रहा हूं। शक्ति प्रदर्शन की क्या जरूरत है, यह उनका मुद्दा था, लेकिन लोगों ने उससे ऐसा अर्थ निकाला कि उनका छठ पूजा का ही विरोध है। मैं फिर एक बार यह कहता हूं कि वह मेरी पार्टी के सदस्य नहीं हैं, वह अपनी पार्टी चलाते हैं। वह उसे भी न कहते, तो अच्छा होता, लेकिन उन्होंने कहा। तो लोग क्या सोचते हैं कि उनके कहने के बाद छठ पूजा खत्म हो जाएगी? बिल्कुल नहीं होगी। शिव सेना के लोग छठ पूजा में जाते हैं, वहां उनके साथ में काम करते हैं, पूजा मनाते हैं। फिर पूजा पर ही चर्चा हुई, गणेश पूजा कैसी होती है, गणेश पूजा क्या हम नहीं कर सकते हैं यह जो सब बातें हुई, यह राजनीति की बात थी और इसलिए महाराष्ट्र के दूसरे नेता शरद पवार जी ने भी कहा था कि यह एक छोटी सी घटना को बड़ी सी पब्लिसिटी दी गई है, इतनी पब्लिसिटी देने की आवश्यकता नहीं थी। माननीय शरद पवार जी ने भी यह बात कही।

महोदय, मैं देख रहा था कि यहां जो आलोचना हो रही थी, वह महाराष्ट्र के बारे में हो रही थी, इसकी कोई जरूरत नहीं है। न पूरा महाराष्ट्र उनके हाथ में है और न ही शिव सेना और उनका संबंध रहा है। तो शिव सेना और महाराष्ट्र, दोनों को अलग रखकर जिन लोगों ने जो कुछ कहना है, उसके बारे में आलोचना करनी है, आप जरूर कीजिए, आपको अधिकार है। कभी-कभी मैं यह देखता हूं कि मीडिया पर जो कुछ कहा गया, जैसा आज शरद यादव जी ने भी कहा और अमर सिंह

जी ने भी कहा, बात बिल्कुल यह सच है, जो घटना हुई, वह घटना मेरे घर से भी दिखाई दे सकती है, घटना जहां हुई, वह मेरे बाजू में पड़ोस में हुई, एक आदमी को टैक्सी से निकाल कर मारा गया। बात सच है, बिल्कुल सच है, लेकिन उसे मारने की यह घटना टेलीविजन पर पूरे दो दिन दिखाई जाती रही। इसका क्या उद्देश्य होता था? मैं नहीं समझता हूं कि ऐसा क्यों किया गया? बार-बार उसी को दिखाते थे और लोग समझते थे कि हर समय जिसको मारा जा रहा है, वह नए आदमी हैं, जबकि नए आदमी नहीं थे। लोगों के पास पूरी इंफोरमेशन न होने के कारण भी बड़ा नुकसान होता है। मीडिया ने यही किया, बार-बार यह बात दिखाई। शायद वह राज ठाकरे जी को बढ़ावा देना चाहते थे। मुझ यह नहीं मालूम कि उनका उद्देश्य क्या था? कोई न्यूज-पेपर, प्रिंट मीडिया भी ऐसा था। उनका उद्देश्य मुझे मालूम नहीं। जो बात की गई, उसका इम्प्रेशन पूरे देश में बना। मैं जब से यहां आया हूं, तब से अनेक सांसद मुझसे मिलते हैं, मुझसे पूछते हैं कि क्या हम मुंबई जा सकते हैं? तो यह भय है। लोगों के मन में ऐसा भय निर्माण करना, यह भी ठीक नहीं होता है, लेकिन वही घटना बार-बार दिखाई गई, जिसका यह असर हुआ कि इस सदन में यह चर्चा हुई। मैं शुरुआत से यह कहता था कि इस चर्चा की आवश्यकता नहीं है। यहां चर्चा होने के बाद इस विषय को फिर महत्व मिलेगा, फिर वहां लोग चर्चा करना शुरू करेंगे। कोई भी दो शब्द बोलता है, चार शब्द बोलता है, सभी बात तो वहां मालूम नहीं पड़ती, मगर लोग वहां फिर सोचना शुरू करते हैं कि नहीं, नहीं, जो किया वह ठीक था।

महोदय, इस विषय पर मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा, जितना मुझे बहुत ही इम्पोर्टेंट लगता है, उतना ही मैं आपके सामने रखूंगा। तीसरी बात जो मेरी है, वह है कि राज्य सरकार ने तुरंत कार्रवाई की या नहीं की? गृह मंत्री जी से मैं कहूंगा कि ऐसा नहीं हुआ कि इस विषय में तुरंत कार्रवाई की गई। इतना ही नहीं, दुर्भाग्य की बात यह है कि केन्द्र सरकार के बताने के बावजूद भी राज्य सरकार ने कार्रवाई नहीं की। इन्क्वायरि करनी है, यदि आप इम्पार्सियल इन्क्वायरि भी करना चाहते हैं, तो इसकी भी इन्क्वायरि क्यों नहीं की? हमारी शिव सेना के हाथ से कभी ऐसा हुआ, तो उसी दिन शाम को लोगों को पकड़ा जाता था और जेल में डाला जाता था। इसमें ऐसा क्यों नहीं हुआ? राज्य सरकार जिस पार्टी की है, उस पार्टी के मन में इस विषय पर कार्रवाई न करने के लिए कौन सी राजनीति थी? यह मेरा प्रश्न है। एक हाथ से कार्रवाई न करना, दूसरे हाथ से गलती क्या हुई है बोलना, यह ठीक नहीं होता है। मैं शिव सेना की तरफ से आज इस विषय पर कार्रवाई न होने के विषय पर और किसी के मन में ऐसा हो कि शिव सेना का भी इसमें थोड़ा सा हाथ है, तो मैं कहूंगा कि हमारा बिल्कुल हाथ नहीं है, यह हमारी नीति नहीं है। ....(व्यवधान)....

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, एक मिनट।

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، ایک منٹ۔]

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप बोलेंगे, आपका बोलने के लिए नाम है। ....(व्यवधान)....

श्री अबू आसिम आज़मी: सर मैं एक मिनट ही लेना चाहता हूं।

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، میں ایک منٹ ہی لینا چاہتا ہوں۔]

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आपका बोलने के लिए नाम है। आप उसी में बोल लीजिएगा। ....(व्यवधान)....

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, एक ही सवाल पूछना चाहता हूं ....(व्यवधान).... सर, उद्धव ठाकरे ने एअरपोर्ट पर जाकर बोर्ड को कालिख लगाया हुआ था। ....(व्यवधान)....

†[شری ابو عاصم اعظمی : سر، ایک ہی سوال پوچھنا چاہتا ہوں۔مداخلت۔ سر، ادھو ٹھاکرے نے ائر پورٹ پر جاکر بورڈ کو کالک لگایا ہوا تھا۔مداخلت۔]

श्री मनोहर जोशी: मैं इसका भी जवाब दे रहा हूं। ....(व्यवधान)....

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप बोल रहे हैं। ....(व्यवधान).... आज़मी साहब आप बैठ जाएं। ....(व्यवधान)....

---

†Transliteration in Urdu Script.

श्री मनोहर जोशी: समझने की तैयारी हो, तो मैं जवाब दूंगा, नहीं तो नहीं दूंगा। ....(व्यवधान)....

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आज़मी जी, आप अपने भाषण में अपनी बात कहिएगा, अभी भी जोशी जी को बोलने दीजिए।

श्री मनोहर जोशी: मुंबई में, महाराष्ट्र में नौकरी मराठी लोगों को मिलनी चाहिए, यह शिव सेना की भूमिका है और सर, इसके लिए हर प्रांत में आप देखें। महाराष्ट्र की सरकार ने यह काम नहीं किया, इसलिए शिव सेना को यह काम करना पड़ा। जहां इतनी नौकरियां हों और उनमें यदि कोई सिर्फ अपने प्रदेश के ही सभी लोग ले आएंगे, यहां बिहार की बात है, खलासी का जॉब था, इतना साधारण जॉब और जितने आदमी लिए गए, कोई 300 आदमी थे, उनमें से 295 आदमी अगर बिहार के हुए तो क्या किसी को गुस्सा नहीं आएगा किसी को। किसी भी स्टेट में जब सब लोग बाहर से लाए जाते हैं, तब गुस्सा आता है, तब शिव सेना बीच में आती है। लेकिन इस घटना से जोड़ना, यह बिल्कुल गलत बात होगी।

सर, मैं महाराष्ट्र में मुख्य मंत्री था, वहां झोपड़ पट्टी वाले जो काम करते थे, हर झोंपड़ी में रहने वाले आदमी को 225 स्कावयर फुट जगह फ्री ऑफ चार्ज ओनरशिप बेसिस पर देने का कानून हम लोगों ने बनाया था और जब वह जगह दी गई तो सभी जाति के लोगों को, सभी धर्म के लोगों को, सभी प्रदेश के लोगों को मैंने जगह दी है। आज़मी जी अगर न बोलेंगे तो मैं इनको ले जाकर दिखा दूंगा। वहां सब लोग हैं-गुजराती हैं, उत्तर भारतीय हैं, बिहारी हैं, हमने कभी पूछा नहीं।

श्री अबू आसिम आज़मी: मुझे यकीन नहीं आता।

Urdu †[شری ابو عاصم اعظمی : مجھے یقین نہیں آتا۔]

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): जोशी जी, आप बोलिए।

श्री मनोहर जोशी: मेरे साथ आ जाइए, यकीन आ जाएगा, लेकिन जब तक यकीन नहीं होता तब तक आरोप मत लगाओ।

सर, यह हमारी पार्टी की भूमिका है और इसी भूमिका से हम आगे बढ़ रहे हैं और इसलिए मैं कहूंगा कि जो कुछ मुंबई में घटना घटी वह एक अलग घटना थी और हमारी पार्टी की भूमिका अलग है।

मैं एक बात और कहूंगा, क्योंकि यहां बार-बार संविधान का प्रश्न उठाया गया है, इसलिए यह बात करनी आवश्यक है। सर, शिव सेना ने हर बार 'जय हिन्द' और 'जय महाराष्ट्र' कहा है। इसका मतलब यही है कि पहले देश, बाद में महाराष्ट्र, जिनको मालूम नहीं है, वे समझें और दूसरी बात मैं यह भी कहूंगा कि 1992-93 में मुंबई शहर में बड़ा दंगा-फसाद हो गया था और शिव सेना ने उस समय जिन लोगों को बचाया था उनमें हमारे उत्तर प्रदेश के भाई भी थे, बिहार के लोग भी थे, राजस्थान के लोग भी थे, सभी को बचाने का काम भी शिव सेना ने किया था। तो शिव सेना सभी लोगों को रक्षा देती है, सुरक्षा देती है, किसी को मारना हमारी पार्टी का काम नहीं है।

सर, मैं संविधान के बारे में कहूंगा, क्योंक संविधान की बात यहां उठाई गई, इसलिए कहना चाहता हूं कि संविधान में एक बात कही गई है और इस बारे में मेरी मांग यहां के गृह मंत्री जी से भी है। बार-बार कहा गया कि संविधान में यह कहा गया कि कोई भी आदमी कहीं भी जा सकता है, जरूर कहा है, because section 19 of the Constitution says:

> "All citizens shall have the right to freedom of speech and expression, and also to move freely throughout the territory of India."

लेकिन इसके आगे जो कहा है, उसे लोग पढ़ेंगे तो अच्छा होगा, इसमें यह भी कहा है:-

> "Nothing in sub-clauses (d) and (e) of the said clause shall affect the operation of any existing law so as to impose or prevent the State from making any law imposing, reasonable restrictions on the exercise of any of the rights conferred by the sub-clauses of the said section."

†Transliteration in Urdu Script.

यानी उनको अधिकार है, राज्य सरकार को अधिकार है कि वे इस पर रिस्ट्रिक्शंस दे सकती है, लेकिन वे रिस्ट्रिक्शंस कौन सी हों, यह प्रश्न आ सकता है। मेरी सैंट्रल गवर्नमेंट से विनती है कि सुप्रीम कोर्ट कुछ भी कहे, लेकिन भूमि-पुत्र के अधिकार को भी देखना चाहिए, इसीलिए तो इतनी प्रादेशिक पार्टियां यहां आई हैं। कितने प्रादेशिक पक्ष हैं यहां। .... (**व्यवधान**).... सर, प्रादेशिक पार्टियां देश में बढ़ रही हैं, वही डिसाइड करती हैं कि सैंटर में किसकी गवर्नमेंट रहेगी, कांग्रेस की रहेगी या बी॰जे॰पी॰ की रहेगी। कौन डिसाइड करता है? वही तो डिसाइड करती हैं, भूमि-पुत्र हैं वहां के और इसका मतलब यह नहीं है वे देशद्रोही हैं, वे देश के भी भूमि-पुत्र हैं, भारत भूमि के भी भूमि-पुत्र हैं और अपने-अपने स्टेट में अपनी-अपनी भाषा, अपने-अपने कल्चर को बढ़ावा देना भी उनका काम होता है। इसलिए, यह बात गलत नहीं है।

सर, मैं केवल दो मुद्दे और रखकर अपनी बात समाप्त करूंगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): जरा संक्षेप में कहें।

श्री मनोहर जोशी: एक बात जिसका मुझे दुख होता है, बहुत ही दुख होता है, एक सांसद ने मेरे पास चर्चा करते समय कहा कि मुंबई में ऐसी घटना हुई तो मुंबई Centrally administered क्यों न कर दी जाए, यह उनका मुद्दा था। यहां महाराष्ट्र के मंत्री बैठे हैं, उनको तो मालूम है कि केन्द्र सरकार में ऐसे कई लोग होते हैं, जो केन्द्र सरकार में बैठकर मुंबई के बारे में सोचते हैं कि मुंबई केन्द्र शासित होनी चाहिए। मैं माननीय शिवराज पाटिल जी से कहूंगा कि श्री सी॰ डी॰ देशमुख ने उस समय सदन में, पंडित जवाहर लाल नेहरू, जो उस समय प्रधान मंत्री थे, उनको बताया था कि मुंबई Centrally administered नहीं होनी चाहिए, वह हिंदुस्तान की commercial capital है, तो महाराष्ट्र की भी capital है। मैं आज कहूंगा, इसे रिकॉर्ड पर जाने की आवश्यकता है कि यदि कोई भी आदमी इस घटना को उठाकर, मुंबई को केन्द्र द्वारा शासित करने की कोशिश करेगा, तो महाराष्ट्र के लोग यह कभी नहीं सह सकेंगे, चाहे उसके लिए कितना ही बड़ा आंदोलन करना पड़े ....(**व्यवधान**).... यह महाराष्ट्र की भूमि है, महाराष्ट्र की भूमि होने के बावजूद यह बात करना गलत है। मैं नहीं चाहता हूं कि यह बात सही हो जाए और यदि किसी के मन में हो, तो आज आप स्पष्ट कर सकते हैं कि ऐसा कोई भी विचार, किसी के मन में नहीं है।

श्री शिवराज वी॰ पाटील: मैं इसी वक्त आपको स्पष्ट करना चाहता हूं कि ऐसी बात न करें, तो ठीक है, यह भी एक झगड़े का विषय हो सकता है और इस प्रकार का विचार हमारे मन में नहीं है।

श्री मनोहर जोशी: क्या आप यह नहीं कह सकते कि हम नहीं करेंगे ....(**व्यवधान**)....

श्री शिवराज वी॰ पाटील: हमारे पास इस प्रकार का विचार नहीं है ....(**व्यवधान**)....

श्री मनोहर जोशी: यही तो मैं चाहता हूं, यही स्टेटमेंट मुझे चाहिए ....(**व्यवधान**).... एक छोटी सी घटना को लेकर महाराष्ट्र को इतनी तकलीफ हुई है, आप जानते हैं ....(**व्यवधान**).... उस समय भी केन्द्र सरकार ने यही किया, यह हम बार-बार नहीं करने देंगे ....(**व्यवधान**).... मुझे यही आश्वासन चाहिए था, मिल गया।

महोदय, यदि मैं मीडिया की बात नहीं कहूंगा, तो रह जाएगा। आज सुबह ही मीडिया ने मुझसे पूछा था, यह महत्वपूर्ण बात है। मैं ज्यादा समय नहीं लूंगा। आज मीडिया ने मुझे बाहर जाने के बाद पूछा कि बाला साहब ने क्या स्टेटमेंट दिया है बिहारी लोगों के बारे में? आज का जो शिव सेना का पेपर है, उसमें एक स्टेटमेंट आया है। तो उन्होंने पूछा कि बाला साहब ने क्या स्टेटमेंट दिया है? मैंने कहा कि मैंने अभी तक पढ़ा नहीं है, मुझे मालूम नहीं है। तो मीडिया ने कहा कि आपको कैसे मालूम नहीं, स्टेटमेंट तो दिया है। तब मैंने आज का पेपर मंगाया "सामना" और देखा कि उसमें इसी विषय पर एक editorial है। पूरा editorial इसलिए है कि दूसरे सदन के एक सदस्य, मेरे मित्र श्री प्रभुनाथ सिंह ने कहा था कि मुंबई के लोग खराब बातें करते हैं, क्योंकि मुंबई में खारा पानी आता है। और हम बिहार के लोग खराब बात नहीं करते हैं, क्योंकि हमारे यहां गंगा का, मीठा पानी आता है ....(**व्यवधान**)....

श्री तारिक अनवर: यह घटिया बात है, बहुत घटिया बात है ....(**व्यवधान**)....

श्री मनोहर जोशी: बहुत घटिया बात है, इससे लोग नाराज़ होते हैं। कुछ लोगों की यह आदत ही है कि मालूम नहीं, फिर भी बातें करेंगे और इस पर अगर editorial आ गया, तो इसमें क्या गलत है? उन्होंने उसका जवाब इसमें दिया है। इसमें बहुत बातें हैं, जिनमें मैं जाना नहीं चाहता हूं।

7.00P.M.

अंत में माननीय मंत्री जी से एक प्रश्न पूछकर, मैं अपना भाषण समाप्त करूंगा। आपने दूसरे सदन में ऐसा कहा और आपके भाषण की कॉपी भी मेरे हाथ में है, आपने वहां कहा कि जो आरोप किया है-बिहार के एक आदमी के दो हाथ तोड़े गए, इसके बारे में मैं पूरी इंक्वायरी करूंगा, टेपरिकॉर्डिंग करूंगा, वह पेशेंट अभी बिहार में है, मैं इसकी पूरी इंक्वायरी करूंगा और सदन के सामने आऊंगा। यदि यह इंक्वायरी आप कर रहे हैं, तो मेरा भी आपसे एक निवेदन है-आप जानते हैं बडमेरा कहां है, अमरावती के पास है, वहां 4-5 बिहारियों ने इकट्ठा होकर एक मराठी आदमी को ट्रेन से फेंका, क्या इस बारे में भी आप इंक्वायरी करेंगे? क्या इस विषय में भी आप केवल इंक्वायरी नहीं, टेपरिकॉर्डिंग भी करेंगे? यदि वह नहीं करने वाले, तो यह मत करो, या फिर दोनों करो ....(व्यवधान)....

श्री शिवराज वी॰ पाटील: आप फिर झगड़ा पैदा करने वाली बात कर रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री मनोहर जोशी: मैं मांग कर रहा हूं कि आप बिहारी और मराठी में discriminate नहीं करेंगे ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): जोशी जी, आपने अपनी बात कह दी, बैठिए। श्रीमती प्रभा ठाकुर।

श्री मनोहर जोशी: मैं ऐसा चाहता हूं कि बिहारी और मराठी भाई बनकर रहें ....(**व्यवधान**)....

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): मैंने अगला नाम पुकार दिया है, जोशी जी, आप बैठिए, ...(**व्यवधान**).... मंडल जी, आप बैठ जाइए ....(**व्यवधान**)....

श्री मंगनी लाल मंडल: पहले तो वे शालीनता से बोल रहे थे, लेकिन बाद में उन्होंने प्रतिक्रिया में कुछ बातें कह दी। महाराष्ट्र की धरती का हम लोग सम्मान करते हैं। महाराष्ट्र की धरती को और महाराष्ट्र को जो बदनाम करना चाहते हैं, उनको गिरफ्तार करके उनके खिलाफ राजद्रोह का मुकदमा चलाना चाहिए ....(**व्यवधान**)....

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आपने अपनी बात भाषण में कह दी है, इसलिए आप बैठ जाइए ....(**व्यवधान**)....

डॉ॰ प्रभा ठाकुर (राजस्थान): धन्यवाद, उपसभाध्यक्ष जी।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): प्रभा जी, बहुत कम समय है।

डॉ॰ प्रभा ठाकुर: महोदय, महिलाओं को कम समय ही दिया जाता है।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): नहीं, आपके पार्टी की तरफ से आपका नाम बाद में दिया गया है, तो मैं क्या कर सकता हूं।

डॉ॰ प्रभा ठाकुर: महोदय, मैं कोशिश करूंगी और संरक्षण चाहूंगी कि कम समय में बात हो। एक बहुत ही चिंतनीय और चिंता के विषय पर यहां पर चर्चा और बातचीत चल रही है। महोदय, कोई विषय ऐसा होता है, जो राजनीति से ऊपर उठकर होता है, यह वैसा ही विषय है। यह एक ऐसा मुद्दा है, जो न केवल महाराष्ट्र का मुद्दा है, न यूपी का मुद्दा है, न बिहार का मुद्दा है, न राजस्थान का मुद्दा है, जहां से मैं आती हूं, यह देश की एकता का, अखण्डता का, इंसानियत का, देश की संस्कृति और संविधान की रक्षा का मुद्दा है। इस मुद्दे पर मैं अपने विचार इस सदन में यहां प्रस्तुत करना चाहती हूं।

महोदय, एक व्यक्ति द्वारा सत्ता-लोलुपता के चलते जाति-धर्म, समुदाय और संप्रदाय की राजनीति का कुरुपतम चेहरा आखिर कहां तक जाकर प्रकट होता है। यह उसका एक उदाहरण है। महोदय, जब इंसान सब भूल कर ऐसा करता है तो वह न अपने समाज का हित कर रहा है, न अपने प्रदेश का हित कर रहा है, न अपने प्रदेश की जनता का हित कर रहा है और न अपने देश का हित कर रहा है। सिर्फ अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए, सिर्फ अपनी सत्ता की राजनीति के लिए, सिर्फ अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ऐसा करता है। आज मुंबई में, महाराष्ट्र में इस तरह के हालात इसी कारण से पैदा हुए हैं। इसके लिए पूरे सदन में जितनी चिंता है, पूरे देश में भी इस स्थिति के लिए उतनी ही चिंता है। मुंबई आज एक ऐसी जगह है, जहां पूरे हिन्दुस्तान के लोग, पूरे देश के लोग वहां रहते हैं। महोदय, मैं एक बात कहना चाहूंगी, वह यह है कि इसमें कोई महाराष्ट्रियन अपराधी नहीं है। इस तरह के आंदोलन को एक प्रतिशत महाराष्ट्रियन का भी समर्थन नहीं होगा। इस प्रकार की जो शर्मनाक और अमानवीय घटनाएं हुई हैं, मैं कहती हूं कि जितनी निंदा उसकी हम कर रहे हैं,

अलग-अलग प्रदेश के लोग भी उतनी ही निंदा कर रहे हैं। आज आप हरेक महाराष्ट्रियन की राय लें, उनके आंकड़े इकट्ठे करें तो आप पाएंगे कि उस एक व्यक्ति के साथ महाराष्ट्र के एक प्रतिशत लोग भी नहीं होंगे।

महोदय, यह एक महान राष्ट्र है। वहां से बड़े-बड़े संत हुए हैं, महात्मा हुए हैं, राजनेता हुए हैं, कलाकार हुए हैं, कवि और लेखक हुए हैं। अगस्त क्रांति की जन्म स्थली है। ऐसी परंपरा वहां नहीं हो सकती है। महाराष्ट्र में लता मंगेश्कर जैसी कलाकार हैं, सचिन तेन्दुलकर जैसे खिलाड़ी हैं। उन पर सभी को गर्व है, केवल महाराष्ट्र को गर्व नहीं है। पूरे देश को गर्व है। छत्रपति शिवाजी केवल महाराष्ट्र में सीमित नहीं होते, उन पर पूरे देश को गर्व होता है। मीरा बाई के पद केवल राजस्थान में नहीं गाए जाते हैं, बल्कि उनके पद महाराष्ट्र में भी उसी भक्ति भाव से गाए जाते हैं। उसी महाराष्ट्र के नासिक में जहां अमानवीय घटनाएं हुईं, वहीं शिरडी में साई बाबा का एक मंदिर है, जहां कितने ही जाति, धर्म और सम्प्रदाय के लोग जाते हैं। आज तक लोगों को पता नहीं है कि वह साई बाबा कौन-सी जाति, धर्म और सम्प्रदाय के थे। सब वहां सिर झुकाते हैं, क्योंकि वे इंसानियत के प्रतीक थे, उन्होंने मानवता की सेवा की थी। उसी महाराष्ट्र में, जहां अभी-अभी बाबा आम्टे का निधन हुआ, बाबा आम्टे जैसी विभूति हुई, जिन्होनें मानवता की सेवा में, बिना कोई जात-पात, बिरादरी का भेदभाव किए, अपना पूरा जीवन लगा दिया। उस महाराष्ट्र में ऐसे-ऐसे आदर्श महापुरूष हुए हैं तो एक व्यक्ति पूरे महाराष्ट्र को कलंकित थोड़े ही कर देगा, न कोई पूरे महाराष्ट्र के समाज को कलंकित कर सकेगा।

महोदय, मैं यह कहना चाहती हूं, माननीय गृह मंत्री जी से भी और भारत सरकार से भी यहां से यही अपील करना चाहती हूं और सभी साथियों से भी कहना चाहती हूं कि यह कोई एक जाति, प्रदेश या समाज का विषय नहीं है, यह पूरे देश की एकता-अखण्डता का विषय है। जब जाति, धर्म, राम और इनके नाम पर राजनीति होने लगेगी तो इस तरह के अंजाम आने लगेंगे। ऐसे भयानक परिणाम में उनकी परिणति होने लगेगी, इसको सोचना चाहिए।

आज विदेशों में क्या हित कर रहे हैं वे अपने महाराष्ट्र का? **(समय की घंटी)** आज महाराष्ट्र के वे लोग जो देश के विभिन्न भागों में हैं, वे अपने आपको कितना दुखी और असुरक्षित महसूस कर रहे होंगे! आज इसी देश के विभिन्न प्रदेशों के लोग Middle East में जाते हैं, कोई अमेरिका, कोई यूरोप जाते हैं, महाराष्ट्र से भी जाते हैं। अगर विदेशों में भी यही परंपरा, इसी तरह की संस्कृति वे अपनाने लगें, ऐसा ही कानून बना लें, तो किस प्रकार लोकतंत्र की रक्षा होगी? किस तरह यह लोकशाही चलेगी? मैं सरकार से यहां से यही अपील करना चाहती हूं कि इस तरह की बेलगाम तानाशाही को अगर आतंक की भाषा में परिभाषित किया जाए कि यह आतंक फैलाने का काम हो रहा है, तो उसी श्रेणी में ऐसे व्यक्ति को रखा जाना चाहिए। उनके साथ कोई नहीं है, न महाराष्ट्रियन हैं, न पूरा देश है। पूरा देश उनके खिलाफ है। वे सोच रहे होंगे कि मीडिया के माध्यम से उनका यश फैल रहा है, लेकिन यश नहीं, अपयश फैल रहा है। इससे न तो कोई नेता बड़ा हो जाता है, न कोई व्यक्ति महान हो जाता है। महोदय, महात्मा गांधी को केवल गुजरात में नहीं समेटा जा सकता। **(समय की घंटी)**

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): कृपया समाप्त करें।

डा॰ प्रभा ठाकुर: वे देश के हैं, पूरी दूनिया ने उनको अपना आदर्श माना है। उनके जन्मदिवस को अहिंसा दिवस के रूप में मनाने की अमेरिका में घोषणा हुई है, युनाइटेड नेशन्स में। वे कोई अमेरिका में पैदा नहीं हुए थे। विभूतियां अपनी छाप छोड़ जाती हैं, जैसी वे होती हैं। **(समय की घंटी)** महोदय, आप बार-बार ....**(व्यवधान)**....

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अब आप समाप्त करें, कई और लोग बोलने वाले हैं। अब समय हो गया है, समाप्त करें।

डा॰ प्रभा ठाकुर: मैं कम ही समय लूंगी, मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहती।

महोदय, आज हमारी महामहिम राष्ट्रपति महोदया महाराष्ट्र से ही आती हैं, हम सब उनका सम्मान करते हैं, क्योंकि वे पूरे देश की राष्ट्रपति हैं, केवल महाराष्ट्र की ही नहीं। हमारे माननीय गृह मंत्री भी वहां के हैं। हम सब एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। यह भावना वहां है, उस भावना को चोट न पहुंचे, हमारे किसी के भी वक्तव्य से ठेस न पहुंचे, हम सबको इसका ख्याल चाहिए। मुझे याद आती हैं अल्लामा इकबाल साहब की वे पंक्तियां-

"सारे जहां से अच्छा हिंदोस्ता हमारा,

हम बुलबुलें हैं इसकी, ये गुलिस्तां हमारा।"

अनेकता में एकता की यह जो मिसाल है ...**(व्यवधान)**...

श्री तारिक अनवर: अपनी कविता भी कहिए।

डा॰ प्रभा ठाकुर : महोदय, इसी बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने जो कविता लिखी है, वह पंक्तियां भी मैं कह रही हूं, वह सुनिएगा। कविता के लिए कुछ समय अलग से तो देंगे!

"कितने ही धर्म चाहे, कितनी ही बोलियां हों,

कितनी ही जातियां हों, कितनी ही टोलियां हों,

सब भारती के बेटे, इस पर जिए मरेंगे,

हम एक ही रहे हैं, हम एक ही रहेंगे।

भाषा अजीज़ हमको, मज़हब भी अपना प्यारा,

लेकिन है सबसे पहले हिंदोस्ता हमारा।"

अगर हिंदुस्तान रहेगा, तो हम रहेंगे और भारत एक रहेगा, तो हम एक रहेंगे। अगर कहीं आग लगी, तो लपटें दूर तक जाती हैं, इसीलिए मैं सरकार से भी अपील करती हूं कि एक चिंगारी को आग बनने से रोंके, एक नासूर को कैंसर बनने से रोकें। मैं अपने साथियों से भी अपील करती हूं, अपने राजनीतिक दल के सभी साथियों से कि आग में घी न डालें, आग पर पानी डालें। पानी से ही यह आग बुझेगी और मुम्बई में तो समुद्र है, जो प्रदूषण का सारा विष पीता है। मुम्बई में तो समुद्र है, जिसमें वे नदियां भी मिलती हैं, जो उत्तर भारत से जाती हैं। मुम्बई जैसा ही बड़ा दिल वहां के लोगों का भी है मैं अपील करती हूं महाराष्ट्र के लोगों से भी कि वे कमान अपने हाथ में संभालें और ऐसे लोगो को पहचानें और उनको मुनासिब सज़ा दें, ताकि वे जहां तक हैं पूरे देश और दुनिया में, वहां महाराष्ट्र का नाम जैसा रोशन रहा है, उसी रूप में उनका नाम रोशन रहे, धन्यवाद।

श्री अबु आसिम आज़मी: सर, बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे इस अहम मौजू पर बोलने का मौका दिया है। किसी को उत्तेजित करना मेरा मकसद नहीं है, लेकिन मैं सच्चाई कह रहा हूं, आज इस हाउस के अंदर मैं कहता हूं कि मैं जो कहूंगा, सच कहूंगा, सच के सिवाय एक लफ्ज़ भी झूठ नहीं कहूंगा। इस चीज़ का सबसे बड़ा गवाह मैं हूं कि ....(व्यवधान).....

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): समय का ध्यान रखें।

श्री अबू आसिम आज़मी: अभी मनोहर जोशी जी ने कहा कि सच्चाई ये जानते हैं, लेकिन इन्होंने बहुत थोड़ी सी बात कही है। अखबार में छपा था कि मुम्बई में शिवसेना ने, कांग्रेस ने, एन॰सी॰पी॰ ने "उत्तर प्रदेश दिवस" मनाया और उस "उत्तर प्रदेश दिवस" पर उत्तर भारतीयों ने आर॰आर॰ पाटिल साहब को लाठी दी कि समाज को बांटने वालों के खिलाफ, उत्तर भारतीयों के साथ हुए जुल्म के खिलाफ इस लाठी को इस्तेमाल करूंगा, ऐसा उन्होंने वहां आश्वासन भी दिया। उसके बाद जब राज ठाकरे का बयान छपा अखबार में, तो लिखते हैं कि उत्तर भारत की ज़बान मुम्बई में नहीं बोलने दूंगा। लिखते हैं कि अगर मुम्बई में रहना है, तो महाराष्ट्रियन लोगों का सम्मान करना पड़ेगा। कौन अपमानित कर रहा है? लिखते हैं-आप उत्तर भारत की ज़बान यहां नहीं बोल सकते। आपको मुम्बई में उत्तर भारत दिवस नहीं मनाने दिया जाएगा। तब मैंने कहा। फिर कहा कि यदि आपने हमारी बात नहीं मानी तो मैं कल्याण का वाकया दोहरा दूंगा-यह भी लिखा है। कल्याण का वाकया क्या है? कल्याण में उन्होंने उत्तर भारतीयों को मारा। आज भी आप इंटरनेट खोलेंगे तो बेचारे मासूम, गरीब कहां-कहां से आए थे, तीन-तीन दिन के भूखे लोगों को-पुलिस वहां खड़ी है-ये लोग डंडे मार रहे हैं कि तू यहां पर कैसे इम्तिहान देने आया? तब मैंने कहा। इस देश के कांस्टीटयूशन में डिफेंस का प्रावधान है, उसमें दिया हुआ है कि आप अपना बचाव कर सकते हैं। होम मिनिस्टर साहब से मैंने कहा कि आप अमीर लोगों को अपनी रक्षा करने के लिए बंदूक देते हैं। ये गरीब बेचारे मारे जाएंगे, आपने लाठी दी है, तो उस लाठी को चलाइए, आप मुकदमा कीजिए-मेरा यह मतलब था। इन्होंने कुछ जवाब नहीं दिया। उसके बाद जब तीन दिन हो गए तो उत्तर भारतीयों ने मुझे बुलाया; तब मैं उसमें गया। ...(व्यवधान)... अखबार में है। ऐसे लाठी लेकर वे खड़े हैं। कह रहे हैं कि उत्तर भारतीयों के साथ किसी ने जुर्म किया तो इस लाठी को मैं चलाउंगा। दूसरे दिन से जुर्म चालू हो गया, उन्होंने कुछ नहीं किया। मेरा भाषण नहीं हुआ। मेरी देश बचाओ रैली के संबंध में दो महीने पहले शिवाजी मैदान में पुलिस स्टेशन में एप्लीकेशन थी। मेरे बाल-बच्चे कोई

राजनीति में नहीं है। सब के सब बुर्का पहने वहां आगे बैठे थे। अगर झगड़े जैसी कोई बात होती तो क्या मैं किसी को वहां बुलाता? कोई मतलब ही नहीं था। आज बुरा नहीं लगना चाहिए लेकिन इस संबंध में पूरी की पूरी राजनीति हो रही है। जिस तरह से कांग्रेस ने पंजाब में भिंडरावाला पैदा किया, उसी तरह से महाराष्ट्र में बाल ठाकरे को पैदा किया गया। मुझे वह दिन अच्छी तरह से याद है। ए॰आर॰ अंतुले साहब चीफ मिनिस्टर थे और शिवसेना खत्म हो रही थी। 6 एमएलसी शिवसेना के बना दिए। यह बात यहां से नहीं है। उसके बाद जब मुम्बई में शिवसेना मजबूत होकर शासन में बैठ गयी तो दूसरी सी टीम राज ठाकरे की खड़ी कर दी। यहीं से बात शुरू नहीं हुई तो शिवसेना और बीजेपी का alliance है। हमारे वहां के मुख्य मंत्री बाल ठाकरे के पास जाते हैं और बाल ठाकरे कह रहे हैं कि मैं प्रेज़ीडेंट के इलैक्शन में बीजेपी का साथ नहीं दूंगा। अगर महाराष्ट्र की कोई लेडी इस देश की प्रेज़ीडेंट बनती है तो मैं शिवसेना को छोड़ कर मराठी कार्ड खेलूंगा और मैं वोट दूंगा। यह वहां से शुरू होता है। इसी तरह शरद पवार साहब बेचारे पीएम बनना चाहते हैं पर नहीं बन सकते, बहुत मुश्किल है ...(**व्यवधान**)...

श्री तारिक अनवर: आपकी मदद नहीं चाहिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: मैं जानता हूं मैंने लकीर देखी है। ...(**व्यवधान**)... वे बेचारे बाल ठाकरे के पास गए। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अब विषय पर आइए क्योंकि समय ज्यादा नहीं है। ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: उसी विषय पर बोल रहा हूं। ...(**व्यवधान**)... बात किसने शुरू की? शिवसेना तो एक साम्प्रदायिक पार्टी है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप समय का ध्यान रखकर बोलें तो ज्यादा अच्छा होगा।

श्री अबू आसिम आज़मी: ये राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के लोग अपने आपको सेक्यूलर कहते हैं तो बाल ठाकरे के साथ एक घंटे मीटिंग में क्यों गए थे? बाला साहब ठाकरे ने कहा कि मैं बीजेपी को छोड़ दूंगा। ...(**व्यवधान**)... आप सुन लीजिए। ...(**व्यवधान**)... मैं बीजेपी के साथ नहीं रहूंगा। यदि शरद पवार को प्राइम मिनिस्टर बनाया जाता है, वह मराठी है, तो मैं उनको इसके लिए वोट दूंगा। यहां से राजनीति शुरू हो रही है। ...(**व्यवधान**)... यह बिल्कुल सही बात है।

श्री रूद्रनारायण पाणि: सर, इन्होंने मेरी तरफ देखकर कहा है कि आप सुन लीजिए ...(**व्यवधान**)... मैं आपके माध्यम से उनको सुनाता हूं कि शरद पवार के साथ हमारी पार्टी का पहले गठबंधन हो चुका है। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): पाणि जी, आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणि: मुलायम सिंह हमारे साथ भी थे। ...(**व्यवधान**)... Never say 'no' in politics ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): पाणि जी, आप बैठिए। ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: सर मैं भी आज़मगढ़ से मुम्बई आया। ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप अपनी बात कहें। समय की सीमा है, कृपया इसका भी ध्यान रखें। ...(**व्यवधान**)...

श्री अबू आसिम आज़मी: 25 बीघा की खेती गांव में करते हैं किन्तु जब बेटी जवान होती है तो केवल गेहूं बेचकर कोई बेचारा गांव वाला उसके हाथ पीले नहीं कर सकता, उसकी शादी नहीं कर सकता। उसके पास 15 कमरे का घर है। आप उत्तर प्रदेश के है। खेत-खलिहान, नौजवान बीवी बच्चे छोड़कर बेचारे गांव में भैंस और बकरी बेचकर, किराया लेकर मुम्बई चले जाते हैं, वहां सड़क पर जिंदगी गुजारते हैं जहां गांव में कुत्ते-बिल्ली नहीं रखते, ऐसे रूम में रहते हैं। मुम्बई के लिए हमारे पुरखों के हाथों में आज भी गड्डे पड़े हुए हैं, उन्होंने हाथगाड़ियां खींचकर मुम्बई को मुम्बई बनाया है। मुम्बई किसी की जागीर नहीं हो सकती। मुम्बई में पहले मराठी माहौल नहीं था। यह मुम्बई तो अंग्रेजों की थी जो पुर्तगालियों ने दहेज में दी थी। शुरू से, जब से मुम्बई बसी, तब से उड़ीसा के लोग, बिहार के लोग, उत्तर प्रदेश के लोग और राजस्थान के लोग मुम्बई में गए। उन्होंने मुम्बई को बनाया। मैं कहना चाहता हूं कि वहां अभी दो लोग मरे हैं। एक मराठी भाई मरा

है और एक बेचारा बिहार का वॉचमैन मर गया। उसका परिवार औरंगाबाद का परिवार है। हम वहां पर जाने वाले हैं। हम कहना चाहते हैं कि राज ठाकरे पर 302 का मुकदमा होना चाहिए। अगर नहीं होगा तो मैं समझूंगा कि सरकार ने काम नहीं किया। यह क्या मज़ाक है कि आपने उसे हीरो बना दिया और मुझे दो-दो बार गिरफ्तार किया गया, जबकि मैंने कुछ नहीं किया। जब मीटिंग खत्म हुई है, लोग लहू-लुहान हैं, लोग भाग रहे हैं, चौटाला जी भाषण कर रहे हैं, मैंने उनको चिट्ठी दी-वे बड़े नेता हैं- कि आप ज़रा रुक जाइए, मुझे उनको रोकने दीजिए। मेरे भाषण की शुरुआत यहीं से होती है, आप टेप चेक कर लीजिए कि मैं प्रशासन से हाथ जोड़कर निवेदन करता हूं कि शायद यह खबर गलत भी हो या सही हो, लेकिन बाहर से यह न्यूज आ रही है कि चारों तरफ लोग मारे जा रहे हैं, आप जरा पुलिस को एक्टिव कीजिए और जो लोग दंगा करें, उनको पकड़िए, उनको रोकिए। जो लोग दंगा कर रहे हैं उनको पकड़िए, उनको रोकिए। मैंने कोई भाषण किया ही नहीं, तीन घंटे से यह सब चल रहा था। वे कह रहे हैं कि भड़काऊ भाषण किया तो यह हुआ। मेरा भाषण तीन से चार घंटे के बाद हुआ है, इसकी आप इंक्वायरी कीजिए। सर, मैं यह कहना चाहता हूं कि यह जो मुम्बई में हुआ है इसके लिए एक पार्लियामेंट्री कमेटी बनाई जाए और वह कमेटी वहां जाए ...(**व्यवधान**)... यह आप सुन लीजिए। ...(**व्यवधान**)...

सर मैं कह रहा हूं कि पार्लियामेंट्री कमेटी बना दी जाए जिसका चेयरमेन कांग्रेस का नहीं, एन॰सी॰पी॰ पार्टी का नहीं, बल्कि किसी अपोजिशन पार्टी का होना चाहिए। इस कमेटी को वहां जांच करने के लिए भेजिए तथा जिन-जिन का नुकसान हुआ है उनको पूरा पैसा मिलना चाहिए। इसमें धारा-302 का मुकदमा भी होना चाहिए। सर, पुलिस यह इंक्वायरी नहीं करेगी, क्योंकि वहां के कमिश्नर साहब ने जिस राज ठाकरे के नाम एफ॰आई॰आर॰ है, उसको टेबल पर बड़ी इज्जत के साथ खाना खिला रहे हैं और फोटो खिंचवा रहे हैं, यह सब टी॰वी॰ पर आया है। यह क्या मजाक है। वह लगातार संविधान के खिलाफ बोले जा रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आज़मी साहब, आपका समय हो गया है।

श्री अबू आसिम आज़मी: अभी जो यहां बैठे हुए थे, चले गए हैं यहां से, इनको लगा कि कहीं उनका मराठी वोट बिखर न जाए ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अब आप समाप्त करिए।

श्री अबू आसिम आज़मी: कांग्रेस पार्टी के लोगों को बुरा नहीं मानना चाहिए। क्योंकि यह कांग्रेस और एन॰सी॰पी॰ का खेल है कि शिवसेना का वोट राज ठाकरे और शिवसेना में बंटवाओं और राजनीति करो। तो लाशों पर खड़े होकर राजनीति करना बंद करिए .....(**समय की घंटी**)

सर मेरे ऊपर जो मुकदमा किया गया है वह सरासर नाइंसाफी है। मैं तब निकला हूं जब मीटिंग खत्म हो गई थी। मैंने कुछ नहीं किया, सर। मैं वहां से सीधा मुख्य मंत्री के घर गया। यहां होम मिनिस्टर साहब बैठे हुए हैं, उनको बताना चाहता हूं ...(**व्यवधान**)...

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आप इधर देखते हुए बोलें तथा अब समाप्त करिए।

श्री अबू आसिम आज़मी: सर, मैं गाड़ी लेकर सीधा चीफ मिनिस्टर के घर गया और वहां कहा कि मैं उनसे मिलना चाहता हूं। मुख्य मंत्री घर पर मौजूद थे, लेकिन कहलवा दिया गया कि एयरपोर्ट गए हुए हैं। मैंने सोचा कि उनकी सिक्योरिटी वहां घर के बाहर है तो घर में ही होंगे। फिर नजर आया कि वहां उन्होंने पुलिस बुला ली तथा डी॰सी॰पी॰ को भी बुला लिया। फिर मैंने कहलवाया कि मुझसे एक मिनट बात कर लें। लेकिन बताया गया कि कल वे एक बजे मिलेंगे। मैंने कहा कि इंटरकॉम पर बात करवा दीजिए, क्योंकि मुम्बई में प्रॉब्लम हो रहा है जिससे वे पुलिस को बोल देंगे। मैं अपने बच्चों की कसम खाकर बोल रहा हूं। तो कहा गया कि नहीं मिलेंगे। मैंने कहा कि मुझे उनसे मिलना ही है, चाहे कुछ हो जाए। वहां मुझे गिरफ्तार कर लिया। जहां चोर उचक्के बंद किए जाते हैं वहां ले जाकर मुझे रख दिया गया। रात को दो बजे अमर सिंह जी आए, पता नहीं उन्होंने मुझे किस तरीके से बाहर निकाला। मुझे वहां दो-दो बार अरेस्ट किया गया। यहां उत्तर भारतीय मारा जा रहा है, बिहारी मारा जा रहा है, सब पर हमला हो रहा है और मैं इनके बचाव के लिए अपनी जुवान भी नहीं खोल सकता। यह क्या हो रहा है, जंगल राज चल रहा है।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अब आप अपना समाप्त करिए।

श्री अबू आसिम आजमी: सिर्फ बैलेंसिंग करने के लिए मुझे गिरफ्तार किया जा रहा है और कहा जा रहा है कि अबू आसिम इसके लिए जिम्मेदार हैं। मैं बिल्कुल जिम्मेदार नहीं हूं। जुल्म और नाइंसाफी के खिलाफ आवाज लगाना और मजलूमों की मदद करना कोई जुर्म नहीं है। सर, इस देश के अंदर अपने को डिफेंस करने का पूरा हक है। उत्तर भारतीयों ने अगर एक भी लाठी किसी को मारी हो तो बताइए। किसी एक भी उत्तर भारतीय ने लाठी नहीं मारी। सर, वैसे लाठी मार सकते हैं। अगर ऐसा हो जाता है तो बहुत गड़बड़ हो जाएगा।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): अब समाप्त करिए।

श्री अबू आसिम आजमी: सरकार को वहां के लिए एक हेल्प लाइन का एनाउंस करना चाहिए। जहां-जहां लोग हैं, नासिक में, पूना में जहां गरीब बेचारे आए हैं और अगर उनको कोई तकलीफ हो तो वह लोग हेल्प लाइन पर फोन करें। इस बारे में पुलिस को सख्ती के साथ कह देना चाहिए कि इनकी कम्पलेंटड लें। साथ ही वहां पर नेताओं को जाकर उनको आश्वासन देना चाहिए। सर, एक बात और, वहां एक हिन्दू स्कूल है जिसमें चौदह सौ बच्चे थे, जो सब भाग गए। जब उनमें से 23 बच्चे कई दिनों के बाद आए तो इस वजह से उस स्कूल के प्रिंसिपल के घर पर हमला कर दिया गया। इस डर से स्कूल के वे बच्चे भी चले गए जिससे उनका पूरा का पूरा जीवन खत्म हो रहा है लेकिन वे कह रहे हैं कि कुछ हुआ ही नहीं है, यह तो सिर्फ टी०वी० पर दिखाया जा रहा है। मैं यह भी बताऊंगा कि उनमें जो बच्चियां हैं उनका रेप हुआ है। ....(व्यवधान).

श्री तारिक अनवर: उनके साथ रेप हुआ है, यह साबित कर दें।

श्री अबू आसिम आजमी: सर, खुदा की कसम से मैं कह रहा हूं कि मुझे बताया है कि इनका रेप हुआ है मैंने वहां कांग्रेस पार्टी के जो एम०एल०ए० थे, उनको बुलाया। उन्होंने कहा कि हम नहीं आते हैं। अगर उनको सिक्योरिटी मिलेगी तो वे बताएंगी कि कौन लोग रेप में थे। वह भी बात है । इन सबकी इंक्वायरी होनी चाहिए। सर, मेरा मतलब आग लगाना नहीं है। वे गरीब लोग जो गांव से आए हैं, जो अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं, मुम्बई में दूध बेचते हैं, लेकिन वहां मराठियों से कहा जा रहा है कि उत्तर प्रदेश वालों से दूध मत लो। यह सब क्या चीज है। इसलिए मैं हाथ जोड़कर निवेदन करना चाहता हूं कि जो गरीब बेचारा गांव से आया है, उसकी मां, उसकी बहन 30 तारीख को उसके मनिआर्डर का इंतजार करती है क्योंकि उसका बूढ़ा बाप गांव में पड़ा हुआ है।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): आपकी बात आ गई ।

श्री अबू आसिम आजमी: उस बात को इस हाउस को बहुत गंभीरता से लेना चाहिए। एक कानून ऐसा बना दीजिए कि कोई भी इस देश के अंदर, किसी को एक से दूसरी स्टेट में जाने से रोकता है, तो उसको मकोका या पोटा से सख्त कानून के तहत सजा मिलनी चाहिए, क्योंकि यह देश को बांटने की बात है, देश तोड़ने की बात है..।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): ठीक है, अब आप समाप्त कीजिए। ...(व्यवधान)... अब आप समाप्त करें। श्री शत्रुध्न सिन्हा जी।...(व्यवधान)...

श्री अबू आसिम आजमी: यह कोई छोटी-मोटी बात नहीं है। हमारा भारत वर्ष...।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): मैंने अगला नाम पुकार लिया है, आप बैठ जाइये। आजमी साहब आप बैठ जाइये।

श्री अबू आसिम आजमी: अगर इसको किसी ने तोड़ने की कोशिश की। हमारे होम मिनिस्टर साहब जरूर इस बात का आश्वासन देंगे...।

उपसभाध्यक्ष (श्री कलराज मिश्र): ठीक है, उन्होंने संज्ञान ले लिया है।

श्री अबू आसिम आजमी: वहां पर उन बेचारों को सेक्योरिटी दी जाये, जो बेचारे भाग रहे हैं, उनको रोका जाये। सर, बहुत-बहुत शुक्रिया।

شری ابو عاصم اعظمی (اتر پردیش) : سر، بہت بہت دھنیواد کہ آپ نے مجھے اس اہم موضوع پر بولنے کا موقع دیا ہے۔ کسی کو اتیجت کرنا میرا مقصد نہیں ہے، لیکن میں سچائی کہہ رہا ہوں، آج اس ہاؤس کے اندر میں کہتا ہوں کہ میں جو کہوں گا، سچ کہوں گا، سچ کے سوائے ایک لفظ بھی جھوٹ نہیں کہوں گا۔ اس چیز کا سب سے بڑا گواہ میں ہوں کہ۔۔ مداخلت۔۔

اپ سبھاادھیکش (شری کلراج مشرا) : وقت کا دھیان رکھیں۔

شری ابو عاصم اعظمی: ابھی منوہر جوشی جی نے کہا کہ سچائی یہ جانتے ہیں، لیکن انہوں نے بہت تھوڑی سی بات کہی ہے۔ اخبار میں چھپا تھا کہ ممبئی میں شیوسینا نے، کانگریس نے، این۔سی۔پی۔ نے ''اتر پردیش دوس'' منایا اور اس ''اتر پردیش دوس'' پر اتر بھارتیوں نے آر۔آر۔ پاٹل صاحب کو لاٹھی دی کہ سماج کو بانٹنے والوں کے خلاف، اتر بھارتیوں کے ساتھ ہوئے ظلم کے خلاف اس لاٹھی کو استعمال کروں گا، ایسا انہوں نے وہاں آشواسن بھی دیا۔ اس کے بعد جب راج ٹھاکرے کا بیان چھپا اخبار میں، تو لکھتے ہیں کہ اتر بھارت کی زبان ممبئی میں نہیں بولنے دوں گا۔ لکھتے ہیں کہ اگر ممبئی میں رہنا ہے، تو مہاراشٹرین لوگوں کا سمان کرنا پڑے گا۔ کون اپمانت کر رہا ہے؟ لکھتے ہیں- آپ اتر بھارت کی زبان یہاں نہیں بول سکتے۔ آپ کو ممبئی میں اتر بھارتی دوس نہیں منانے دیا جائے گا۔ تب میں نے کہا، پھر کہا کہ اگر آپ نے ہماری بات نہیں مانی تو میں کلیان کا واقعہ دوہرا دوں گا۔ کلیان کا واقعہ کیا ہے؟ کلیان میں انہوں نے اتر بھارتیوں کو مارا، آج بھی آپ انٹرنیٹ کھولیں گے تو بیچارے معصوم، غریب کہاں کہاں سے آئے تھے، تین تین دن کے بھوکے لوگوں کو، پولیس وہاں کھڑی ہے۔ یہ لوگ ڈنڈے مار رہے ہیں کہ تو یہاں پر کیسے امتحان دینے آیا؟ تب میں نے کہا۔ اس دیش کے کانسٹی ٹیوشن میں ڈفینس کا پراوِدھان ہے، اس میں دیا ہوا ہے کہ آپ اپنا بچاؤ کر سکتے ہیں۔ ہوم منسٹر صاحب سے میں نے کہا کہ آپ امیر لوگوں کو اپنی رکشا کرنے کے لئے بندوق دیتے ہیں۔ یہ غریب بیچارے مارے جائیں گے، آپ نے لاٹھی دی ہے، تو اس لاٹھی کو چلایئے، آپ مقدمہ کیجئے۔ میرا یہ مطلب تھا۔ انہوں نے کچھ جواب نہیں دیا۔ اس کے بعد

جب تین دن ہو گئے تو اتر بھارتیوں نے مجھے بلایا۔ تب میں اس میں گیا۔۔مداخلت۔۔اخبار میں ہے۔ ایسے لاٹھی لے کر وہ کھڑے ہیں، کہہ رہے ہیں کہ اس لاٹھی کو اتر بھارتیوں کے ساتھ کسی نے جرم کیا تو میں چلاؤں گا۔ دوسرے دن سے جرم چالو ہو گیا، کچھ نہیں کیا۔ میرا بھاشن نہیں ہوا۔ میری دیش بچاؤ ریلی کے سمبندھ میں دو مہینے پہلے شیواجی میدان کے پولیس اسٹیشن میں ایپلی کیشن تھی۔ میرے بال بچے کوئی راجنیتی میں نہیں ہیں۔ سب کے سب برقعہ پہنے وہاں آگے بیٹھے تھے۔ اگر جھگڑے جیسی کوئی بات ہوتی تو کیا میں کسی کو وہاں بلاتا؟ کوئی مطلب ہی نہیں تھا۔ آج برا نہیں لگنا چاہئے لیکن اس سمبندھ میں پوری کی پوری راجنیتی ہو رہی ہے۔ جس طرح سے پنجاب میں بھنڈارا والا پیدا کیا، اسی طرح سے مہاراشٹر میں بال ٹھاکرے کو پیدا کیا گیا۔ مجھے وہ دن اچھی طرح سے یاد ہے۔ عبدالرحمان انتولے صاحب چیف منسٹر تھے اور شیوسینا ختم ہو رہی تھی۔ ۶۰ ایم۔ایل۔سی۔شیوسینا کی بنا دی۔ یہ بات یہاں سے نہیں ہے۔ اس کے بعد جب ممبئی میں شیوسینا مضبوط ہو کر شاسن میں بیٹھ گئی تو دوسری سی ٹیم راج ٹھاکرے کی کھڑی کر دی۔ یہیں سے بات شروع نہیں ہوئی کہ شیوسینا اور بی۔جے۔پی۔کا الائنس ہے۔ ہمارے وہاں کے مکھیہ منتری بال ٹھاکرے کے پاس جاتے ہیں اور بال ٹھاکرے کہہ رہے ہیں کہ پریزیڈینٹ کے الیکشن میں بی۔جے۔پی۔کا ساتھ نہیں دوں گا۔ اگر مہاراشٹر کی کوئی لیڈی اس دیش کی پریزیڈینٹ بنتی ہے تو میں شیوسینا کو چھوڑ کر مراٹھی کارڈ کھیلوں گا اور میں ووٹ دوں گا۔ یہ وہاں سے شروع ہوتا ہے۔ اسی طرح شرد پوار صاحب بیچارے پی۔ایم۔ بننا چاہتے ہیں پر نہیں بن سکتے، بہت مشکل ہے۔۔مداخلت۔۔

شری طارق انور: آپ کی مدد نہیں چاہئے۔۔مداخلت۔۔

شری ابو عاصم اعظمی: میں جانتا ہوں میں نے لکیر دیکھی ہے۔۔مداخلت۔۔وہ بیچارے بال ٹھاکرے کے پاس گئے۔۔مداخلت۔۔

اپ سبھاادھیکش (شری کلراج مشرا): اب وشئے پر آیئے کیوں کہ وقت زیادہ نہیں ہے۔

شری ابو عاصم اعظمی: اسی وشئے پر بول رہا ہوں۔۔مداخلت۔۔بات کس نے شروع کی۔شیوسینا تو ایک

سامپر دائک پارٹی ہے۔۔مداخلت۔۔

اپ سبھاادھیکش (شری کلراج مشرا): آپ وقت کا دھیان رکھ کر بولیں تو زیادہ اچھا ہوگا۔

شری ابوعاصم اعظمی: یہ راشٹروادی کانگریس کے لوگ اپنے آپ کو سیکولر کہتے ہیں اور بال ٹھاکرے کے ساتھ ایک گھنٹے میٹنگ میں کیوں گئے تھے؟ بالا صاحب ٹھاکرے نے کہا کہ میں بی۔جے۔پی۔ کو چھوڑ دوں گا۔۔مداخلت۔۔آپ سن لیجئے۔۔مداخلت۔۔میں بی۔جے۔پی۔کے ساتھ نہیں رہوں گا۔ اگر شرد پوار کو پرائم منسٹر بنایا جاتا ہے، وہ مراٹھی ہے، تو میں ان کو اس کے لئے ووٹ دوں گا۔ یہاں سے راجنیتی شروع ہورہی ہے۔۔مداخلت۔۔یہ بالکل صحیح بات ہے۔۔مداخلت۔۔

شری رودر نرائن پانی: سر، انہوں نے میری طرف دیکھ کر کہا ہے کہ آپ سن لیجئے۔۔مداخلت۔۔میں آپ کے مادھیم سے ان کو سناتا ہوں کہ شرد پوار کے ساتھ ہماری پارٹی کا پہلے گٹھ بندھن ہو چکا ہے۔۔مداخلت۔۔

اپ سبھاادھیکش: پانی جی، آپ بیٹھئے۔۔مداخلت۔۔

شری رودر نرائن پانی: ملائم سنگھ جی ہمارے ساتھ بھی تھے۔۔مداخلت۔۔ Never say 'no' in politics۔۔مداخلت۔۔

اپ سبھاادھیکش: پانی جی، آپ بیٹھئے۔۔مداخلت۔۔

شری ابوعاصم اعظمی: سر، میں بھی اعظم گڑھ سے ممبئی آیا ہوں۔۔مداخلت۔۔

اپ سبھاادھیکش: آپ اپنی بات کہیں اور وقت کی سیما ہے، اس کا بھی دھیان رکھیں۔

شری ابوعاصم اعظمی: ۲۵ بیگھ کی کھیتی گاؤں میں کرتے ہیں لیکن جب بیٹی جوان ہوتی ہے تو صرف گیہوں بیچ کر کوئی بیچارہ گاؤں والا اس کی شادی نہیں کرسکتا۔ اس کے پاس ۱۵ کمرے کا گھر ہے۔ آپ اتر پردیش کے ہیں۔ کھیت کھلیان، نوجوان بچے اور بیوی چھوڑ کر بیچارے گاؤں میں بھینس اور بکری بیچ کر، کرایہ لے کر ممبئی چلے جاتے ہیں، وہاں سڑک پر زندگی گزارتے ہیں۔ جہاں گاؤں میں کتے، بلی نہیں رکھتے، ایسے روم میں رہتے ہیں۔ ممبئی کے لئے ہمارے پرکھوں کے ہاتھوں میں آج بھی گڈھے

پڑے ہوئے ہیں، انہوں نے ہاتھ گاڑیاں کھینچ کر ممبئی کو ممبئی بنایا ہے۔ ممبئی کسی کی جاگیر نہیں ہو سکتی۔ ممبئی میں پہلے مراٹھی ماحول نہیں تھا۔ یہ ممبئی تو انگریزوں کی تھی جو پرتگالیوں نے جہیز میں دی تھی۔ شروع سے، جب سے ممبئی بسی ہے تو اڑیسہ کے لوگ، بہار کے لوگ، اتر پردیش کے لوگ اور راجستھان کے لوگ ممبئی میں گئے۔ انہوں نے ممبئی کو بنایا۔ میں کہنا چاہتا ہوں وہاں ابھی دو لوگ مرے ہیں۔ ایک مراٹھی بھائی مرا ہے اور ایک بے چارہ بہار کا وآچ مین مر گیا۔ اس کا پریوار اورنگ آباد کا پریوار ہے۔ ہم وہاں پر جانے والے ہیں۔ ہم کہنا چاہتے ہیں کہ 302 کا مقدمہ راج ٹھاکرے پر ہونا چاہئے۔ اگر نہیں ہوگا تو میں سمجھوں گا کہ سرکار نے کام نہیں کیا۔ یہ کیا مذاق ہے کہ آپ نے اسے ہیرو بنا دیا اور مجھے دو، دو بار گرفتار کیا گیا جبکہ میں نے کچھ نہیں کیا۔ جب میٹنگ ختم ہوئی، لوگ لہولہان ہیں، لوگ بھاگ رہے ہیں، چوٹالہ جی بھاشن کر رہے ہیں، میں نے ان کو چٹھی دی - وہ بڑے نیتا ہیں - کہ آپ ذرا رک جایئے، مجھے ان کو روکنے دیجئے۔ میرے بھاشن کی شروعات یہیں سے ہوتی ہے، آپ ٹیپ چیک کر لیجئے کہ میں پرشاسن سے ہاتھ جوڑ کر نویدن کرتا ہوں، شاید غلط بھی ہو یا صحیح ہو، لیکن باہر سے یہ نیوز آ رہی ہے کہ چاروں طرف لوگ مارے جا رہے ہیں، آپ ذرا پولیس کو ایکٹو کیجئے اور جو لوگ دنگا کریں، ان کو پکڑئے، ان کو روکئے۔ جو لوگ دنگا کر رہے ہیں ان کو پکڑئے، ان کو روکئے۔ میں نے کوئی بھاشن کیا ہی نہیں، تین گھنٹے سے یہ سب چل رہا تھا۔ وہ کہہ رہے ہیں کہ بھڑکاؤ بھاشن کیا تو یہ ہوا۔ میرا بھاشن تین سے چار گھنٹے کے بعد ہوا ہے، اس کی آپ انکوائری کیجئے۔ سر، میں یہ کہنا چاہتا ہوں کہ یہ جو ممبئی میں ہوا ہے اس کے لئے ایک پارلیمنٹری کمیٹی بنائی جائے اور وہ کمیٹی وہاں جائے۔۔مداخلت۔۔ یہ آپ سن لیجئے۔۔مداخلت۔۔

سر، میں کہہ رہا ہوں کہ ایک پارلیمنٹری کمیٹی بنا دی جائے جس کا چیرمین کانگریس کا نہیں، این۔سی۔پی۔ پارٹی کا نہیں، بلکہ کسی اپوزیشن پارٹی کا ہونا چاہئے۔ اس کمیٹی کو وہاں جانچ کرنے کے لئے بھیجئے اور جن، جن کا نقصان ہوا ہے ان کو پورا پیسہ ملنا چاہئے۔ اس میں دھارا ۳۰۲ کا مقدمہ بھی ہونا چاہئے۔ سر، پولیس یہ انکوائری نہیں کرے گی، کیوں کہ وہاں کے کمشنر صاحب نے جس راج ٹھاکرے

کے نام ایف۔آئی۔آر۔ ہے، اس کو ٹیبل پر بڑی عزت کے ساتھ کھانا کھلا رہے ہیں اور فوٹو کھنچوا رہے ہیں، وہ سب ٹی۔وی۔ پر آیا ہے۔ یہ کیا مذاق ہے۔ وہ لگاتار سنودھان کے خلاف بولے جا رہے ہیں۔۔مداخلت۔۔

اپ سبھاادھیکش (شری کلراج مشرا) : اعظمی صاحب، آپ کا وقت ہوگیا ہے۔

شری ابو عاصم اعظمی: ابھی جو یہاں بیٹھے ہوئے تھے، چلے گئے ہیں یہاں سے، ان کو لگا کہ کہیں ان کا مراٹھی ووٹ بکھر نہ جائے۔۔مداخلت۔۔

اپ سبھاادھیکش: اب آپ سماپت کریے۔

شری ابو عاصم اعظمی: کانگریس پارٹی کے لوگوں کو برا نہیں ماننا چاہئے کیوں کہ یہ کانگریس اور این۔سی۔پی۔ کا کھیل ہے کہ شیوسینا کا ووٹ راج ٹھاکرے اور شیوسینا میں بنٹواؤ اور راجنیتی کرو۔ تو لاشوں پر کھڑے ہوکر راجنیتی کرنا بند کرے۔۔ ...(وقت کی گھنٹی)...

سر، میرے اوپر جو مقدمہ کیا گیا ہے وہ سراسر ناانصافی ہے۔ میں تب نکلا ہوں جب میٹنگ ختم ہوگئی تھی۔ میں نے کچھ نہیں کیا سر۔ میں وہاں سے سیدھا مکھیہ منتری کے گھر گیا۔ یہاں ہوم منسٹر صاحب بیٹھے ہوئے ہیں، ان کو بتانا چاہتا ہوں۔۔مداخلت۔۔

اپ سبھاادھیکش: آپ ادھر دیکھتے ہوئے بولیں اور اب سماپت کریے۔

شری ابو عاصم اعظمی: سر، میں گاڑی لیکر سیدھا چیف منسٹر کے گھر گیا اور وہاں کہا کہ میں ان سے ملنا چاہتا ہوں۔ مکھیہ منتری گھر پر موجود تھے، لیکن کہلوا دیا گیا کہ ائرپورٹ گئے ہوئے ہیں۔ میں نے سوچا کہ ان کی سیکورٹی وہاں گھر کے باہر ہے تو گھر میں ہی ہوں گے۔ پھر نظر آیا کہ وہاں انہوں نے پولیس بلالی اور ڈی۔سی۔پی۔ کو بھی بلالیا۔ پھر میں نے کہلوایا کہ مجھ سے ایک منٹ بات کرلیں۔ لیکن بتایا گیا کہ کل وہ ایک بجے ملیں گے۔ میں نے کہا کہ انٹرکام پر بات کروادیجئے، کیوں کہ ممبئی میں پرابلم ہو رہا ہے جس سے وہ پولیس کو بول دیں گے۔ میں اپنے بچوں کی قسم کھا کر بول رہا ہوں۔ تو کہا گیا کہ نہیں ملیں گے۔ میں نے کہا کہ مجھے ان سے ملنا ہی ہے، چاہے کچھ ہوجائے۔ وہاں مجھے گرفتار کرلیا۔ جہاں

چوراہے بند کئے جاتے ہیں وہاں لے جا کر مجھے رکھ دیا گیا۔ رات کو دو بجے امر سنگھ جی آئے، پتہ نہیں انہوں نے مجھے کس طریقے سے باہر نکالا۔ مجھے وہاں دو، دو بار اریسٹ کیا گیا۔ یہاں اتر بھارتی مارا جا رہا ہے، بہاری مارا جا رہا ہے، سب پر حملہ ہو رہا ہے اور میں ان کے بچاؤ کے لئے اپنی زبان بھی نہیں کھول سکتا۔ یہ کیا ہو رہا ہے جنگل راج چل رہا ہے۔

اپ سبھاادھیکش (شری کلراج مشرا): اب آپ اپنا سماپت کریئے۔

شری ابو عاصم اعظمی: صرف ہیلینسگ کرنے کے لئے مجھے گرفتار کیا جا رہا ہے اور کہا جا رہا ہے کہ ابو عاصم اس کے لئے ذمہ دار ہے۔ میں بالکل ذمہ دار نہیں ہوں۔ ظلم اور ناانصافی کے خلاف آواز لگانا اور مظلوموں کی مدد کرنا کوئی جرم نہیں ہے، سر، اس دیش کے اندر اپنے کو ڈفینس کرنے کا پورا حق ہے۔ اتر بھارتیوں نے اگر ایک بھی لاٹھی کسی کو ماری ہو تو بتایئے۔ کسی ایک بھی اتر بھارتی نے لاٹھی نہیں ماری۔ سر، ویسے لاٹھی مار سکتے ہیں۔ اگر ایسا ہو جاتا ہے تو بہت گڑبڑ ہو جائے گا۔

اپ سبھاادھیکش: اب سماپت کریئے۔

شری ابو عاصم اعظمی: سرکار کو وہاں کے لئے ایک ہیلپ لائن کا انا ؤنس کرنا چاہئے۔ جہاں جہاں لوگ ہیں، ناسک میں، پونا میں جہاں غریب بیچارے آئے ہیں اور اگر ان کو کوئی تکلیف ہو تو وہ لوگ ہیلپ لائن پر فون کریں۔ اس بارے میں پولیس کو سختی کے ساتھ کہہ دینا چاہئے کہ ان کی کمپلینٹس لیں۔ ساتھ ہی وہاں پر نیتاؤں کو جا کر ان کو آشواسن دینا چاہئے۔ سر، ایک بات اور، وہاں ایک ہندو اسکول ہے جس میں چودہ سو بچے تھے، جو سب بھاگ گئے۔ جب ان میں سے ۲۳ بچے کئی دنوں کے بعد آئے تو اس وجہ سے اس اسکول کے پرنسپل کے گھر پر حملہ کر دیا گیا۔ اس ڈر سے اسکول کے وہ بچے بھی چلے گئے جس سے ان کا پورا کا پورا جیون ختم ہو رہا ہے۔ لیکن وہ کہہ رہے ہیں کہ کچھ ہوا ہی نہیں ہے، یہ تو صرف ٹی۔وی۔ پر دکھایا جا رہا ہے۔ میں یہ بھی بتاؤں گا کہ ان میں جو بچیاں ہیں ان کا ریپ ہوا ہے۔۔مداخلت۔۔

شری طارق انور: ان کے ساتھ ریپ ہوا ہے، یہ ثابت کر دیں۔

شری ابو عاصم اعظمی: سر، خدا کی قسم سے میں کہہ رہا ہوں کہ مجھے بتایا ہے کہ اس کا ریپ ہوا ہے۔ میں نے

وہاں کانگریس پارٹی کے جو ایم۔ایل۔اے۔ تھے، ان کو بلایا۔ انہوں نے کہا کہ ہم نہیں آتے ہیں۔ اگر ان کو سیکورٹی ملے گی تو وہ بتائیں گی کہ کون لوگ ریپ میں تھے۔ وہ بھی بات ہے۔ ان سب کی انکوائری ہونی چاہئے۔ سر، میرا مطلب آگ لگانا نہیں ہے۔ وہ غریب لوگ جو گاؤں سے آئے ہیں، جو اپنی روزی روٹی کماتے ہیں، ممبئی میں دودھ بیچتے ہیں، لیکن وہاں مراٹھیوں سے کہا جا رہا ہے کہ اتر پردیش والوں سے دودھ مت لو۔ یہ سب کیا چیز ہے۔ اس لئے میں ہاتھ جوڑ کر نویدن کرنا چاہتا ہوں کہ جو غریب بیچارہ گاؤں سے آیا ہے، اس کی ماں، اس کی بہن ۳۰ تاریخ کو اس کے منی آرڈر کا انتظار کرتی ہے کیوں کہ اس کا بوڑھا باپ گاؤں میں پڑا ہوا ہو۔

اپ سبھاادھیکش (شری کلراج مشرا): آپ کی بات آ گئی۔

شری ابو عاصم اعظمی: اس بات کو اس ہاؤس کو بہت گمبھیرتا سے لینا چاہئے۔ ایک قانون ایسا بنا دیجئے کہ کوئی بھی اس دیش کے اندر، کسی کو ایک سے دوسری اسٹیٹ میں جانے سے روکتا ہے، تو اس کو مکوکا یا پوٹا سے سخت قانون کے تحت سزا ملنی چاہئے، کیوں کہ یہ دیش کے بانٹنے کی بات ہے، دیش کو توڑنے کی بات ہے۔

اپ سبھاادھیکش : ٹھیک ہے، اب آپ سماپت کیجئے۔۔مداخلت۔۔اب آپ سماپت کریں۔شری شترو گھن سنہا جی۔۔مداخلت۔۔

شری ابو عاصم اعظمی: یہ کوئی چھوٹی موٹی بات نہیں ہے۔ ہمارا بھارت ورش...

اپ سبھاادھیکش: میں نے اگلا نام پکار لیا ہے، آپ بیٹھ جائیے۔ اعظمی صاحب آپ بیٹھ جائیے۔

شری ابو عاصم اعظمی: اگر اس کو کسی نے توڑنے کی کوشش کی۔ ہمارے ہوم منسٹر صاحب ضرور اس بات کا آشواسن دیں گے۔

اپ سبھاادھیکش: ٹھیک ہے، انہوں نے سنگیان لے لیا ہے۔

شری ابو عاصم اعظمی: وہاں پر بیچاروں کو سیکورٹی دی جائے، جو بیچارے بھاگ رہے ہیں، ان کو روکا جائے۔ سر، بہت بہت شکریہ۔

''ختم شد''

श्री शत्रुघ्न सिन्हा (बिहार): उपसभाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले तो मैं आपका आभार प्रकट करता हूं और पूरे सदन का आभार प्रकट करता हूं कि सब यहां पर बैठे हुए हैं, सार्थक चर्चा में लगे हुये हैं और मुझे भी सुनना चाह रहे हैं। जब मैं यह कह रहा हूं कि मुझे सुनना चाह रहे हैं, तो साथ-साथ में, यह भी कहना चाहूंगा कि मैं बहुत ही आज चिंतित होकर, ध्यानपूर्वक पूरी चर्चा को सुन रहा था। चर्चा के दौरान कुछ सदस्यों ने मेरे बारे में बहुत अच्छी-अच्छी बातें कहीं। आदरणीय मंडल जी ने, आदरणीय भंडारी जी ने मेरे लिए अच्छी-अच्छी बातें कहीं, इसलिए मैं इनका भी आभार प्रकट करता हूं। जैसा कि मनोहर जोशी जी ने कहा कि इस वक्त संयम की जरूरत है। संयम टाइटिल को अपनाते हुये, मैं समझता हूं कि इस वक्त संक्षेप की भी जरूरत है, बहुत विस्तारपूर्वक कहने की जरूरत नहीं है, क्योंकि बहुत रिपिटिडली बातें हो रही हैं।

[श्री उपसभापति पीठासीन हुए]

महोदय, मैं चंद बातें आपके माध्यम से सदन में रखना चाहूंगा। करीब 40 साल पहले मैं पटना से पुणे, महाराष्ट्र में पहली बार गया, मैं बिहार से पहली बार बाहर निकला और महाराष्ट्र में आया। महाराष्ट में आते ही पहली शाम बिल्कुल भूखे बितानी पड़ी, बिल्कुल भूखे-प्यासे कुछ खाना नहीं, कुछ नहीं। पटना से आने के बाद थोड़ी मेरी आदत बिगड़ी हुयी, रात में 9 बजे के बाद खाने की कोशिश और तब तक सारी दुकानें बंद हो चुकी थीं और मैं सम्भाजी पार्क या किसी पार्क में वहां टहलता रहा और बिल्कुल खाना नहीं मिला। मुझे बहुत दुख हुआ कि कैसी शुरूआत हुयी कि महाराष्ट्र में आया हूं और पहली बार माता-पिता को छोड़कर मैं पहली बार महाराष्ट्र में पहुंचा हूं और खाना नहीं मिला, भूखा रह गया। लगता है मेरी दुआ सुन ली गयी, बाद में उसी महाराष्ट्र में इतना क्या-क्या नहीं मिला, क्या-क्या नहीं हुआ, ऐसा हुआ कि जीवनभर मैंने अच्छे से खाना खाया, अपने परिवार को अच्छे से खाना खिलाया और अपने परिवार के साथ-साथ समाज के विकास में भी और देश के हित में भी बहुत कुछ योगदान देने की कोशिश की और कामयाब रहा, महाराष्ट्र की भूमि में, वह जादू है। महाराष्ट्र में चमत्कार है। मैं आजीवन महाराष्ट्र का आभारी हूं और आभारी रहूंगा।

"तेरी आशिकी से पहले मुझे कौन जानता था,
तेरी याद ने बना दी मेरी जिंदगी फसाना।"

यह महाराष्ट्र का ही जादू है कि आज आपके सामने शत्रुघ्न सिन्हा है, बिहारी बाबू है। यह महाराष्ट्र का जादू है कि लता मंगेशकर है, यह महाराष्ट्र का जादू है जहां जय भवानी, जय शिवानी की उद्घोषणा के बाद, बाल गंगाधर तिलक के मार्ग निर्देशक में ऐसी-ऐसी विभूति जिन्होंने देश और विदेश के लिए बेमिसाल काम किये और जबर्दस्त नाम दिया, शान, शान पे शीन, वह चमक दी, ऐसा आज तक न देखा गया, न सुना गया। अगर नौशाद मियां हैं, तो वह भी महाराष्ट्रियन, लता मंगेशकर हैं, तो वह भी महाराष्ट्रियन, सुनील गावस्कर हैं, तो वह भी महाराष्ट्रियन, अमिताभ बच्चन हैं, तो वह भी महाराष्ट्रियन, अशोक कुमार से लेकर दिलीप कुमार तक, इंस्टीटयुशन काल्ड दिलीप कुमार महाराष्ट्रियन हैं। ये तमाम लोग महाराष्ट्रियन हैं और मैं यह क्यों कह रहा हूं महाराष्ट्रियन, इसलिए कि जन्मभूमि और कर्मभूमि का बराबर का महत्व है। उसी तरह से, जिस तरह से कृष्ण भगवान की नजरों में देविका मैया का और यशोदा मैया का था। अगर बिहार ने मुझे पैदा किया, तो महाराष्ट्र में मेरा पालन-पोषण हुआ। महाराष्ट्र में जो पालन-पोषण हुआ, उस पालन-पोषण का यह नतीजा है कि आज इतनी शान के साथ, इतनी बढ़िया ख्याति, नाम, शौहरत, व्यवसाय, व्यापार, सब कुछ हुआ, जिसके लिए मैं बहुत आभारी हूं। जैसा कि मैंने कहा कि महाराष्ट्र की भूमि में वह जादू है, वह चमत्कार है, तो अच्छे-अच्छे मंदिरों की चौखट पर नहीं है, अच्छी-अच्छी दरगाहों के दर पर नहीं है, तो महाराष्ट्र और विशेषकर मुम्बई की भूमि का जादू है। यही जादू है कि आज भिन्न-भिन्न प्रांतों के लोग, चाहे बिहार हो, उत्तर प्रदेश हो, आन्ध्र प्रदेश हो, तमिलनाडु हो, या पश्चिमी बंगाल हो, ऐसा कोई भी प्रदेश नहीं है, जहां से आज लोग मुम्बई और महाराष्ट्र में अपनी जीविका के लिए न आते हों। वे अपने-अपने परिवार को बढ़ाने के लिए, मान और सम्मान के लिए, व्यवसाय के लिए, व्यापार के लिए और अपने काम के प्रचार के लिए, अपनी सभ्यता और संस्कृति को लेकर आते हैं। जैसा कि अभी अबू आसिम आज़मी जी कह रहे थे कि यह चलता आ रहा है। उनकी बातों में बहुत दर्द है, तो उन्होंने कहा है और उसमें मुझे सच्चाई भी दिखती है, मैं उस पर बाद में आऊंगा। वहां पर इतने लोग आते गए, मैं बिहार और उत्तर भारत कहता हूं, मुझे दुख होता है, बिहार और उत्तर भारत कहना पड़ता है। बिहार और उत्तर भारत का मतलब हुआ कि पूर्वांचल भी हुआ, वनांचल भी हुआ, झारखंड भी हुआ, उत्तरांचल भी, आप जो चाहे कहें। मैं यह नहीं कहता हूं कि बाकी भारत के लोग कम हैं। देश में सबका बड़ा जबर्दस्त योगदान है। कोई किसी से कम नहीं है, सब प्रांत हमारे अपने हैं, हमारे परिवार के हिस्से

हैं। अभी जैसा कि हमारे आदरणीय श्री कलराज मिश्र जी कह रहे थे कि चाहे मुम्बई हो महाराष्ट्र हो या देश का कोई और हिस्सा हो, महल हो या सड़क हो, कॉरपोरेट हाउस हो, ब्रिज हो, रेलवे हो या एयरपोर्ट्स हों, कोई ऐसी जगह नहीं है, जहां पर बिहार और उत्तर भारत का जबर्दस्त योगदान नहीं रहा हो। आज भारत को गौरवमयी बनाने में, विकसित करने में, प्रगतिशील करने में, आर्थिक व्यवस्था की उन्नति में बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड, उत्तराखंड या जिसे उत्तर भारत कह रहे हैं, इनका बहुत जबर्दस्त योगदान है, किसी प्रदेश से कम नहीं है, कुछ प्रदेशों से ज्यादा भी हो सकता है, लेकिन कम नहीं है। यह बात गौर करने की है कि जब ये वहां पर आते हैं तो काम करने आते हैं, काम मांगने आते हैं, अपने-अपने परिवार के पेट पालने आते हैं। इसको महाराष्ट्र कहते क्यों है, कुछ लोग तो कहते हैं कि इसलिए महाराष्ट्र कहते हैं कि महाराष्ट्र के अंदर महाराष्ट्र यानी राष्ट्र के तमाम समुदाय। यह प्रदेश अपने सीने में तमाम प्रांत और तमाम नागरिकों को समाने की क्षमता रखता है, इसलिए इसे महाराष्ट्र कहा जाता है। जैसे राजाओं के राजा को महाराजा कहा जाता है, वैसे ही महाराष्ट्र पूरे राष्ट्र को अपने अंदर समा सकता है, इसीलिए इसे महाराष्ट्र कहा जाता है। महाराष्ट्र के लोग बहुत अच्छे होते हैं। हमें कुछ लोगों की हरकतों की वजह से, कुछ ग्रुप बाजी या कुछ पॉलिटिक्स की वजह से पूरे महाराष्ट्र को नहीं देखना चाहिए। जब वहां पर हमारे लोग आते हैं, तो वे उसी सभ्यता और संस्कृति के तहत आते हैं और वे मिल-जुल कर रहते हैं। वे वहां पर अपना काम करते हैं, अपना व्यवसाय करते हैं और अपनी सभ्यता और संस्कृति का प्रचार करते हैं। वे वहां पर भीख मांगने नहीं आते हैं। हमारे उत्तर भारत का आदमी वहां पर आकर ठेला चलाता है, खोमचा लगाता है, गाड़ी चलाता है, टैक्सी चलाता है, छोटी-छोटी दुकान लगाता है, लघु उद्योग करता है, लेकिन आपने शायद ही किसी उत्तर भारत के लोगों को हाथ फैलाते या भीख मांगते देखा होगा। उनके अंदर बहुत स्वाभिमान है। उत्तर भारत में बहुत जान है, बहुत स्वाभिमान है। जब उन पर प्रहार होता है, तो मैं कहता हूं कि शारीरिक प्रहार से ज्यादा उनके आत्मसम्मान पर प्रहार होता है। मैं बहुत भावुक होकर यह बात कह रहा हूं। यह बात सही नहीं है। यह हमारा परिवार है। वहां पर आज कैसी विभाजन की स्थिति है? उनको क्यों बांटा जा रहा है? आज क्यों अबू आसिम आजमी जी ऐसी बात कर रहे हैं, क्यों उनको इतनी तकलीफ होती है? क्यों उनको यह सब झेलना पड़ता है? क्यों अमर सिंह जी को सदन में यह बात कहनी पड़ रही है? क्यों उनको आंखो-देखा हाल बताना पड़ रहा है? आज क्यों हमारे तारिक अनवर साहब इतनी चिंता व्यक्त कर रहे हैं? क्यों महाराष्ट्र को बांटा जा रहा है? क्यों समाज को विभाजित किया जा रहा है? politics within politics हो रही है, reels and more reels और सब लोग तमाशा देख रहे हैं। मैं इस बात को मानता हूं और जिम्मेदारी के साथ कहना चाहूंगा..**(समय की घंटी)**.. कि कुछ बातें ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: क्या आप हाउस में ...**(व्यवधान)**...

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: जैसा अभी आदरणीय मंडल जी और कुछ और लोगों ने भी कहा कि जाहिर है कि मीडिया को भी अपना रोल समझना चाहिए। मीडिया ने बहुत बातें उछाली हैं, पुराने-पुराने फाइल शॉट्स दिखाए हैं। पुराने शॉट्स को बार-बार चौबीस घंटे दिखाता रहा है। उसने आग लगाने का काम किया है। जब मैंने कहा कि आग लगाने का काम किया है, तो यह घड़ी आग बुझाने की है। यह घड़ी आग में घी डालने की नहीं, अपितु चर्चा सार्थक तभी होगी, जब हम सभी मिलकर आग में घी नहीं, बल्कि जख्मों पर मरहम लगाने का काम करें। इस बात को खत्म करने की कोशिश करें, समाज को जोड़ने का काम करें, समाज को तोड़ने का काम नहीं करें। आज पूरे लोग शंका की दृष्टि से देख रहे हैं। आज लोग मुबई आने में घबरा रहे हैं। कई लोगों को वह छोड़ना पड़ा, कई लोगों को निकाल दिया गया। सभी ने नहीं किया, कुछ लोगों ने किया, लेकिन सबसे बड़ी या कुछ हद तक बुरी बात यह है – सर, मैं बहुत आदर-सम्मान के साथ, होम मिनिस्टर साहब सामने बैठे हुए हैं, उनसे कहना चाहूंगा कि उन बातों को न दोहराते हुए कि क्या हुआ, क्या नहीं हुआ, कहां-कहां क्या हुआ, कितना सच, कितना गलत और कितना एग्जेजरेटिंग था, आप तो खुद महाराष्ट्र के हैं, आप एक विभूति हैं और मैं आपकी बहुत कद्र करता हूं, आप साईं भक्त भी हैं, इसलिए मैं आपकी और भी कद्र करता हूं, परंतु यह बात समझने की है कि सरकार का उस समय इस तहर से बैठ जाना या इस तरह से शांत होकर एक तरह से बिल में घुस जाना अच्छा नहीं है। आज इतना डैमेज हुआ है, इसके दूरगामी परिणाम हुए हैं। इन्हीं बातों की वजह से आज बिहार की जो खबर आई, जो गलत है, मैं उसे नहीं मानता हूं, उस पर विश्वास नहीं करता हूं। बिहार में महराष्ट्रियन उत्तर भारत में महाराष्ट्रियन, वह भी है जो वहां काम कर रहा है। उत्तर भारत, बिहार या किसी और प्रांत के लोग महाराष्ट्र में उतने ही महाराष्ट्रियन हैं, जितने वहां के लोग हैं। अभी भूमि पुत्र की बात कही। मनोहर जोशी जी ने भूमि पुत्र की बात कही। मैं कहता हूं कि ठीक है, लेकिन उससे पहले भूमि पुत्र की परिभाषा तय होनी चाहिए। भूमि पुत्र कौन है? क्या मैं महाराष्ट्र का भूमि पुत्र हूं? मैं वहां पर चालीस साल से हूं। मेरी पत्नी महाराष्ट्र की हैं। मेरे बच्चे लव, कुश और सोनाक्षी जब पैदा हुए,

वे महाराष्ट्र में हुए। ऐसे में उनकी नागरिकता महाराष्ट्र की है। भूमि पुत्र की परिभाषा क्या है? आधार होना चाहिए? अबू आसिम साहब ने ठीक कहा कि सर्व दलीय कमेटी या एक पार्टी इन बातों पर चिंता करने के लिए सामने जाए। ऑन दि स्पॉट सरकार ने जिस वक्त काम किया, जो काम नहीं किया, उसका ऐसा दूरगामी परिणाम हुआ कि हमारे बिहार में इतने अच्छे आदमी, गवर्नर, महाराष्ट्र के, हमारे सदन के ही सीनियर मैम्बर थे, उनके बारे में ऐसी बात क्यों छपी? छपी ही क्यों? उनका बराबर का हक है, हमारे लिए बहुत गौरव की बात है, बहुत फख्र की बात है कि वे बिहार में हमारे राज्यपाल हैं। गवई साहब हमारे राज्यपाल हैं, यह बहुत गर्व की बात है। ऐसी बात क्यों हुई? अगर ऐसी बात हो रही है, थोड़ी देर पहले भंडारी जी ने भी कहा था कि इसका दूरगामी परिणाम होगा। आज महाराष्ट्र में है। शायद कुछ लोग यह चाहते भी हैं। आज कुछ लोग वोट बैंक की पॉलिसी के लिए चाहते हैं कि अलग-अलग करो, बांटो। वोट करो। हमारे उत्तर भारत का वोट नहीं मिल रहा है तो उस वोट को अपने हाथ में कर लो। यह तो ऐसा लगता है कि एक पार्टी दूसरी पार्टी के साथ मिलकर तीसरी पार्टी के खिलाफ अपना वोट बैंक तैयार करने के लिए करे और समाज तमाशा देखता रहे। लेकिन इसका परिणाम क्या होगा? यह पहले भी हुआ है। पहले तमिलनाडु में हुआ था, पहले महाराष्ट्र में हुआ था। एक बार नारा लगा था पुंगी बजाओ, लुंगी हटाओ। यह सब क्या हो रहा है? जो हो गया, सो हो गया। आजादी को साठ साल हुए। बिहार में उत्तर प्रदेश में कहीं इसका परिणाम उलटा हुआ तो क्या हर जगह लोग मराठियों की पहचान करेंगे या बाकी प्रदेशों में भी लोग बिहार या उत्तर भारत की पहचान करेंगे? क्या उसके आधार पर काम और सजा देंगे? सर, मैं आपके जरिए आदरणीय गृह मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि सरकार उस वक्त बैठी रही। वह वक्त ही सही वक्त था कोई एक्शन लेने का। आपके यहां भी बार-बार मैसेज आ रहे थे, संदेश आ रहे थे वाया मीडिया से। मैं बहुत अदब से कहना चाहूंगा कि आप बहुत अच्छे हैं - हालांकि यह मौका नहीं है, मैं पर्सनल बात नहीं कहना चाह रहा था, लेकिन रिकॉर्ड पर आ रहा है, इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि कई बार संदेश जाता है, लेकिन संदेश का एक्नॉलेजमेंट तक नहीं होता है। मुझ जैसा एक सो कॉल्ड सेलिब्रिटी, एक मशहूर आदमी, आपके अपने सदन का, जो आपका संरक्षण चाहता है, उसकी चिट्ठियां गई हैं, परंतु आपके होम सेक्रेट्री ने उसे एक्नॉलेज तक नहीं किया है। सर, चाहे आप defend करें, मैं जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं। आप जानते हैं, you look at me, आप जानते हैं कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं।

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I object to this, Sir. (*Interruptions*) I object to this, Sir. (*Interruptions*) It is not necessary for him to raise this issue. (*Interruptions*) If he raise this issue, then, he shall have to hear my reply also. No Member is entitled to write to the Government servant. He can write to me. And, whatever letters he has written to me, I have replied to them.

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: सर, मैंने आपके बारे में कहा ही नहीं है।

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: You are not expected to write to a Government servant.

SHRI S.S. AHLUWALIA: Sir, just to make the records straight, just now, the Home Minister said, "No Member of Parliament is allowed to write a letter to Government servant. Where is it written? Where is it written, I want to know. I know that there is a notification of Cabinet Secretary (*Interruptions*) that every letter written by a Member of Parliament to any officer should be honoured by the officer. आप ऐसी बात मत बोलिए, गुमराह मत करिए। ...(व्यवधान)...

श्री उपसभापति: शत्रुघ्न सिन्हा जी, अब समय ज्यादा हो गया है, आप कृपया conclude कीजिए।

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: सर, मैं एक बात कहना चाहूंगा कि जब मैं कोई बात कह रहा हूं, तो जिम्मेदारी के साथ कह रहा हूं। ...(व्यवधान)... गृह मंत्री जी को तो पता होगा, अब अगली बार शायद ये मंत्री हों या न हों, लेकिन पिछली बार मैं मंत्री था और जब मैं मंत्री था, तो मैं पूरी जिम्मेदारी से कह रहा हूं ...(व्यवधान)...

श्री शिवराज वी. पाटिल: इसके बाद भी आपने नहीं सीखा, तो मैं क्या करूं?

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: सेक्रेटरी को लिखने का क्या मतलब है? क्या हर बार कोई आदमी मिनिस्टर को तंग करेगा? ...(**व्यवधान**)... जुल्म और ज्यादती हो और आपके होम सेक्रेटरी ऐसे हैं कि जो जवाब नहीं देतें हैं, acknowledge भी नहीं करते हैं ...(**व्यवधान**)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: I would be happy if everybody writes to the Minister. (*Interruptions*)

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: सर, आप unnecessarily defend कर रहे हैं ...(**व्यवधान**)...

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Please do not bring your personal matters while discussing here. (*Interruptions*)

SHRI SHATRUGHAN SINHA: Sir, don't order me like that. You are a Home Minister on the last wicket. अभी बाकी बात खत्म हो गई है। अभी मैं जो आपके सेक्रेटरी की बात कर रहा हूं, तो आपको मेरी खातिर, चूंकि मैं आपकी इतनी इज्जत करता हूं, आपको मानना चाहिए कि यह आदमी असत्य नहीं कह रहा है, यह आदमी सत्य कह रहा है। लेकिन आप उन्हें defend कर रहे हैं और आप यह नही समझ रहे हैं कि मैं अपनी जिम्मेदारी से कह रहा हूं।...(**व्यवधान**)...

श्री शिवराज वी. पाटिल: मैंने आपके सारे पत्रों के उत्तर दिये हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: सर, मेरी बात यह है कि यह हुआ है और महाराष्ट्र सरकार चुपचाप रही है, अब क्या उम्मीद कर सकता हूं, जब होम मिनिस्टर का यह response है?

श्री उपसभापति: शत्रुघ्न जी, अब इसे छोड़िए।

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: खोमचे वाले, टैक्सी वाले पिट रहे हैं, वे क्या करेंगे? हम लोग निराश और हताश हो रहे हैं। यह जो हम बात कर रहे हैं, उस बात का जवाब पहले दे दिया। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि इस बीच पॉलिटिक्स में बहुत लोगों की मिलीभगत है। बहुत जुल्म हुआ है गरीबों पर, खोमचे वालों पर, ठेले वालों पर, टैक्सी वालों पर। मैं इस सदन में एक और चीज कहना चाहूंगा, बाकी लोगों को भी कहना चाहता हूं, मैं अपने बाकी लीडर्स को और अन्य दलों के लीडर्स को भी कहना चाहता हूं, जैसा मैंने कहा कि ज़ख्म में मरहम लगाने की जरूरत है। बहुत ज्यादा provocative बातें न हों। बहुत ज्यादा provocative बातें होंगी, तो भुगतान भुगतना पड़ेगा फिर उन गरीबों को। हम लोग तो यहां बैठे रहेंगे। होम मिनिस्टर हममें से किसी को सिक्योरिटी देंगे, किसी को सिक्योरिटी नहीं देंगे, उनकी मर्जी पर होगा, लेकिन बाकी उन लोगों का कौन सिक्योरिटी देगा? उनको तो मिलेगा ही नहीं। इसलिए ऐसा न हो। मैं चाहूंगा कि ज़ख्मों पर मरहम लगाएं, इस मामले को ठीक करें। इस समय sanity की जरूरत है, इस वक्त maturity की जरूरत है, इस वक्त restrain की जरूरत है। मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि पूरे महाराष्ट्र में जो हो रहा है और जो हुआ है या किया गया है या करवाया गया है, उस पर मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि:

लम्हे-लम्हे की सियासत पे नज़र रखते हैं।
हमसे दीवाने भी दुनिया की ख़बर रखते हैं।।
इतने नादां भी नहीं हम कि भटक कर रह जाएं।
कोई मंज़िल न सही राहगुज़र रखते हैं।।
मार ही डाले जो बेमौत ये दुनिया वो है।
हम जो जिन्दा हैं तो जीने का हुनर रखते हैं।।
इस क़दर हमसे तग़ाफुल भी न बरतो साहेब।
Don't push us against the wall.
इस क़दर हमसे तग़ाफुल भी न बरतो साहेब।
हम भी कुछ अपनी दुआओं में असर रखते हैं।

आपको जो करना है, कीजिए। हमारी दुआएं हैं। हमारी दुआओं में बहुत ताकत है और असर है। मैं समझता हूं कि न सिर्फ इसका रास्ता निकलेगा, बल्कि समाधान होगा और यह चर्चा सार्थक होगी। सर, with due respect, हमने होम मिनिस्टर साहब का रवैया देख लिया है और मैं समझ सकता हूं कि उनका क्या जवाब आने वाला है। इसलिए मैं आपसे आज्ञा लेकर यहां से इजाजत लेता हूं।

SHRI SHIVRAJ V. PATIL: Is this the way? You make your speech and disappear. (*Interruptions*)

SHRI SHATRUGHAN SINHA: You have tried to insult me. (*Interruptions*) Enough is enough. (*Interruptions*)

MR. DEPUTY CHAIRMAN: No, no. (*Interruptions*)

श्री शत्रुघ्न सिन्हा: सर, मैं आपकी बात मानूंगा। धन्यवाद। ...(**व्यवधान**)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Hon. Members, all the political parties have participated in this discussion. More than one Member from each party have spoken. It is a two-and-a-half hours discussion. Now, we have already completed three-and-a-half hours in this. It is still going on. Somehow, names were sent and names were taken. Actually, that is not the practice. ...(*Interruptions*)...

श्री राजनीति प्रसाद: सर, मैं भी बोलूंगा।

श्री उपसभापति: देखिए, आप की पार्टी से दो वक्ता बोल चुके हैं और अब आप भी बोलना चाहते हैं ...(**व्यवधान**)... ऐसे तो सभी मैम्बर्स बोलना चाहते हैं ...(**व्यवधान**)...

श्री राजनीति प्रसाद: सर, बस दो मिनट दे दीजिए।

श्री उपसभापति: सभी लोग दो मिनट ही कहते हैं, लेकिन दो मिनट में खत्म नहीं करते ...(**व्यवधान**)...

श्री राजनीति प्रसाद: सर, आप घड़ी पर देखिएगा, मैं केवल दो मिनट में ही अपनी बात समाप्त कर दूंगा ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: देखिए, मेहरबानी से आप ...(**व्यवधान**)...

श्री एस॰ एस॰ अहलुवालिया: सर आप रिप्लाई करवाइए।

श्री उपसभापति: मैं भी यही कह रहा हूं ...(**व्यवधान**)... देखिए, लोगों के सब्र की भी कुछ सीमा है, अब अगर हर मैम्बर इस डिस्कशन में पार्टिसिपेट करेगा, तो यह कैसे पॉसिबल होगा ...(**व्यवधान**)... How is it possible? ...(*Interruptions*)...

श्री राम नारायण साहू (उत्तर प्रदेश): सर, हमें भी आज ही रात लखनऊ जाना है।

श्री उपसभापति: ठीक है, जाना है ...(**व्यवधान**)... देखिए, इससे क्या हासिल होगा? ...(**व्यवधान**)... Now, Dr. Barun Mukherjee.

DR. BARUN MUKHERJEE (West Bengal): Thank you, Sir. I rise to talk with agony and with great concern on this particular issue because this is one such issue which threatens our national integrity. It has happened now in Maharashtra. Previously, it happened in Assam. And, now, some people are even saying that one Maharashtrian Government is there in a Hindi-speaking State. It is like an infectious disease and it will spread from one place to another. So, on behalf of our party, I strongly condemn this type of narrow regionalism.

I would like to remind the hon. Members once more that during the Freedom Movement, long before, as early as in 1938, Negtaji Subhas Chandra Bose in his historical Haripurra Speech told that there are menaces in our political and social history, that is, communalism, casteism and regionalism. We have seen that happening many times, in many places. So, this is one such instance where we are, again, facing all these things.

As a son of Bengal, I know the agonies and pains of division of a country. We have suffered it and we have experienced it. At the same time, as a son of Bengal I say that here is a place where people from all the States of the country are working. They are staying there for various reasons. In the giant jute mills, 10,000 to 14,000 people are working there. Mostly the Hindi speaking people are working there. Even people from South India are also there. We have great respect for Maharastra. During the Freedom Movement we used to say, Lal, Bal, and Pal. They were the three giants of the Freedom Movement. Shri Lala Lajpat Rai was from Punjab, Shri Bal Gangadhar Tilak was from Maharashtra and Shri Bipin Chandra Pal was from Bengal. We used to pay our respect to them. So, we hope that this parochialism is not there. It was the duty of the State Government, at least, I should say, to nip the problem in the bud. But, unfortunately, that has not been done. The Union Home Minister has taken steps at the right moment. We read in the newspapers that he warned the State Government to take action in this respect.

So, before concluding, I would like to say that only various Government actions and police actions should be taken, but, creating some sort of awareness among the people is absolutely necessary. Some leading sociologists even say that more inter-caste marriages or inter-State marriages will develop affinity between the people. So, that is the main thing...*(Interruption)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Okay, okay.

DR. BARUN MUKHERJEE: We all belong to one country. Let us keep continuing it. Thank you.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri D. Raja. Please don't take more than three minutes. I am not going to allow more than that.

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Sir, I would like to formally state the position of my Party on that issue. What happended in Maharashtra or what is happening today should not have happended. Earlier, there were attacks against Tamil and South Indians, and now, we find attacks against the North Indians. What is happening there should not have happened. The greatness of our country lies in the tremendous diversity it has got. Through this diversity only, our country is progressing. Having said this, I must say that we should address the root cause of the problem. Over these years, the policies pursued by the Governments at Delhi as well as in States have created a situation where you find the urban-rural divide and the rich-poor divide growing at an alarming proportion. So, people migrate from palce to palce for livelihood to seek jobs and other things. There is our Constitution which provides that the citizens can move from one place to another and they can live there and they can seek jobs there. It is our Constitution. Nobody should act against this spirit of the Constitution. Nobody should curtail the freedom of our people migrating from place to place. But there are parochial forces, regional forces which are taking advantage. They are desperate. They have no other agenda, or, issue. They pick up such issues and target vulnerable sections. They are not only going for livelihood, but they also build assets there. Wherever they go, they build these cities. It happens in the case of Mumbai, it happens in the case of Chennai, it happens in the

case of Bangalore or any other city you take, for instance. These are all built by people together, collectively. That is where we should see the strength of our nation. After all, Maharashtra is a pride of the nation. Maharashtra is a place where we had the great legends like Mahatma Phule, Dr. Ambedkar and Comrade Dange. Mumbai was one of the pioneer places where the communist movement emerged. I must say it. The entire working class movement began there; the trade union movement began there. That is why Maharashtra is a pride for us and Maharashtra should not witness such attacks against our own fellow citizens. Whoever does, they cannot take law into their hands. The Central Government and the State Government must take appropriate action whenever such parochial elements play havoc. Thank you.

श्री राम नारायण साहू: महोदय, मैं अनुरोध करूँगा कि बहुत से लोगों के विचार आए हैं, जो महाराष्ट्र में दंगे हुए या जो उत्तर भारतीयों को परेशान किया गया। मुम्बई के अन्दर सभी प्रदेशों के लोग बसते हैं। वहाँ केवल उत्तर भारत और बिहार के ही नहीं, सभी लोग बसते हैं, लेकिन उसमें मुख्य भूमिका उत्तर प्रदेश और बिहार की है। अगर महाराष्ट्र के अन्दर देखा जाए तो वहाँ जो उद्योग हैं, उनमें से अगर टाटा को निकाल दिया जाए, तो जितने बड़े उद्योगपति हैं, सब महाराष्ट्र के बाहर के हैं और वहाँ काम करने वाले लोग भी महाराष्ट्र से ज्यादा बाहर के लोग हैं। इस तरीके से जो आज चल रहा है, उसमें महाराष्ट्र के लोग महाराष्ट्र को नहीं चला रहे हैं, बल्कि महाराष्ट्र को चलाने वाले महाराष्ट्र के बाहर के लोग हैं। इस तरीके का बयान देकर और वहां की गवर्नमेंट का जो रोल रहा, महाराष्ट्र गवर्नमेंट का आशीर्वाद उन लोगों को प्राप्त था जिन लोगों ने वहां पर दंगा फैलाया। दोनों तरफ के लोग, चाहे बाएं तरफ के लोग हों, चाहे दाएं तरफ के लोग हों, इन लोगों ने लीपा-पोती की और महाराष्ट्र के गृह मंत्री बोलते हैं कि साहब, अभी जांच करवा रहे हैं, इंक्वायरी कर रहे हैं। वहां लोग मारे जा रहे हैं, पीटे जा रहे हैं और वह कह रहे हैं कि साहब, इंक्वायरी करा रहे हैं। तो इसके अंदर बहुत खुलकर राजनीति हुई है और उसके कारण समाजवादी पार्टी को नुकसान पहुंचा है।

उपसभापति महोदय, मैं आप को बतलाना चाहूंगा कि लता मंगेशकर जी हों, चाहे नौशाद अली साहब हों, वह उत्तर प्रदेश लखनऊ के हैं – दोनों ने मिलकर पूरे भारत को जो संगीत दिया और पूरे भारत से बाहर भी दिया। हिंदी को फैलाने में उत्तर प्रदेश ही नहीं, पूरे भारत में जो इन का योगदान रहा, वह किसी का नहीं है। हम सब लोग एक हैं, लेकिन इन लोगों ने सस्ती राजनीति की। अभी आस्ट्रेलिया के अंदर जो भारत का झंडा लहराया गया, वह महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश ने मिलकर लहराया – वह चाहे सचिन तेंदुलकर हों और चाहे प्रवीण कुमार हों। महोदय, उन्होंने कहा कि हम को शिव सेना से कोई मतलब नहीं। उद्धव ठाकरे ने बयान दिया है कि मुंबई एअरपोर्ट पर जो काम हो रहा है, उसमें उत्तर भारतीयों को निकाल दिया जाए, हटा दिया जाए, नहीं तो हम पैक कर के भेज देंगे। अगर वह पैक कर के भेज देंगे तो जो सारे भारत के अंदर, हर प्रांत के अंदर महाराष्ट्रियंस हैं, उनका क्या किया जाए?

श्री उपसभापति: श्री राजनीति प्रसाद, आप बोलिए।

श्री राम नारायण साहू: जो वहां महाराष्ट्रियंस रह रहे हैं, उनका क्या किया जाए? क्या उनको पैक कर के महाराष्ट्र भेजा जाए? इस तरह की बातें...

श्री उपसभापति: साहू जी, आप conclude कीजिए।

श्री राम नारायण साहू: आपको मालूम है कि कितने प्रधान मंत्री उत्तर भारत से आए हैं? इसलिए उत्तर प्रदेश का जो योगदान रहा है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: राजनीति प्रसाद जी, आप शुरू कीजिए। ...(**व्यवधान**)... Nothing will go on record. ...(*Interruptions*)... राजनीति प्रसाद जी, आप बोलिए। साहू जी, आप वायदा कर के गए थे अब वायदा निभाओं।

श्री राम नारयाण साहू:*

श्री उपसभापति: श्री राजनीति प्रसाद। आपने भी वायदा किया है कि दो मिनट बोलूंगा।

*Not recorded.

श्री राजनीति प्रसाद: उपसभापति जी, दो मिनट में खत्म कर दूंगा। मैं बिहार से आता हूं और मुझे फख्र है कि 1964 से लेकर लगातार 1980 तक हमारे यहां मधु लिमये जी बिहार से चुनाव लड़े हैं। वह महाराष्ट्र के थे और पुणे सतारा के रहने वाले थे। आज भी हम लोग बिहार में, पटना में दो बार जयंती मनाते हैं—एक बार जयंती मनाते हैं और एक बार उनकी श्रद्धांजति मनाते हैं। सन् 64 में जब वह आए थे तो हमको यह पता नहीं था कि महाराष्ट्र क्या होता है और पुणे क्या होता है। जो पार्लियामेंट में बिहार के आदमी थे, उनको हरवाया और मधु लिमये को जितवाया। मुंगेर से जितवाया, बांका से जितवाया और एक-दो वोट से नहीं, लाखों वोटों से जितवाया। हमारे जॉर्ज फर्नांडिस साहब एक बार पाटिल को हराकर महाराष्ट्र से जीते हैं, बाकी केवल बिहार से मुजफ्फरपुर से जीते हैं और लगातार जीते हैं। अभी भी वह उधर से हैं। तो हमारा मतलब देश को बांटना नहीं है, हम महाराष्ट्र को देश में ही समझते हैं, हिंदुस्तान का ही हिस्सा समझते हैं।

सर, दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि हम लोगों ने बिहार विधान सभा में ऐसी कोई बात नहीं की। एम॰एल॰ए॰ लोगों ने कहा कि महाराष्ट्र में जो घटना घट रही है, उसके बारे में जिक्र होना चाहिए। इसका दूसरा इंटरप्रिटेशन किया गया। यह बात गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए। सर, इसलिए जो घटनाएं घट रही हैं...

श्री उपसभापति: आप ग्रेस टाइम में बोल रहे हैं, जल्दी खत्म कीजिए।

श्री राजनीति प्रसाद: मैं उनको अच्छा नहीं मानता और उनकी निंदा करता हूं। मेरी राय में इस तरह की घटनाएं नहीं घटनी चाहिए। महोदय, यह जो घटना घटी है, चाहे वह महाराष्ट्र में हो, चाहे आसाम में हो या चाहे और कहीं हो, दिल्ली में हो, अगर ऐसी घटना घटती है तो उसके लिए कोई आदमी या कोई अधिकारी जो ऐसी घटना की शुरूआत करता है, उसे हम लोगों को पकड़कर बंद करना चाहिए। यह मेरी राय है, गृह मंत्री जी से निवेदन है।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Tapan Sen. You must follow Shri Rajnithi Prasad's example.

SHRI TAPAN KUMAR SEN (West Bengal) : Mr. Deputy Chairman Sir, I join my colleagues in the House in condemning the incidents that have taken place in Maharashtra of attack against migrant people going to that State for their bread and butter. I share their emotions. I am not going into the details; they have already been talked about. I just want to say, as I understand, that this is the handiwork of the forces who play divisive politics in the name of caste, religion, region and so on and so forth. They get the opportunity to play divisive politics in a situaiton of extreme vulnerability and restlessness in the society because of hunger, poverty and joblessness. Particularly, the search for job makes a man made and desperate enough and results in this kind of inter-State migration. Perhaps this is also a test of the degree of inclusiveness in our economic exercise that is taking place. In such a situaiton, such things and bound to happen and we will have to guard and fight together against that kind of political opportunism. I would like to tell the hon. Home Minister that what is particularly noticed here is a rabid failure of governance immediately after the incident took place and that inaction and non-responsiveness of the local government has exposed some kind of an indulgent attitude, may be out of some political opportunism. That needs to be explained. No doubt, the Government of India has intervened and tried to set things right, but the initial non-responsiveness is a serious things. We need to take that into account.

The second, and the most important, point is that this mobility and inter-State migration would further increase particularly in the kind of economic situation that is prevailing. The Inter-State Migrant Workers Act is the most violated statue as on date in our country. In such a situation, unless special attention is given to see to it that the Inter-state Migrant Workers Act is properly implemented, I think the problem would multiply in the days to come. The Government needs to look into that aspect too.

श्री उपसभापति: माननीय मंत्री जी।

श्री रूद्रनारायण पाणि: सर, मुझे भी बोलना है।

श्री उपसभापतिः मैं आपको नेक्स्ट टाइम टाइम दूंगा, नेक्स्ट सब्जेक्ट पर। ...(**व्यवधान**)...

श्री रूद्रनारायण पाणिः सर, यह तो अन्याय है।

श्री उपसभापतिः नहीं, अन्याय नहीं है, नेक्स्ट टाइम दूंगा।

श्री शिवराज वी॰ पाटिलः श्रीमन्, बहुत सारे सम्माननीय सदस्यों ने अपनी बात यहां पर कही, बहुत अच्छे ढंग से कही। एक-दो चीजों को बाजू को हटाएं, तो जो कुछ भी उन्होंने कहा, वह बड़ी गंभीरता से, बड़ी जिम्मेदारी से, दूर की सोच के, सब लोगों का सोच कर कहा। इसलिए उनके प्रति आभार व्यक्त करना मैं जरूरी मानता हूँ।

श्रीमन्, उन्होंने क्या कहा? बहुत सारे सदस्यों ने जो बात कही और जो बात सबके कहने में उभर कर आ रही है, वह यह है कि हम इस देश के रहने वाले लोग छोटे विचार के नहीं है, बड़े विचार के है। हमारे यहां संसद में एक जगह पर लिखा हुआ है कि जो छोटे मन वाला होता है, वह कहता है कि यह मेरी चीज है, यह तुम्हारी चीज है और जो बड़े मन वाला होता है, वह कहता है कि यह सारा विश्व मेरा कुटुम्ब है, पूरे विश्व को ही वह कुटुम्ब मान कर चलता है। इसमें सारे भारत के लोगों को एक कुटुम्ब का सदस्य मानना, उसके विचार का एक हिस्सा है। इस प्रकार का दृष्टिकोण है और ऐसा दृष्टिकोण केवल महाराष्ट्र में पाया जाता है, ऐसा बहुत लोगों ने कहा। वह केवल महाराष्ट्र में नहीं पाया जाता है, ऐसा दृष्टिकोण बिहार में पाया जाता है, उत्तर प्रदेश में पाया जाता है पंजाब में पाया जाता हे, कर्नाटक में पाया जाता है, राजस्थान में पाया जाता है, हमारे देश के सारे हिस्सों में इस प्रकार का दृष्टिकोण पाया जाता है। और वही हमारी शक्ति है, वही हमारी तावत है, वही एक चीज़ है जो हमको एक रखती है। इसको ध्यान में रखकर ही हमको सारी चीजें करनी जरूरी हो जाती हैं।

इसके साथ-साथ एक दूसरी बात जो सारे लोगों के कहने से उभरकर आई, वह यह है कि महाराष्ट्र में जो कुछ हुआ, उसके लिए हम सब लोग शर्मिंदा हैं, किसी को भी वह चीज अच्छी नहीं लगती और सब लोगों ने कहा कि हम उसकी निन्दा करते हैं और करनी भी चाहिए, मगर ऐसी बात, जो महाराष्ट्र में हुई, आज हुई, कल हुई, आने वाले कल को नहीं होनी चाहिए, बाद में नहीं होनी चाहिए और उसके लिए जो कदम उठाए जाने चाहिए, वे कदम जरूर प्रान्त की सरकार से, केन्द्र की सरकार से उठाए जाएंगे। मैं तो यह कहूंगा कि यह कहीं भी नहीं होना चाहिए, किसी भी प्रान्त में नहीं होना चाहिए, सिर्फ महाराष्ट्र में ही नहीं, दूसरे प्रान्तों में भी नहीं होना चाहिए। आज हम केवल महाराष्ट्र की चर्चा कर रहे हैं, ऐसी चीजें दूसरी जगह भी हुई हैं, वहां पर भी नहीं होनी चाहिए, वहां पर उनको रोकना चाहिए और जब तक हम यह नहीं करेंगे, तब तक हमारा जो उद्देश्य है वह पूरा नहीं हो सकता।

हमारे संविधान में बताया गया है कि कोई भी आदमी, कोई भी नागरिक, कोई भी शहरी, हमारे देश का कोई भी सिटीजन किसी भी जगह पर जा सकता है, किसी भी जगह पर रह सकता है और जो चाहे वहां पर वह काम कर सकता है। यह हमारे संविधान में लिखा है। जोशी साहब ने कहा कि उसका जो प्रोविजो है, उसके अंदर कहा गया है कि शायद इसको रोकने के लिए कोई कानून प्रांत की सरकार बनाना चाहती है तो बना सकती हैं। मैं बड़ी नम्रता के साथ कहना चाहता हूं कि आर्टिकल 19 का जो प्रोविजो है, जो कहता है। कि कोई आदमी कहीं जा रहा है तो उसको रोका जा सकता है, वह किसलिए बनाया गया है। अगर कहीं दुर्घटना हुई है और कोई अगर वहां जाना चाहता है और वहां जाने से तकलीफ हो सकती है, तो उसको रोका जा सकता है, अगर कहीं बीमारी फैली हुई है और वहां कोई जाना चाहता है, तो उसको रोक सकते हैं या यह जो कानून है, जो ट्राइबल लोग हैं, जो पहाड़ी इलाके में, झाड़ी इलाके में रहने वाले लोग हैं, उनकी जमीन और जायदाद की रक्षा करने के लिए कहा गया है कि कोई आदमी कहीं जाकर अगर उनकी जमीन लेना चाहता है और वह जमीन न ले, इसके लिए अगर कोई कानून बनाया गया है तो उस कानून को अनकांस्टिट्यूशनल नहीं माना जाएगा, इसका यही अर्थ है, इससे दूसरा अर्थ कोई नहीं है। हमारा संविधान यह कहता है, हमारा कांस्टिट्यूशन यह कहता है कि कोई भी कहीं भी जा सकता है, कोई भी कहीं भी रह सकता है, कोई कहीं कोई भी काम कर सकता है, यह अहम बात है और इसको हम भूल नहीं सकते, इसको हमको निभाना पड़ेगा। इसको प्रांत की सरकार को निभाना पड़ेगा, अगर वह नहीं निभाएगी तो हम निभाएंगे, केन्द्र की सरकार निभाएगी, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती अगर हम नहीं करते हैं तो ज्यूडिश्यरी के लोग उसको करते हैं, वे कहते हैं कि आप किसी को रोक नहीं सकते कहीं जाने में, कोई धंधा करने से रोक नहीं सकते, कोई जमीन खरीदने से रोक नहीं सकते, लेकिन वहां तक नौबत नहीं आएगी, हम करेंगे उसको। यह बात अहम

तौर पर यहां पर उभरकर आई है और यह बहुत अच्छी बात है और इसको हमको ध्यान में रखना है। इतना बड़ा समाज है, इसके अंदर कुछ छोटे मन से विचार करने वाले लोग होते हैं, वे कुछ उद्देश्य मन में रखकर कोई बात करते हैं और उस वजह से यह चीज होती है। कुछ माननीय सदस्यों ने अपनी बातें यहां पर रखी हैं और एक-एक सदस्य के वक्तव्य में से कुछ ऐसी बातें निकलकर आई हैं, जो मेरी दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं। डा॰ मुरली मनोहर जोशी जी ने कहा था, बड़ी अच्छी बात कही उन्होंने। उन्होंने कहा कि धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, प्रान्त के नाम पर, भाषा के नाम पर छोटे मन से लोग दंगा करते हैं। धर्म के नाम पर दंगा करते हैं, जाति के नाम पर दंगा करते हैं, प्रांत के नाम पर दंगा करते हैं, यह हम देख रहे हैं और भाषा के नाम पर दंगा करते हैं, यह भी हम देख रहे हैं। बहुत अच्छी बात कही उन्होंने.....। यही हमारा दृष्टिकोण होना चाहिए कि धर्म के नाम पर, जाति के नाम पर, प्रांत के नाम पर, भाषा के नाम पर कोई दंगा न हो। हमें सिर्फ अपने गिरेबान में झांककर यह देखना है कि कौन क्या कर रहा है? क्या हम यह कर रहे हैं या नहीं कर रहे हैं, यही देखना है। कौन धर्म के नाम पर झगड़ा लगा रहा है, कौन जाति के नाम पर झगड़ा लगा रहा है, कौन प्रांत के नाम पर झगड़ा लगा रहा है, कौन भाषा के नाम पर झगड़ा लगा रहा है, यह देखना है और जब हम यहां पर बैठते हैं, तो वह बात सही हो जाती है और बाहर जाते हैं, तो वह बात कभी-कभी हम लोगों से ही गलत हो जाती है, वह नहीं होनी चाहिए, लेकिन जो बात उन्होंने कही, वह बहुत अहम बात कही है। किसी भी धर्म के नाम पर झगड़ा नहीं होना चाहिए, नहीं तो इतने बड़े देश को, जिसकी जनसंख्या 112 करोड़ से अधिक होगी, जहां पर अनेक भाषाएं बोली जाती हैं, अनेक प्रकार का खाना खाया जाता है, अनेक प्रकार के कपड़े पहने जाते हैं, अनेक प्रकार की संस्कृति का यहां पर जन्म हुआ, ऐसे देश को एक रखने में बड़ी मुश्किल हो जाएगी। इसलिए उसको देखना बहुत जरूरी है।

उपसभापति जी, मनोहर जोशी जी ने जो बात कही, बहुत अच्छी बात कही, संयम की बात कही। आज संयम की ही जरूरत है। अब महाराष्ट्र के अंदर जो झगड़ा हुआ, वह किस वजह से हुआ? शायद संयम छोड़ने की वजह से हुआ। किसी ने कुछ कह दिया, मुंह में जो बात आई, कह दी, उसका जवाब दूसरों ने दे दिया, उसका जवाब फिर तीसरे ने दे दिया, फिर उसका जवाब चौथे ने दे दिया और वह झगड़े में परिवर्तित हो गया। कभी-कभी हम यहां पर बैठकर, इस सदन में बैठकर, हम अपनी भाषा पर कितना संयम रखते हैं, यह देखना भी जरूरी हो जाता है। अगर यहां पर बैठकर संयम न हो, बाहर संयम न हो, बोलने में संयम न हो, अपने बर्ताव में संयम न हो, लिखने में संयम न हो, दिखाने में संयम न हो, जो उसमें से झगड़ा निकलकर आ आएगा। संयम की बात बहुत ही जरूरी है और संयम रखना बहुत जरूरी है। यह तो ऐसा हो रहा है कि तू-तू मैं-मैं की बात हो जाती है। मैंने कुछ कहा, तुमने कुछ कहा, उसका जवाब मैं फिर दूंगा, फिर तुम उसका जवाब दोगे, फिर मैं उसका जवाब दूंगा, क्योंकि मुझे बताना है कि मैं जो कह रहा हूं, वही सही है, दूसरे जो कह रहे हैं, वह गलत है। यह तू-तू मैं-मैं की वजह से झगड़ा नहीं होना चाहिए और यहां पर भी कभी-कभी नोंक-झोंक जरूर हो जाती है, लेकिन उसकी जो अंतरात्मा है, उसका जो उद्देश्य है, वह बहुत अच्छा होता है, इसलिए हमारी ये सारी संस्थाएं चल रही हैं, सारा देश चल रहा है, अन्यथा वह नहीं चलता।

उपसभापति जी, शरद जी ने एक दूसरी बात कही और बहुत सारे सदस्यों ने यह बात दोहराई, बार-बार दोहराई कि किसी ने एक बात कह दी और दूसरे ने दूसरी बात कह दी, कोई घटना हुई, कोई हादसा हुआ, देश के सामने, संसार के सामने क्या हम उसको इस प्रकार से रखें कि आग भड़के तो उसको उस प्रकार से बताने से, उस प्रकार से कहने से, उस प्रकार से लिखने से, उस आग के अंदर मानो पेट्रोल डाला हो, ऐसा हो जाए? अगर ऐसा हो रहा है, तो नहीं होना चाहिए। हुआ है, या नहीं हुआ है, यह हम सबको स्वयं देखना चाहिए। सरकार की ओर से किसी को रोकने का काम नहीं किया जाता, क्योंकि हमने लिखने और बोलने का स्वातंत्रय दिया है, मगर ऐसी बातें होती हैं और जब ऐसी बातें होती हैं, तो उनके जवाब और प्रति-जवाब आते रहते हैं। कोई कहीं कुछ बोलेगा, तो कोई कहीं कुछ लिख देगा, कोई कहीं उसको बता देगा और झगड़ा होता जाएगा। अब कहा जाता है कि किसी को बोलने से रोकना चाहिए, बराबर रोकना चाहिए, कानूनन रोक सकते हैं, रोकना चाहिए, लेकिन लिखने के लिए और बताने के लिए, क्या हम रोक सकते हैं? मेरे ख्याल से नहीं रोक सकते हैं। एक बात हो गई, एक गली में हो गई, एक सभा में हो गई, एक शहर में हो गई, उस हद तक वह रह गई, या थोड़ा सा एक दफा बताया तो ठीक है, मगर हम बार-बार अगर वह बताते गए, तो क्या एक मनुष्य होने के नाते उसका परिणाम हमारे मन पर नहीं होगा? अगर लेजिस्लेटिव असेंबली के लोगों को लगे कि ऐसा क्यों हुआ है, तो वह किस वजह से हुआ है, यह देखना जरूरी है। उनको लगा कि ऐसा अन्याय हो रहा है और अन्याय होता है, तो वे बोलते हैं और नहीं बोलें, ऐसा नहीं हो सकता, इसको भी देखना जरूरी है, मगर हम सरकार की तरफ से क्या करें? हमको बार-बार कहा जाता है

कि आप कीजिए। हम पुलिस रखेंगे, एक आदमी, जिसने वह बात कही है, उसके ऊपर हम केस करेंगे, उसको बोलने नहीं देंगे, उसको सभा नहीं करने देंगे, मगर दूसरी जो बातें हो रही हैं, एक बात हुई है, पुरानी बात भी है, वह बार-बार बताई जा रही है, तो उसका क्या करें? उसकी जिम्मेदारी किसकी है, अगर जिम्मेदारी है तो हां, हमारी जिम्मेदारी है। मगर बाद में इस बारे में हम सभी लोग ही आकर कह देते हैं कि ऐसा क्यों हुआ, वैसा क्यों हुआ, यह क्यों हुआ, वह क्यों हुआ, यह बात कही जाती है। यह बात यहां के सदस्यों ने कही। मंडल साहब ने यहां पर कहा, मंडल साहब यहां पर बैठे हुए हैं, उन्होंने अच्छी बात कही, उन्होंने सवाल पूछे। उन्होंने पूछा कि वहां से लोग चले गए हैं, वहां वापस आने के बाद उन लोगों को उनके घर दिए जाएंगे या नहीं दिए जाएंगे। बराबर दिए जाएंगे, यह हमारी जिम्मेदारी है। जिसका घर है, उसको किसी ने हटाए हुआ है, आप हमको बताएं, हम प्रांत की सरकार को बोलेंगे कि उनका घर उन्हें देना पड़ेगा। यदि वह नहीं देंगे तो हम देखेंगे कि उनको घर कैसे दिया जाए। किसी का अगर नुकसान हुआ है तो उसको किस प्रकार नुकसान से निकालना है, इसके लिए भी हम क्या कर सकते हैं, इसको हम जरूर देखेंगे। अगर कोई नौकरी छोड़कर चला गया है तो उसको भी क्या मदद कर सकते हैं, उसके बारे में भी देखेंगे। मगर जिसका घर गया है, जिसकी दुकान गयी है और कोई हड़प बैठा है तो उसको वापस करने की जिम्मेदारी सरकार की रहेगी। अगर आपको कोई ध्यान में आए तो हमको बता देना, हम प्रांत की सरकार को कहकर उसको जरूर वापस कराएंगे, वह नहीं करेंगे तो उसको कैसे करवाना है, वह हमारी जिम्मेदारी है। उसकी आप फिक्र मत कीजिए।

प्रांत की सरकार ने हमको जो बताया है, वह मैं आपको बताना चाहता हूं। प्रांत की सरकार ने लिखित रूप में बताया है कि यह हादसा हुआ है और उन्होंने तीन सौ केसेज किए, एक नहीं, तीन सौ केसेज किए। ये तीन सौ केसेज ordinary offence पर नहीं बल्कि substantive offence पर किए गए। Substantive offence के नीचे, India Penal Code के नीचे ये तीन सौ केसेज हुए है। Substantive offence पर और कितने लोगों पर केसेज हुए है। करीब-करीब 1500 से अधिक लोगों पर ये केसेज किए गए हैं। उन्होंने मुझे बताया है कि जब यह हादसा चल रहा था तो पांच हजार लोगों को preventive detention पर रखा गया था। उन्होंने मुझे यह भी बताया है कि आज की जो हालत है, वह अच्छी हालत है। मैंने उनको कहा कि जो लोग बाहर गए, तो उनका क्या है? कोई बोलते हैं कि दस हजार गए, कोई बोलते हैं कि बीस हजार गए, कोई बोलते हैं कि चालीस हजार गए और किसी ने कहा कि एक लाख तक गए। इसका सही आंकड़ा क्या है? उन्होंने हमको बताने की कोशिश की है कि ये आंकड़े थोड़े-से अतिरंजित हैं, थोड़े-से एग्जेजरेटेड हैं, ऐसा उन्होंने बताने की कोशिश की है। मैंने कहा कि अतिरंजित हो या नहीं हो, उसका सवाल नहीं है। सवाल यह है कि एक भी आदमी अगर इस वजह से मुंबई छोड़कर चला जाता है, महाराष्ट्र छोड़कर चला जाता है तो नहीं जाना चाहिए। उसकी जिम्मेदारी हम पर है। आंकड़े पर हम झगड़ा नहीं करेंगे, मगर हम यह देखने की कोशिश करेंगे कि कोई भी आदमी वहां से न जाए, यह देखने की जिम्मेदारी आपकी होगी। उन्होंने मुझे कहा है कि हमारी जो जिम्मेदारी होगी, हम वह करेंगे। बहुत-सारे लोग मुंबई में रहते हैं और बहुत-सारे लोग मुंबई में जाते हैं या दूसरी जगहों पर भी जाते हैं। आपको पता ही होगा कि मुंबई में ऐसा कुछ हो रहा है कि जैसा कभी-कभी देखने को मिलता है। मैं आपको एक उदाहरण के रूप में कहता हूं, जब संकट मोचन मंदिर के अंदर बम विस्फोट हुआ और दो घंटे के अंदर हम लोग वहां पर पहुंचे। सोनिया जी भी वहां पर थीं, मैं भी वहां पर था, मुलायम सिंह यादव जी उस वक्त मुख्य मंत्री थे, उनके मंत्री भी वहां पर आए थे। जब हम TV पर देख रहे थे तो हमको ऐसा लग रहा था कि वहां पर क्या-क्या होता होगा? वहां पर जाने के बाद हमने देखा कि मंदिर के अंदर जो लोग थे, उनमें थोड़ा आक्रोश जरूर था, मगर मंदिर के बाहर के लोग, एक समझदार नागरिक को जैसा उसे लेना चाहिए था, उसी हिम्मत से, उसी सावधानी से और उसी संतुलन से लिया हुआ था। वहां से आने के बाद हमको लगा कि यह जो हम TV पर देख रहे थे, वह सही नहीं है। इसी प्रकार से, मुंबई में सही बात क्या है, यह आप भी जाकर देख लें और आपको ऐसी लगे कि यहां पर कोई फर्क हो रहा है तो उसके अंदर हम जरूर दुरुस्ती करने के लिए बोलेंगे। जहां तक प्रांत सरकार का सवाल है। यह जाहिर बात है कि यह चर्चा यहां पर हो रही है, हमने कोई भी चर्चा यहां पर नहीं की है। वेस्ट बंगाल में क्या हुआ, उसकी चर्चा हमने यहां पर नहीं की। उड़ीसा में क्या हुआ, उसकी चर्चा हमने यहां पर नहीं की। पंजाब में क्या हुआ, उसकी चर्चा यहां नहीं हुई, मगर महाराष्ट्र में जो हुआ, उसकी चर्चा हमने यहां पर जरूर की। हमने कहा कि यह मामला ऐसा नहीं है कि हम चर्चा नहीं करेंगे और ऐसा बोल देंगे, हम चर्चा जरूर करेंगे, मगर यहां पर हमें बार-बार कहा गया कि आपको उसके लिए कदम उठाने चाहिए थे। अगर मुझे कोई कदम उठाना है, तो सब तरफ उठाने पड़ेंगे। एक जगह उठाने से काम नहीं चलेगा, महाराष्ट्र में तो उठाना ही पड़ेगा और हम उठाएंगे। मैं आपको आश्वासन देता हूं कि उनकी गलती होने के बाद जो कदम उठाना जरूरी है, वह हम उठाएंगे। आप उसके बारे में बेफिक्र रहिए, मगर दूसरे प्रांतों के बारे

में आप क्या कहेंगे? मुझे आप कहेंगे कि यह प्रांत का प्रश्न है, यह केंद्र का प्रश्न नहीं है, आप यहां पर हस्तक्षेप नहीं करेंगे। .....(**व्यवधान**)..... अब हुआ है या नहीं हुआ है, आप ही देखिएगा, मगर यह बात झगड़े की बात नहीं है। केंद्र सरकार इस जिम्मेदारी से अपना पल्लू झाड़ना नहीं चाहती, हम प्रांत की सरकार को जरूर कहेंगे कि इसको आपको दुरुस्त करना पड़ेगा। अगर उन्होंने नहीं किया–किस प्रकार से करना है, हम जानते हैं, उस प्रकार से भी किया जाता है, मगर मुझे यह पूरा-पूरा भरोसा है कि वहां के लोग इस पर अमल जरूर करेंगे। क्या किया जा सकता है, सबसे बड़ा सवाल यह है कि अगर हमारे पूरे देश के अंदर ऐसे हादसे हों, ऐसे विचार बढ़ें, ऐसे विचार फैलने लगें, तो हमें क्या करना चाहिए? एक चीज़ करनी चाहिए, यह समझना चाहिए कि यह हमारा हिमालय, हमारा जो पूर्वांचल है, वहां की हरियाली और हमारे राजस्थान का रेगिस्तान, हमारा दक्षिण जहां तीनों समुद्रों का संगम होता है, इन सारी चीज़ों को देखने के बाद हमारा देश कितना बड़ा है, कितना महान है, भौगोलिक दृष्टि से भी कितना महान है, वैचारिक दृष्टि से तो है ही, इसका हमें अंदाज़ा है। बहुत सारे भाइयों ने बहुत अच्छे ढंग से कहा, अपने जीवन के उदाहरण देते हुए कहा। पहले की अड़चनें और बाद का उत्कर्ष, इन दोनों को मिलाते हुए उन्होंने कहा है, तो बहुत मन करके इस बात को आगे रखना बहुत जरूरी है।

दूसरी बात यह है कि इसमें राज्यकरण नहीं होना चाहिए। मुझे कभी-कभी लगता है कि आप हमसे यह जरूर पूछ रहे हैं कि यह हुआ, वह हुआ, लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आती है कि जब कभी ऐसी चर्चा होती है, तो टीका किस पर? टीका केंद्र की सरकार पर, वह आपका अधिकार है और हमारा कर्तव्य है आपका कहा हुआ सुनना और उसके मुताबिक काम करना। टीका प्रांत की सरकार पर होती है, वह भी आपका कर्तव्य है, आपका अधिकार भी है और वह करना पड़ेगा, मगर इसमें क्या होता है, मैं आपको बताता हूं। जब आप बोलते हैं सरकार के खिलाफ और पुलिस के खिलाफ, लेकिन जो कर रहा है, उसको आप बचाते हैं। यहां पर कहा गया कि आप कीजिए, आज कीजिए, तो मैंने उठकर पूछा कि आपका मतलब क्या है? क्या इसमें बोलने वाले और झगड़ा लगाने वाले नहीं हैं? क्या उसमें लिखने वाले और झगड़ा बढ़ाने वाले नहीं हैं? क्या दिखाने वाले और झगड़ा बढ़ाने वाले नहीं हैं उसमें या जो पत्थर फेंकने वाले नहीं हैं, लाठी चलाने वाले हैं, झगड़ा कराने वाले हैं, वे नहीं हैं उसमें? मगर जब आप इस प्रकार से चर्चा करते हैं, राजकीय दृष्टिकोण से करते हैं, तो जिन्होंने एक गुनाह किया है, एक crime किया है, वह बच जाता है, उसको पूरा संरक्षण मिल जाता है और जो आपके लिए, मेरे लिए, कहीं से आते हैं, अपने घर-बार को छोड़कर आते हैं, दूसरों के लिए जान देते हैं, दूसरों को प्रॉपर्टी की रक्षा करते-करते अपने हाथ-पैर तोड़ लेते हैं, उनके ऊपर टीका हो गयी और बेकार काम करने वालों को संरक्षण मिल जाता है। आज की इस चर्चा में हमें यह देखना पड़ेगा कि क्या हम डर रहे हैं बोलने के लिए? क्या हो रहा है? सरकार को बोलना है। सरकार तो कोई ऐसी entity नहीं है, जो चाहे हम बोल देंगे तो नाराज़ हो जायेगी! व्यक्ति entity है, वह बोले तो कहीं झगड़ा शुरू हो जाएगा, तो हम क्या डर रहे हैं? जिन्होंने किया है, उसके खिलाफ कुछ नहीं और दूसरों के खिलाफ आप बोलते जा रहे हैं! इसी को राज्यकरण कहते हैं और दूसरा किसको कहते हैं? कहीं भी हो, छत्तीसगढ़ में कुछ झगड़ा होगा, मुझे मालूम नहीं है कि कितने लोगों का झगड़ा होगा, हमने एक दफा तो बात की है यहां पर, बाहर भी बात नहीं की। इसलिए बात नहीं की कि हम उनको demoralise नहीं करना चाहते। राज्यकरण करना होता, तो बहुत कुछ हम कह सकते थे, बहुत सारे प्रांतों के लिए कह सकते थे, मगर कभी-कभी ऐसा लगता है कि सारी बात कह-कह कर थोड़ा सा राज्यकरण उसमें छोड़ेंगे कि तुमने ऐसा नहीं किया, आपने ऐसा नहीं किया, यह करना चाहिए था, वह करना चाहिए था। ठीक है, यह आपका कर्तव्य है, हमारा सुनने का कर्तव्य है। सदन जो बोलेगा, हम वही करेंगे, सदन के बोले बिना भी हमारा जो कर्तव्य है, उसमें हम नहीं चूकेंगे, किसी को पसंद आए या नहीं।

दूसरी बात यह है कि कठोर भाषा का उपयोग करना ज़रूरी नहीं है। यह सब कठोर भाषा की वजह से हुआ है। कोई वहां पर राजनीतिकरण कर रहा है। वे कहते हैं कि आप उसको बढ़ावा क्यों दे रहे हैं? उसको अगर हम पकड़कर जेल में डालें तो और बढ़ावा हो जाता है। जेल में से छूट जाने के बाद और बड़ा हो जाता है। यह सारी चीजें भी उसमें होती हैं। जो कठोर भाषा बोल रहा है, उसका उत्तर भी हम कठोर भाषा में दे रहे हैं। उसका परिणाम यह हो रहा है कि झगड़ा खत्म होने के बजाय, मिटने के बजाय बढ़ता जा रहा है। आपकी बात बिल्कुल सही है कि वक्त पर कार्यवाही होना जरूरी है। अगर वक्त पर कार्यवाही न हो तो ठीक नहीं है। वक्त पर कार्यवाही करने की जिम्मेदारी प्रांत की सरकार की है। केन्द्र सरकार का निर्देश उसके लिए रहता है और केन्द्र की सरकार की भी उसमें जिम्मेदारी है। लेकिन वक्त कौन सा सही होता है, यह भी देखना पड़ता है। अगर तैयारी न करके कुछ कर दिया जाए और झगड़ा बढ़ जाए तो बोलेंगे कि ऐसा क्यों किया? आपने कोर्ट में केस दाखिल किया, अगर पूरी तरीके से एवीडेंस नहीं दे सके तो वह छूट जाता है। यह भी देखना जरूरी है। लेकिन

यह बात सही है कि वक्त पर तैयारी करना बहुत जरूरी है। सुनी-सुनायी बातों पर कितना भरोसा करना है, यह भी देखना जरूरी हो जाता है। जो घटना हुई है, उसकी वजह से जितना नुकसान हुआ है या जितना अलगाववाद यहां पर फैला है या हमारे जो मन टूटे हैं, मुझे लगता है कि उस घटना से तो वे टूटे ही हैं, वह तो खराब घटना है ही, लेकिन उसका अगर आवश्यकता से ज्यादा प्रचार हो, exaggerated हो, तो उससे भी नुकसान ही होता है। इसलिए मैं समझता हूं कि अगर हमें सही दृष्टिकोण रखना है तो हम यह देखेंगे कि प्रांत की सरकार को अपनी पुलिस की स्ट्रेंथ बढ़ाने के लिए कहेंगे। प्रांत की सरकार को यह भी कहेंगे कि चूंकि आपके यहां जनसंख्या बढ़ रही है इसलिए पुलिस की संख्या भी बढ़नी चाहिए। अगर आज सुबह प्रश्न हुआ होता तो मैं उसके उत्तर में बता देता कि हमने analysis किया है कि उस प्रांत में ज्यादा घटनाएं हो रही हैं जहां पर पुलिस स्टेशनों की संख्या कम है। उस प्रांत में सबसे ज्यादा घटनाएं हो रही हैं जहां पर पुलिस की संख्या कम है। उस प्रांत में ज्यादा घटनाएं हो रही हैं जहां पर वैकेंसीज़ ज्यादा हैं। 25-25, 30-30 परसेंट वैकेंसीज़ एक-एक स्टेट में हैं। 40 हजार अगर पुलिस है तो उसके अंदर 25 हजार नौकरी में हैं और 15 हजार नहीं हैं—ऐसा हो रहा है। एक पुलिस स्टेशन चार सौ किलोमीटर एरिया को देखता है—इसको भी हमें सुधारना है। इसलिए हम हर स्टेट को कह रहे हैं कि आप ज्यादा पैसा खर्च कीजिए। हम लोगों ने यहां पर 20 हजार करोड़ रुपए तक मॉडर्नाइज़ेशन के लिए, स्ट्रेंथ बढ़ाने के लिए, डेवलपमेंट के लिए प्रांत सरकार को दिए हैं। अब प्रांत सरकारों को उसका इस्तेमाल करना है। हम मानते हैं कि वे लोग चुनकर आए हुए जिम्मेदार लोग हैं, उनको भी अड़चन हो सकती है, हम उनको कभी भी एक्सपोज़ नहीं करते—वे चाहे जितना भी हमें एक्सपोज़ करें कि हमने इतनी पुलिस मांगी, हमें नहीं दी। उनके पास 15-15, 20-20 हज़ार वैकेंसीज़ खाली होने के बावजूद भी वे उनको नहीं भर रहे हैं। फिर भी हम उनको एक्सपोज़ नहीं करते हैं। वे वैकेंसीज़ हमें भरनी होंगी। अभी किसी ने कहा कि इंटेलीजेंस एजेंसीज़ को स्ट्रेंथन करना होगा।

श्री रुद्रनारायण पाणि: मैंने कहा था।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: बिल्कुल दुरुस्त कहा—इंटेलीजेंस एजेंसीज़ को दुरुस्त करना है। आप जिस प्रांत से आए हैं, वहां पर जो गड़बड़ हुई, उसके लिए हमने किसी को एक्सपोज़ नहीं किया। उसकी वहां पर बहुत चर्चा हो सकती थी। वहां पर कितने घर जले हैं, कितने लोग मरे हैं, आपको मालूम है? हम उनको भी दोष नहीं दे रहे हैं। लेकिन हमें सब काम जिम्मेदारी से करना है। वहां पर हमने राजनीतिकरण नहीं किया। कहीं पर भी राजनीतिकरण करके ये सारे प्रश्न हल नहीं हो सकते। इसके बाद भी मैं यह कहना चाहूंगा कि जब ऐसा प्रश्न उठता है, अगर हम ...(*व्यवधान*)...

श्री रुद्रनारायण पाणि: वहां पर तुरंत ...(*व्यवधान*)... कि आप रामपुर न जाते हुए वहां पर चले गए। ..(*व्यवधान*)...

श्री उपसभापति: पाणि जी, आप बैठिए।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: यही राजनीतिकरण है।...(*व्यवधान*)... इसी को राजनीतिकरण कहते हैं। मैं गया, उसका कुछ नहीं है। मैं सारी जगह पर तो जा नहीं सकता। इसी को राजनीतिकरण कहते हैं। आपको शिकायत है, आपके चीफ मिनिस्टर को शिकायत नहीं है। अंत में मैं कहना चाहता हूं कि यह जो चर्चा यहां पर हुई, बड़ी जिम्मेदारी से हुई, अच्छे ढंग से हुई। इसके लिए पुन: मैं सारे सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूं और उन्होंने जो सूचनाएं दी हैं, जो भावनाएं व्यक्त की हैं, उसके आधार पर प्रांत की सरकार और केन्द्र की सरकार काम करने की कोशिश करेगी। इतना ही मैं कहना चाहता हूं।

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: उपसभापति महोदय, बड़े विस्तारपूर्वक उन्होंने जवाब दिया है।

श्री उपसभापति: अब सब हो गया वे विस्तार से बोले हैं।

श्री एस॰एस॰ अहलुवालिया: उपसभापति महोदय, सिर्फ मेरा एक ही सवाल है कि उन्होंने मंगनी लाल मंडल जी के सवाल पर कहा कि जो मकान छोड़कर गए या उसको ओकूपाइ किया, वह वापिस देंगे। मेरी एक गुजारिश है कि क्या केन्द्र सरकार राज्य सरकार को एक ऐसी एडवाइज देगी कि महाराष्ट्र से जिन राज्यों के लोगों का पलायन हुआ है, वहां पर हीलिंग टच मिशन पर वहां के मंत्री लोगों को या अफसरों को भेजें When they lost the trust and confidence, they left. कोई भी आदमी अपनी रोजी-रोटी छोड़कर भागता नहीं है, वह मजबूर हुआ है। जब तक उसकी मजबूरी खत्म नहीं होती, उसका कांफिडेंस रेस्टोर नहीं होता, ट्रस्ट रेस्टोर नहीं होता वह तब तक वापिस मुम्बई नहीं जाएगा। मेरा इतना ही

कहना है कि हीलिंग टच मिशन पर कोई ऐसा दल इन राज्यों में जाएगा और इन लोगों से मिलेगा। साथ ही वहां की राज्य कारों से बात करके जो भी लोग हों उनके बारे में अखबार में निकाल कर तथा उन लोगों से मिलें, प्रमाण लें और उनको ाकर वापिस ले जाएं। यह पहली बार नहीं होगा, क्योंकि इससे पहले भी पंजाब में हुआ है जब पंजाब से लोग पलायन कर गए थे तो उन लोगों को मनाने के लिए गए थे। ऐसा करके उनको वापिस ले आइए और उनकी रोजी-रोटी वापिस दलवाइए।

श्री रुद्रनारायण पाणि: सर, क्या मैं एक स्पष्टीकरण भी नहीं पूछ सकता हूं?

श्री उपसभापति: आप क्या पूछेंगे।

श्री रुद्रनारायण पाणि: सर, मेरा निर्दिष्ट स्पष्टीकरण है कि जो बड़ी तादाद में लोग दूसरे राज्य से या तीसरे राज्य से किसी अन्य राज्य में जाकर बस जाते हैं क्या वहां लम्बे समय रहने के बाद उस राज्य की मतदाता सूची में उनका नाम आ ाता है तथा उनके मूल राज्य की मतदाता सूची में भी नाम है? क्या इसकी कृपया छानबीन करेंगे कि एक हिन्दुस्तानी ागरिक का दो राज्यों की मतदाता सूची में नाम नहीं रहना चाहिए। मुम्बई में बड़ी संख्या में जो बाहर के लोग आए हैं, वहां रहे हैं तो क्या महाराष्ट्र मतदाता सूची में और उनके मूल प्रदेश की मतदाता सूची में उनका नाम है? यह सब देखना होगा।

सर, एक और बात है, जैसे पुलिस का मॉडर्नाइजेशन के लिए केन्द्र सरकार पैसा देती है वैसे अगर किसी राज्य से दूसरे ्य में जाकर वहां ज्यादा लोग रहते हैं तो क्या मूल राज्य के लोग जिस राज्य में रहते हैं, उस राज्य की भाषा सीखने के ्ये केन्द्र कुछ पैसा देगा?

SHRI TAPAN KUMAR SEN: I think the problem is altogether different. The migrant ·kers are not getting their names enrolled. They are facing difficulties. ऐसा नहीं है, उन लोगों ंभलता नहीं है, न हरियाणा में, न पंजाब में उसको वोटर एनरोल नहीं किया जा रहा है।

श्री शिवराज वी॰ पाटिल: श्रीमन, जहां तक पहली बात है जो अहलुवालिया साहब ने बहुत ठीक कहा है कि हीलिंग ोना चाहिए और कांफिडेंस बिल्डिंग का काम होना चाहिए। हम प्रांत की सरकार को यह जरूर बोलेंगे कि जिस ति से आप यह कर सकते हैं आप करें। उन लोगों के आने के बाद उनको यह आश्वासन दे दें, उनको आश्वस्त करें उनके वहां वापिस आने पर उनके जानमाल को खतरा नहीं होगा इस प्रकार की व्यवस्था करेंगे। वे जो भी कर सकते सके लिए मैं उनसे कहूंगा। जहां तक पाणि जी का प्रश्न है, उसके लिए इलेक्शन कमीशन के पास जाना पड़ेगा।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The Short Duration Discussion is concluded. Now, the tement by the Minister.

STATEMENT BY MINISTER

lectronic transfer of monthly progress reports of Rural Development Programmes

ग्रामीण विकास मंत्री (श्री रघुवंश प्रसाद सिंह): संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार के राष्ट्रीय न्यूनतम साझा क्रम में प्रावधान है कि ''ई-गवर्नेंस'' को व्यापक पैमाने पर बढ़ावा दिया जाएगा।

माननीय प्रधान मंत्री ने कार्यान्वयन का स्तर बनाए रखने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी विकास का प्रयोग करने की इच्छा क्त की है। इनके संवर्द्धन में, ग्रामीण विकास मंत्रालय ने पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए ग्रामीण विकास कार्यक्रमों ; आयोजना, निगरानी और जानकारी देने के लिए ई-गवर्नेंस को बढ़ावा दिया है।

मुझे इस सदन को यह जानकारी देते हुए प्रसन्नता हो रही है कि देश के लोगों की जानकारी के लिए ग्रामीण विकास मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किए जा रहे सभी कार्यक्रमों की मासिक प्रगति रिपोर्ट अब ऑन-लाइन भी उपलब्ध है। आपको यह जानकारी देते हुए मुझे काफी संतुष्टि मिल रही है कि पारदर्शिता और खुलापन लाने के लिए रिपोर्टों को नियमित रूप से अद्यतन किया जाता है और इन्हें जनता के समक्ष रखा जाता है।